श्री
कुलजम सरूप

निजनाम श्री जी साहिबजी, अनादि अछरातीत ।
सो तो अब जाहेर भए, सब विध वतन सहीत ॥

कलस हिन्दुस्तानी–तौरेत

नोट : यह कलस हिन्दुस्तानी अनूपशहर में सनन्ध के बाद उतरी।

राग श्री मारू

सुनियो बानी सोहागनी, हुती जो अकथ अगम।
सो बीतक कहूं तुमको, उड़जासी सब भरम॥ १ ॥

श्री महामतिजी कहती हैं—हे परमधाम की ब्रह्मसृष्टियो! (सुहागिनियो) सुनो, मैं तुम्हें वह ज्ञान, जिसे आज दिन तक किसी ने नहीं कहा, उस परब्रह्म जिसको कोई समझ ही नहीं पाया, उसकी हकीकत का ज्ञान बताती हूं। वह हकीकत में हमारी ही बीतक है, जिसे सुनने से सब संशय मिट जाएंगे।

रास कह्या कछु सुनके, अब तो मूल अंकूर।
कलस होत सबन को, नूर पर नूर सिर नूर॥ २ ॥

रास की वाणी का वर्णन सतगुरु श्री देवचन्द्रजी महाराज के मुखारबिन्द से सुना था। अब तो मूल धाम-धनी अन्दर बैठे हैं। धाम का अंकुर, निसबत जागृत हुई। अब उनके ज्ञान से संसार के सार रूप यह कलश वाणी तुम्हें बताती हूं, जिससे हद से परे बेहद (योगमाया), उससे परे अक्षर और उससे भी परे अक्षरातीत का ज्ञान होगा।

कथियल तो कही सुनी, पर अकथ न एते दिन।
सो तो अब जाहेर भई, जो अग्या थें उतपन॥ ३ ॥

आज दिन तक जो संसार के महापुरुषों ने ग्रन्थ! रचना की थी, उसे तो सबने सुना, पर आज दिन तक इस ज्ञान को किसी ने कहा ही नहीं, क्योंकि वह जानते ही नहीं थे। उस ज्ञान को जिसे अब स्वयं परब्रह्म मेरे अन्दर बैठकर कहलवा रहे हैं और उनकी आज्ञा से मैं कह रही हूं, बताती हूं।

मुझे मेहेर मेहेबूबें करी, अंदर परदा खोल।
सो सुख सनमंधियनसों, कहूं सो दो एक बोल॥ ४ ॥

जो वाणी मेरे मेहबूब ने मेरे ऊपर कृपा करके मेरे अन्दर बैठकर कही है, निराकार के आगे जो परदे में थीं, सब खोलकर बातें समझाई हैं, वह अखण्ड सुख की बातें अपने मूल सम्बन्धी सुन्दरसाथ को दो चार शब्दों में कहती हूं।

नोट : अब श्यामाजी (सतगुरु श्री देवचन्द्रजी) कहते हैं।

Nijanand App

मासूकें मोहे मिलके, करी सो दिल दे गुझ।
कहे तूं दे पड़उतर, जो मैं पूछत हों तुझ।।५।।

मेरे माशूक अक्षरातीत श्री राजजी महाराज ने मुझे श्यामजी के मन्दिर में दर्शन देकर अपने दिल के छिपे भेद (गुह्य) बातें बताईं और मुझे कहा कि मेरे प्रश्नों का उत्तर दो।

तूं कौन आई इत क्योंकर, कहां है तेरा वतन।
नार तूं कौन खसम की, दृढ़ कर कहो वचन।।६।।

धनी ने पूछा कि तुम कौन हो? यहां इस ब्रह्माण्ड में क्यों आई हो? तथा तुम्हारा घर कहां है? तुम किस धनी की अंगना हो? इन बातों का उत्तर दृढ़ मन से दो।

तूं जागत है के नींद में, करके देख विचार।
विध सारी याकी कहो, इन जिमी के प्रकार।।७।।

यह भी पूछा कि तुम होश में हो या नींद में? इसका विचार करके बताओ कि तुम क्या कह रही हो? यह भी बताओ कि यह जमीन कौन सी है? इसकी सुध बताओ जहां तुम बैठे हो।

तब मैं पियासों यों कह्या, जो तुम पूछी बात।
मैं मेरी मत माफक, कहूंगी तैसी भांत।।८।।

तब मैंने धनी को उत्तर दिया कि हे पिया! मैं अपनी बुद्धि के अनुसार जो जानती हूं वह कहती हूं।

सुनो पिया अब मैं कहूं, तुम पूछी सुध मंडल।
ए कहूं मैं क्यों कर, छल बल वल अकल।।९।।

हे पिया! आपने इस संसार की बात पूछी है, अब मैं उसे आपसे कहती हूं। यह सारा संसार कपट, माया, मोह की बुद्धि से भरा पड़ा है।

मैं न पेहेचानों आपको, न सुध अपनों घर।
पिउ पेहेचान भी नींद में, मैं जागत हों या पर।।१०।।

इस संसार में मैं यह नहीं जानती हूं कि मैं कौन हूं? मुझे अपने घर की भी सुध नहीं है कि मैं कहां से आई हूं और कहां जाना है। आपको भी मैंने अपना खसम (पिया) बेसुधी में कहा है। मेरी इसी हालत को ही जागना समझें।

ए मोहोल रच्यो जो मंडप, सो अटक रह्यो अंत्रीख।
कर कर फिकर कई थके, पर पाई न काहूं रीत।।११।।

यह ब्रह्माण्ड जो दिख रहा है वह अन्तरिक्ष में लटक रहा है। बहुतों ने इसको खोजा, परन्तु इस बात के लिए ही थककर हार गए कि यह ब्रह्माण्ड बीच में ही कैसे लटक रहा है?

जल जिमी तेज वाए को, अवकास कियो है इंड।
चौदे तबक चारों तरफों, परपंच खड़ा प्रचंड।।१२।।

यह ब्रह्माण्ड पांच तत्वों (जल, वायु, अग्नि, पृथ्वी और आकाश) से बना है। चौदह लोकों के चारों तरफ माया मोह का ही विस्तार है जो प्रचण्ड भ्रम का रूप है।

यामें खेल कई होवहीं, सो केते कहूं विचित्र।
तिमिर तेज रुत रंग फिरे, ससि सूर फिरे नखत्र।।१३।।

इस ब्रह्माण्ड में तरह-तरह के विचित्र खेल होते हैं। इसमें रात, दिन, ऋतुएं, चन्द्रमा, सूर्य और नक्षत्र सब घूमते रहते हैं।

Nijanand App

तबक चौदे इंड में, जिमी जोजन कोट पचास।
साढ़े तीन कोट ता बीच में, होत अंधेरी उजास।। १४ ।।

चौदह लोकों के इस ब्रह्माण्ड में पचास करोड़ योजन जमीन है। उसमें से साढ़े तीन करोड़ योजन जमीन मृत्यु लोक की है। इसमें सूर्य और चन्द्रमा से अंधेरा और उजाला होता है।

उजास सूर को कहावहीं, सो तो अंधेरी के तिमर।
तिनथें कछू न सूझहीं, जिमी आप न घर।। १५ ।।

यहां सूर्य की रोशनी को लोग उजाला समझते हैं। वह तो घोर अन्धकार का रूप है। उससे भी अपनी तथा घर की सुध नहीं होती।

जब थें सूरज देखिए, लेत अंधेरी घेर।
जीव पसु पंखी आदमी, सब फिरें याके फेर।। १६ ।।

जब सूर्य उदय होता है तो माया मोह का चक्कर चालू हो जाता है। जीव, पशु, पक्षी, आदमी इसको देखते ही माया के चक्कर में पड़ जाते हैं।

काल न देखें इन फेरे, याही तिमर के फंद।
ए सूरज आंखों देखिए, पर याही फंद के बंध।। १७ ।।

इस माया के चक्कर में ही उन लोगों को अपनी मौत भी दिखाई नहीं पड़ती (कि हमें कभी मरना भी है)। सूर्य उदय के साथ ही माया के बन्धन बढ़ते जाते हैं।

वाओ बादल बीज गाजही, जिमी जल न समाए।
ए पांचो आप देखाए के, फेर न पैदा हो जाए।। १८ ।।

यह हवा, बादल की गर्जना, पानी का बरसना अथवा यह पांचों समय-समय पर अपना रूप दिखाकर ऐसे चले जाते हैं जैसे कि इनका संसार में कभी आना ही नहीं हुआ था।

या भांत अनेक ब्रह्मांड में, देत देखाई दसों दिस।
ए मोहजल लेहेरां लेवहीं, सागर सब एक रस।। १९ ।।

इस तरह संसार की दसों दिशाओं में प्रकृति द्वारा अनेक प्रकार के बदलाव होते हैं और मोह ममता की लहरें चलती हैं और चारों तरफ एक-सा ही नजर आता है।

ए कोहेड़ा काली रैन का, कोई न पावे कल मूल।
कहां कल किल्ली कुलफ, जो द्वार न पाइए सूल।। २० ।।

यहां काली रात और धुन्ध है, जिस कारण किसी को संसार की हकीकत का ही पता नहीं चलता। जब पार (बाहर) जाने के दरवाजे का ही पता नहीं चलता तो इसका ताला-चाबी और खोलने का ढंग कहां से पता चले?

ए तीनों लोक तिमर के, लिए जो तीनों ही घेर।
ए निरखे मैं नीके कर, पर पाईए न काहूं सेर।। २१ ।।

इन तीनों लोकों (पाताल, मृत्युलोक और बैकुण्ठ) तक को अंधेरे (अज्ञानता) ने घेर रखा है। मैंने यहां बहुत खोजा पर कहीं भी रास्ता नहीं मिला।

Nijanand App

ए अंधेरी इन भांत की, काहूं सांध न सूझे सल।
ए सुध काहूं न परी, कई गए कर कर बल।। २२ ।।

यहां पर मोह, माया का इतना गहरा अन्धकार है कि कोई सुराख या जरा-सी ज्ञान की रोशनी का पता नहीं चलता। बहुत ज्ञानियों और अगुओं ने जोर तो बड़ा लगाया, पर किसी को खबर नहीं हुई।

ग्यान लिया कर दीपक, अंधेर आप नहीं गम।
जोत दीपक इत क्या करे, ए तो चौदे तबकों तम।। २३ ।।

ज्ञान मिला भी तो दीपक के समान मिला। चौदह लोकों के घोर अन्धकार में दीपक क्या उजाला करेगा? (चौदह वर्षों तक भागवत के ज्ञान से दीपक जैसा उजाला मिला, पर अन्धकार का भी पता नहीं चला कि कहां तक है।)

ए देखे ही परिए दुख में, कोई व्राध को रचियो रोग।
छुटकायो छूटे नहीं, नाहीं ना देखन जोग।। २४ ।।

यह ऐसी व्याधि (छूत का रोग) है कि इस माया को देखते ही यह चिपट जाती है और छुड़ाने से छूटती नहीं है, इसलिए यह ब्रह्माण्ड देखने योग्य नहीं है।

टेढ़ी सकड़ी गलियां, तामें फिरे फेर फेर।
गुन पख अंग इंद्रियां, कियो अंधेरी में अंधेर।। २५ ।।

यहां कर्मकाण्ड के बन्धनों की मुसीबत और मजबूरी से भरी टेढ़ी गलियां हैं, जिसमें आदमी भटकता रहता है और जन्म-मरण का चक्कर लगाता रहता है। यहां के गुण, पक्ष और इन्द्रियां भी माया में ही लिप्त रहती हैं, जिससे अज्ञानता का रूप और बढ़ जाता है।

तत्व पांचो जो देखिए, यामें ना कोई थिर।
प्रले होसी पल में, वैराट सचरा चर।। २६ ।।

पांचों तत्वों को यदि देखें, तो उनमें कोई भी अखण्ड नहीं है। यह सारा स्थावर (थिर) और जंगम (चर) ब्रह्माण्ड पल में ही नष्ट हो जाएगा।

ए उपजे पांचो मोह थें, और मोह को तो नाहीं पार।
नेत नेत कहे निगम फिरे, आगे सुध ना परी निराकार।। २७ ।।

यह पांचों तत्व, निराकार मोह तत्व से पैदा हैं। मोह तत्व का तो पार ही नहीं है। इसे तो वेदों और शास्त्रों ने भी खोजा और अपने को इसे पार करने के लिए असमर्थ बताया तथा कहा कि निराकार के आगे की सुध हमें नहीं है।

मूल बिना ए मंडल, नहीं नेहेचल निरधार।
निकसन कोई न पावहीं, वार न काहूं पार।। २८ ।।

यह संसार बिना जड़, बिना किसी आधार का है और यह स्थिर नहीं है, अखण्ड नहीं है। इतना विकराल रूप है इसका, कि कहीं किनारा अथवा पार नहीं मिलता, इससे कोई पार नहीं जा सका।

पंथ पैंडे कई चलहीं, कई भेख दरसन।
ता बीच अंधेरी ग्यान की, पावे ना कोई निकसन।। २९ ।।

इस संसार में अनेक धर्म, पन्थ, पैंड़े चलते हैं। कई तरह के भेष बनाकर कई तरह से सोचते हैं। उनके बीच भी ज्ञान का अंधेरा ही है। कोई पार उतरा ही नहीं है।

Nijanand App

यामें ज्यों ज्यों खोजिए, त्यों त्यों बंध पड़ते जाएं।
कई उदम जो कीजिए, तो भी तिमर न छोड़े ताए।। ३० ।।

इसमें से निकलने के लिए जितने उपाय किए जाते हैं, उतने ही माया के बन्धन पड़ते जाते हैं। यहां से निकलने के लिए उपाय करें भी तो यह मोह माया का अन्धकार छूटता नहीं है।

इत जुध किए कई सूरमें, पेहेन टोप सिल्हे पाखर।
बचन बड़े रन बोल के, सो भी उलट पड़े आखिर।। ३१ ।।

इस माया से लड़ने के लिए बड़े-बड़े ज्ञानियों ने त्याग, तपस्या, ज्ञान के बड़े-बड़े अहंकार रूपी कवच धारण तो किए, बड़ी-बड़ी डींगें मारकर गए तो सही, पर माया में गिरकर समाप्त हो गए।

ए सुध अजूं किन ना परी, बढ़त जात विवाद।
ए खेल तो है एक खिन का, पर जाने सदा अनाद।। ३२ ।।

परब्रह्म की सुध यहां किसी को मिली नहीं, परन्तु आपसी धर्मों के विरोध बढ़ते जाते हैं। यह खेल एक क्षण का है। यहां लोग समझे बैठे हैं कि यह तो सदा से ही चला आ रहा है (अखण्ड है)।

खेल खावंद जो त्रैगुन, जाने याथें जासी फेर।
ए निरखे मैं नीके कर, अजूं ए भी मिने अंधेर।। ३३ ।।

इस खेल के मालिक ब्रह्मा, विष्णु, महेश को देखा, तो सोचा था कि यह माया से मुक्त होंगे। जब मैंने अच्छी तरह से खोजा, तो पाया कि यह भी माया में ही डूबे हैं।

ए द्वार कोई खोल के, कबहूं ना निकस्या कोए।
ए बुजरक जो छल के, बैठे देखे बेसुध होए।। ३४ ।।

इस ब्रह्माण्ड के दरवाजे (निराकार से आगे) को खोलकर कोई आगे नहीं जा सका। इस ब्रह्माण्ड के मालिक तीनों देव और ही बेसुधी में पड़े हैं।

ए जिन बांधे सो खोलहीं, तोलों ना छूटे बंध।
या विध खेल खावंद की, तो औरों कहा सनंध।। ३५ ।।

यह मोह-तत्व का बन्धन जिसने बांधा है, वही खोल सकता है। जब यहां के मालिक ब्रह्मा, विष्णु, महेश का यह हाल है तो औरों की क्या कही जा सकती है?

निज बुध आवे अग्याएं, तोलों ना छूटे मोह।
आतम तो अंधेर में, सो बुध बिना बल ना होए।। ३६ ।।

हे धनी! निज बुध अर्थात् जागृत बुद्धि (परा शक्ति) जो आपके हुक्म के अधीन है, इसके बिना यह मोह-तत्व का बन्धन छूट ही नहीं सकता। यहां आत्माएं अंधेरे में भटक रही हैं और जागृत बुद्धि के बिना छूट नहीं सकतीं।

ए तो कही इन इंड की, पिया पूछ्यो जो प्रश्न।
कहूं और अजूं बोहोत है, वे भी सुनो वचन।। ३७ ।।

हे धनी! आपने जो पूछा उसके अनुसार मैंने संसार की हकीकत बताई है। अभी और भी बहुत कुछ है। वह भी कहती हूं, वह भी सुनो।

।। प्रकरण ।। १ ।। चौपाई ।। ३७ ।।

Nijanand App

प्रकरण खोज का–राग श्री मारू

पिया मैं बोहोत भांत तोको खोजिया, छोड़ धंधा सब और।
पूछत फिरों सोहागनी, कोई बताओ पिया ठौर।।१।।

श्यामाजी श्री देवचन्द्रजी महाराज कहते हैं कि पिया! मैंने संसार का कुल काम-धन्धा छोड़कर आप को ढूंढा और अपनी सखियों (हरदासजी महाराज) से पूछा कि कोई तो पिया और घर का रास्ता बताओ।

मैं नेक बात याकी कहूं, तुम कारन खोज्या खेल।
कोई ना कहे मैं देखिया, जिनों नीके कर खोजेल।।२।।

इसका भी थोड़ा-सा मैं अपने द्वारा स्वयं और घर की खोज का ब्यौरा बताती हूं। जिन्होंने अच्छी तरह स्वयं की खोज की, उनमें से किसी ने नहीं कहा कि मैंने देखा है या घर की सुध है।

सास्त्र साधू जो साखियां, मैं देखी सबों की मत।
पिया सुध काहू में नहीं, कोई न बतावे तित।।३।।

शास्त्रों में तथा साधुओं के ग्रन्थों में सबके ज्ञान को मैंने देखा, परन्तु यह पाया कि किसी को भी आपकी खबर नहीं है और न ही कोई आपका ठिकाना बताते हैं।

छोटे बड़े जिन खोजिया, न पाया करतार।
संसा सब कोई ले चल्या, पर छूटा नहीं विकार।।४।।

संसार में छोटे-बड़े जिन्होंने भी खोज की है, हे धनी! आपको किसी ने नहीं पाया। सभी संशय में डूबे रहे और किसी का भ्रम नहीं मिटा।

झूठा ए छल कठन, काहूं ना किसी की गम।
कहां वतन कहां खसम, कौन जिमी कौन हम।।५।।

यह ऐसा विकट छल का ब्रह्माण्ड है कि कहीं भी किसी की सुध नहीं है। हमारा घर कहां है? हमारा मालिक कहां है? यह ठिकाना कौन सा है? और मैं कौन हूं, कोई नहीं बता सका।

ए देखी बाजी छल की, छल की तो उलटी रीत।
इनमें सीधा दौड़के, कोई ना निकस्या जीत।।६।।

मैंने इस कपट के ब्रह्माण्ड को देखा जिसमें सोचने की शक्ति ही उल्टी है। ब्रह्माण्ड से सीधा (सच्चाई वाला) दौड़कर कोई बाहर नहीं निकल सका (यहां झूठे लोगों की जीत होती है)।

मैं देख्या दिल विचार के, चितसों अर्थ लगाए।
इस मंडल में आतमा, चल्या ना कोई जगाए।।७।।

मैंने दिल में खूब विचारा और सोचा। इस संसार में कोई भी अपनी आत्मा को जगाकर भव से पार नहीं गया।

मेहेनत तो बोहोतों करी, अहनिस खोज विचार।
तिन भी छल छूटा नहीं, गए हाथ पटक कई हार।।८।।

रात-दिन मेहनत करके (तपस्या, योग-साधना) खोज तो की, पर माया का छल-मोह छूटा नहीं और हाथ पटक कर रह गए।

Nijanand App

मोहादिक के आद लों, जेती उपजी सृष्ट।
तिन सारों ने यों कह्या, जो किनहूं ना देख्या दृष्ट।। ९ ।।

मोह-तत्व से लेकर आज तक जितनी भी सृष्टि बनी, सबने यही कहा कि मैंने परमात्मा को नहीं देखा।

वरना वरनो खोजिया, जेती बनिआदम।
एता दृढ़ किने ना किया, कहां खसम कौन हम।। १० ।।

दुनियां की जितनी जातियां और धर्म हैं, उनमें मैंने बहुत खोजा, पर किसी ने नहीं बताया कि मैं कौन हूं, कहां हूं और मालिक कहां है?

आद मध और अबलों, सब बोले या विध।
केवल विदेही हो गए, तिन भी ना कही सुध।। ११ ।।

शुरू में, बीच में और आज तक सबने यही कहा कि केवल राजा जनक ही एक 'विदेही' हुए हैं, पर उन्होंने भी परब्रह्म की पहचान नहीं कही।

नोट : सात भूमिका वशिष्ठ जी ने कही हैं (१) शुभेच्छा : वैराग्यपूर्ण मोक्ष की कामना, (२) विचारणा : शास्त्रों का अध्ययन, विवेकपूर्ण वैराग्य और सदाचार, (३) तनुमानसा : शुभेच्छा और विचारणा द्वारा अनासक्ति, (४) सत्वापत्ति : उपायों से परब्रह्म में तद्रूप स्थिति, (५) असंसक्ति : अन्दर और बाहर संस्कारों से दूर रहे और अन्तः समाधिस्थ, (६) पदार्थ भावना : अन्दर और बाहर परब्रह्म का ही अनुभव हो, संसार का नहीं, (७) तुर्यगा : सांसारिक सत्ता से अभाव और आत्म भाव से स्वाभाविक निष्ठा।

वेदों कथ कथ यों कथ्या, सब मिथ्या चौदे लोक।
बकते बकते यों बके, एक अनेक सब फोक।। १२ ।।

वेदों ने भी कहते-कहते स्पष्ट लिखा कि चौदह लोकों का ब्रह्माण्ड झूठा है। अन्त में यही कहा कि एक परब्रह्म सत्य है और अनेक देवी-देवता असत्य हैं।

बुध तुरिया दृष्ट श्रवना, जहांलों पोहोंचे मन।
ए होसी उतपन सब फना, जो आवे मिने वचन।। १३ ।।

बुद्धि से, चितवन से, नजर से, कान से तथा जहां तक मन पहुंचता है और वाणी पहुंचती है, यह सारा संसार नष्ट हो जाएगा।

वेदांती भी कहे थके, द्वैत खोजी पर पर।
अद्वैत सब्द जो बोलिए, तो सिर पड़े उतर।। १४ ।।

वेदान्ती भी कह-कहकर थक गए कि हमने माया को खूब खोजा और हारकर उन्होंने कहा हमारा सिर कट जाए पर हम अद्वैत के बारे में कुछ नहीं जानते।

मन चित बुध श्रवना, पोहोंचे दृष्ट न सब्दा कोए।
खट प्रमान थें रहित है, सो दृढ़ कैसे होए।। १५ ।।

मन, चित्त, बुद्धि, कान, नजर और शब्द उस परब्रह्म को नहीं पहुंचते। जो षट् प्रमाण से रहित है, उसके लिए निश्चित रूप से कैसे बताएं?

Nijanand App

द्वैत आड़े अद्वैत के, सब द्वैतई को विस्तार।
छोड़ द्वैत आगे वचन, किने न कियो निरधार।। १६ ।।

परब्रह्म के आड़े माया का परदा लगा है। सब जगह माया ही माया है। उस माया को छोड़कर आगे की सुध किसी ने निश्चित रूप से नहीं दी।

ए अलख किनहूं न लखी, आदै थें अकल।
ऐसी निराकार निरंजन, व्याप रही सकल।। १७ ।।

जिसको आज दिन तक किसी ने नहीं पहचाना यह माया ऐसी (कमबख्त, चाण्डालिनी) है। न तो इसका रूप है और न आंखों से दिखती है। सारे संसार में शुरू से ही व्याप्त है।

चेतन व्यापी व्याप में, सो फेर फेर आवे जाए।
जड़ को चेतन ए करे, चेतन को मुरछाए।। १८ ।।

माया ही पूरे ब्रह्माण्ड में व्याप्त है। यह निराकार होते हुए भी आकार धारण करती है। चेतन के सहयोग से जड़ को चेतन करती है तथा चेतन निकलने पर उसे (शरीर को) जड़ बना देती है। इस तरह से उसका चक्कर चलता रहता है।

ऊपर तले मांहें बाहेर, दसो दिसा सब एह।
छोड़ याको कोई न कहे, ठौर खसम का जेह।। १९ ।।

ऊपर-नीचे, अन्दर-बाहर दसों दिशाओं में इसी माया का विस्तार है। इसका ज्ञान सबके पास है। पर परब्रह्म का पता बताने वाला कोई नहीं है।

जो कछू कहिए वचने, सो तो सब अनित।
वतन सरूप कोई न कहे, तो क्यों कर जाइए तित।। २० ।।

वचनों से जो कुछ भी कहते हैं वह सारे वचन इसी माया के हैं। इसमें अखण्ड स्वरूप की और अखण्ड घर की पहचान बताने वाला कोई नहीं है, तो वहां कैसे जाया जाए?

पेड़ काली किन न देखी, सब छाया में रहे उरझाए।
गम छायाकी भी न पड़ी, तो पेड़ पार क्यों लखाए।। २१ ।।

इस माया रूपी काले पेड़ को किसी ने नहीं देखा। सब इसी की छाया में उलझे पड़े हैं। दुनियां वालों को इस छाया की भी पहचान नहीं हुई, तो इस माया रूपी ब्रह्माण्ड के पार कैसे देख सकते हैं?

ए जाए ना उलंघी देखीती, न कछू होए पेहेचान।
तो दुलहा कैसे पाइए, जाको नेक न सुन्यो निसान।। २२ ।।

इसको देखते हुए भी इससे कोई उलंघ नहीं सकता। इसके अन्दर रहकर भी इसकी कोई पहचान नहीं होती। फिर उस परब्रह्म प्रीतम को कैसे पाया जाए जिसका नामोनिशान भी नहीं सुना।

खसम जो न्यारा द्वैत से, और ठौरों सब द्वैत।
किने न कह्या ठौर नेहेचल, तो पाइए कैसी रीत।। २३ ।।

हमारे धनी परब्रह्म माया से अलग हैं। सभी जगह पर माया का ही विस्तार है। उस अखण्ड घर की कोई नहीं कहता कि उसे किस तरीके से पाया जाय?

Nijanand App

ए मत वेद वेदान्त की, सास्त्र सबों ए ग्यान।
सो साधू लेकर दौड़हीं, आगे मोह न देवे जान।। २४ ।।

वेद और वेदान्त के जानने वाले छः शास्त्रों का ज्ञान ऐसा ही है जिसे लेकर साधु लोग दौड़ते तो हैं, पर निराकार के आगे नहीं जा पाते।

या विध ग्यान जो चरचही, सो मैं देख्या चित ल्याए।
ज्यों मनुआ सुपने मिने, बेसुध गोते खाए।। २५ ।।

श्यामाजी कहती हैं कि मैंने ध्यान से देखा कि यहां का ज्ञान सुनाने वाले माया के अन्दर का ही ज्ञान देते हैं। जैसे मन सपने में भटकता है वैसे ही यह ज्ञानी लोग बेसुधी मे गोते खाते हैं।

खिनमें कहे सब ब्रह्म है, खिन में बंझा पूत।
मद माते मरकट ज्यों, करे सो अनेक रूप।। २६ ।।

यह ज्ञानी क्षण-क्षण में अपने विचार बदलते हैं। कभी कहते हैं कि ब्रह्म घट-घट व्यापी है। कभी कहते हैं कि बांझ के पूत की तरह है। जैसे शराबी बन्दर अनेक रूप लेकर गुलाटियां भरता है उसी तरह यह ज्ञानी लोग करते हैं।

खिन में कहे सत असत, माया कछुए कही न जाए।
यों संग संसा दृढ़ हुआ, सब धोखे रहे फिराए।। २७ ।।

एक क्षण में इसे सत बतलाते हैं और दूसरे क्षण कहते हैं कि यह झूठ है। माया कुछ नहीं है। ऐसे लोगों की संगत से संशय और बढ़ गया। इस तरह से सब धोखे में घूम रहे हैं।

खिन में कहे है आप में, खिन में कहे बाहेर।
खिन में मांहें न बाहेर, याको सब्द न कोई निरधार।। २८ ।।

एक क्षण में कहते हैं कि परमात्मा मेरे अन्दर है। उसी क्षण कहते हैं कि वह सबके अन्दर है। फिर दूसरे क्षण कहते हैं कि वह न अन्दर है और न बाहर है। इस तरह से उनकी कोई बात स्थिर नहीं है।

खिन में कछू और कहे, खिन में और की और।
सो बात दृढ़ क्यों होवहीं, जाको वचन ना रेहेवे ठौर।। २९ ।।

एक पल में कुछ कहते हैं, दूसरे में कुछ और का और कहते हैं, इसलिए जिनकी वाणी ही स्थिर नहीं है, तो उनसे परब्रह्म की पहचान कैसे हो सकती है?

जैसे बालक बावरा, खेले हंसता रोए।
ऐसे साधू सास्त्र में, दृढ़ ना सब्दा कोए।। ३० ।।

जैसे एक बावरा बालक रोते-रोते लालच में आकर हंसने लगता है, वैसे ही ज्ञानी, साधु, शास्त्रों में दृढ़ता से वचन नहीं बोलते।

ए सब सींग ससिक, बंझा पूत वैराट।
फूल गगन नाम धर के, उड़ाए देवें सब ठाट।। ३१ ।।

यह सभी खरगोश (ससला) की सींग, बांझ के पुत्र तथा आकाश के फूल के नाम रखकर झूठे शब्दों से कहकर सत का रूप ही बिगाड़ देते हैं।

Nijanand App

आप होत फूल गगन, बढ़त जात गुमान।
देखीतां छल छेतरे, हाए हाए ऐसी नार सुजान।। ३२ ।।

वह अपने ज्ञान के अहंकार में अपने आप को झूठी उपाधियां देकर आकाश के फूल की तरह वर्णन करते हैं। यह अपने आप को मिटा रहे हैं। हाय-हाय ऐसी चतुर माया ने देखते-देखते सबको ठग लिया है।

कोई ना परखे छल को, जिन छल में है आप।
तो न्यारा खसम जो छल थें, सो क्यों पाइए साख्यात।। ३३ ।।

जिस माया के छल में बैठे हैं, उस माया के छल को ही कोई नहीं पहचान पाता, तो वह परब्रह्म जो माया से अलग है, उसे किस तरह से प्राप्त कर सकते हैं?

अटक रहे सब इतहीं, आगे सब्द न पावे सेर।
ए इंड गोलक बीच में, याके मोह तत्व चौफेर।। ३४ ।।

सारे ज्ञानी लोग यहां अटक गए हैं। आगे जाने के रास्ते का उनके पास शब्द ही नहीं है। वह सब इसी माया में खोज कर रहे हैं। माया का अन्धकार बेहद की सीमा से पहले तक फैला हुआ है।

सब्द जो सारे मोह लों, एक लवा न निकस्या पार।
खोज खोज ताही सब्द को, फेर फेर पड़े अंधार।। ३५ ।।

यहां की सब वाणी मोह तत्व तक का ही बयान करती है और एक शब्द भी आगे नहीं जाता। फिर उस परब्रह्म को इसी में खोजते-खोजते अन्धकार में डूब जाते हैं।

ए ख्वाबी दम सब नींद लों, ए दम नींदै के आधार।
जो कदी आगे बल करे, तो गले नींदै में निराकार।। ३६ ।।

यहां के सभी जीव स्वप्न के ही हैं। सपने तक ही इनकी पहुंच है। यदि कोई आगे जाने की कोशिश करता भी है तो वह निराकार में ही गल जाता है।

तबक चौदे ख्वाब के, याको पेड़ै नींद निदान।
नींद के पार जो खसम, सो ए क्यों करे पेहेचान।। ३७ ।।

यह चौदह लोकों की दुनियां स्वप्न की है। इसकी मूल नींद है। इस नींद के पार जो प्रीतम है उसकी नींद में रहकर कैसे पहचान कर सकते हैं?

बड़ी बुध वाले जो कहावहीं, सो सीतल भए इन भांत:
ना पेहेचान छल वतन की, सो सुन्य गले ले स्वांत।। ३८ ।।

इस ब्रह्माण्ड में जो बड़े ज्ञानी हुए वह इसी तरह हताश (निराश) हो गए। उन्हें न माया की खबर पड़ी और न आगे की। इस तरह से निराश होकर शून्य में गल गए।

ए पुकार साधू सुनके, हट रहे पीछे पाए।
पार सुध किन न परी, सब इतहीं रहे उरझाए।। ३९ ।।

इनकी ऐसी अनिश्चित वाणी को सुनकर दूसरे खोज करने वाले भी पीछे हट गए। किसी को भी निराकार के आगे की खबर नहीं मिली। सब इसी निराकार शून्य में उलझे रह गए।

Nijanand App

जिनहूं जैसा खोजिया, सो बोले बुध माफक।
मैं देखे सब्द सबन के, जो गए जाहेर मुख बक।।४०।।

जिसने अपनी बुद्धि के अनुसार जितना खोजा वह उतना ही बोले। मैंने सब की वाणी को देखा और अनुभव किया कि इन्होंने जो कुछ भी कहा है, व्यर्थ है।

या बिध तो हुई नास्त, सो नास्त जानो जिन।
सार सब्द मैं देख के, लिए सो दृढ़ कर मन।।४१।।

इस तरह से सभी की वाणी ने कहा कि वह पाने योग्य नहीं है। अब श्यामाजी कहती हैं कि लोग यहां नहीं पा सके, तो यह नहीं समझना कि ब्रह्म नहीं है। इनकी वाणी में से सार शब्द को खोजकर परब्रह्म हैं, ऐसा मन में दृढ़ किया।

जिन जानो पाया नहीं, है पावनहार प्रवान।
सो ए छिपे इन छल थें, वाकी मिले न कासो तान।।४२।।

ऐ दुनियावालो! ऐसा न समझना कि कोई परब्रह्म को पाने वाला नहीं है। परब्रह्म के पाने वाले तो हैं, परन्तु वह इस छल में छिपे हैं। उनका किसी से तालमेल मिलता नहीं है (विचारधारा नहीं मिलती)।

सो तो प्रेमी छिप रहे, वाको होए गयो सब तुच्छ।
ओ खेले पिया के प्रेम में, और भूल गए सब कुछ।।४३।।

ऐसे परब्रह्म के प्रेमी (आशिक) संसार में छिपे हैं। उनको संसार नाचीज हो गया है। वह केवल प्रीतम के प्रेम में रंगे हैं और दुनियां का सब कुछ भूल गए हैं।

सुरत न वाकी छल में, वाही तरफ उजास।
प्रेमै में मगन भए, और होए गयो सब नास।।४४।।

इनकी सुरत (ध्यान) माया में नहीं है। इनका ध्यान अखण्ड घर की तरफ उजाले में है। यह पिया के प्रेम में मस्त हैं। इनके लिए दुनियां मर गई है।

प्रेमी तो नेहेचे छिपे, उन मुख बोल्यो न जाए।
सब्द कदी जो निकसे, सो ग्यानी क्यों समझाए।।४५।।

ऐसे परब्रह्म के प्रेमी निश्चित रूप से छिपे हैं। वह दुनियां की कोई बात करते ही नहीं हैं। यदि वह पार के शब्द कहते भी हैं तो यहां के ज्ञानियों की समझ में नहीं आता।

सब्द जो सीधे प्रेम के, सास्त्र तो स्यानप छल।
या विध कोई न समझहीं, बात पड़ी है वल।।४६।।

उनके शब्द सीधे परब्रह्म की बात बतलाते हैं। शास्त्र तो चतुराई और छल से भरे पड़े हैं। इस तरह से उनकी बात के रहस्य (मर्म) को कोई समझ नहीं पाता।

साधू सास्त्र जो बोलहीं, सो तो सुनता है संसार।
पर मूल माएने गुझ हैं, सोई गुझ सब्द हैं पार।।४७।।

संसार के साधु और शास्त्र जो बोलते हैं सारा संसार उनकी सुनता है, परन्तु परब्रह्म के रहस्य का जो भेद छिपा है उसे किसी ने नहीं पाया। वही पार के शब्द हैं।

Nijanand App

सब कोई देखे सास्त्र को, सास्त्र तो गोरख धंध।
मूल कड़ी पाए बिना, तोलो देखीता ही अंध।।४८।।

मैंने सारे शास्त्रों को देखा कि यह तो गोरख धन्धा है। जब तक इसकी मूल कड़ी नहीं मिल जाती, तब तक देखते हुए भी अन्धे की तरह भटकना पड़ता है।

ऐसा तो कोई न मिल्या, जो दोनों पार प्रकास।
मगन पिया के प्रेम में, उधर भी उजास।।४९।।

मुझे तो ऐसा कोई नहीं मिला जो हद और बेहद दोनों के ज्ञान में प्रवीण हो, प्रीतम के प्रेम में भी मग्न हो और शास्त्रों के ज्ञान में भी सतर्क हो।

जो कोई ऐसा मिले, सो देवे सब सुध।
सब्दें सब समझावहीं, कहे वतन की विध।।५०।।

यदि कोई ऐसा मिले तो वही पहचान करा सकता है। वही (गुझ) मायने (अर्थ) खोलकर घर की हकीकत कह सकता है।

कड़ी बतावे मूल की, सास्त्र निकाले वल।
ठौर खसम सब केहेवहीं, जो है सदा नेहेचल।।५१।।

ऐसा कोई नहीं मिला जो निराकार शून्य की मूल आंकड़ी (गुत्थी) बतावे और शास्त्रों के टेढ़े ज्ञान को सीधा करके सच्चिदानन्द परब्रह्म जो खसम (धनी) है उसकी और परमधाम की पहचान कराए।

आप ओलखावे आप में, आप पुरावे साख।
आतम को परआतमा, नजरों आवे साख्यात।।५२।।

ऐसा कोई मिले जो अपने अन्दर ही परब्रह्म की पहचान कराए और खुद साक्षी देवे कि मैंने परब्रह्म को देखा है तथा आत्म और परात्म को मिलाकर एक रूप दिखा दे।

और सब्द भी हैं सही, पिया करसी परदा दूर।
सब मिल कदमों आवसी, तब हम पिया हजूर।।५३।।

और भी संसार के ग्रन्थ हैं जो यह कहते हैं कि परब्रह्म आकर सब संशय मिटाएंगे। जब सारे जगत के लोग हिन्दू या मुसलमान सब उसे पहचान कर चरणों में आएंगे तब हम उठकर परमधाम में धनी के सामने खड़े होंगे।

आगम की बानी कहे, पिया आवेंगे तेहेकीक।
तिन आसा मेरी बंधी, पूरन आई परतीत।।५४।।

इस संसार के सभी ग्रन्थ भविष्यवाणी बोल रहे हैं कि परब्रह्म सबके पिया अवश्य आएंगे। उन वचनों से मुझे पक्का विश्वास हो गया और आशा लग गई कि धनी अवश्य आएंगे।

मन चित बुध दृढ़ किया, पिया न करें निरास।
महामत नेहेचें कहें, होसी दुलहे सों विलास।।५५।।

अब मेरे मन, चित्त और बुद्धि में दृढ़ हो गया कि वह पिया मुझे निराश नहीं करेंगे। श्री महामति जी कहते हैं कि धनी हमें निश्चित मिलेंगे और हम उनके साथ आनन्द करेंगे।

।। प्रकरण ।। २ ।। चौपाई ।। ९२ ।।

Nijanand App

विरह तामस का प्रकरण–राग सिंधूड़ो कड़खा

नोट : प्यारे सुन्दरसाथजी! यह विरह तामस का तब हुआ जब देहली में गोवर्धनदास और लालदास के बीच मुल्ला की मुलाकात से कुरान सुनने के बाद विचारों में अन्तर आ गया। लालदासजी ने स्वामी जी से कहा कि हमारा यकीन तो चटाई तक है। तब श्रीजी को सारा वृत्तान्त सुनने पर जोश आया और सब जागनी का काम छोड़कर सबको अलग-अलग भेज दिया और स्वयं अनूपशहर को चले। रास्ते में स्वास्थ्य अधिक खराब होने पर सनन्ध ग्रन्थ उतरा और उस समय यह विरह तामस में हुआ, उसे लिखा है। इसके बाद कलस हिन्दुस्तानी ग्रन्थ उतरा।

मैं चाहत न स्वांत इन भांत,
अजूं आउध अंग चले, इन नैनों दोनों नेक न आवे नीर।
दरद देहा जरद गरद रद करे, मैं क्यों धरूं धीर अस्थिर सरीर।। १ ।।

स्वामीजी तामस में हैं और अपने आपसे विचार कर रहे हैं कि जागनी के काम में सुन्दरसाथ के असहयोग से मुझे निराशावादी नहीं होना चाहिए। मैं इस तरह से शान्ति नहीं चाहता। मेरे तन के सभी अंग चलते हैं। निराशा की हालत में भी आंखों से आंसू नहीं आ रहे हैं। धनी के दर्द से मेरा शरीर पीला हो गया है, अस्त-व्यस्त हो गया है और धूल के समान मिट्टी हो गया है। अब मुझे मिट जाने वाले तन से कैसे धैर्य हो?

कठिन निपट विकट घाटी प्रेम की, त्रबंक बंको सूरो किनों न अगमाए।
धार तरवार पर सचर सिनगार कर, सामी अंग सांगा रोम रोम भराए।। २ ।।

धनी के प्रेम का रास्ता बड़ा कठिन है। इसमें कई कर्मकाण्ड (शरीयत) उपासनाकाण्ड (तरीकत) और ज्ञानकाण्ड (हकीकत) के टेढ़े रास्ते हैं, जिन पर चलने वाले बड़े-बड़े शूरवीर भी इस प्रेम-मार्ग पर नहीं चल पाते। यह रास्ता तलवार की धार पर चलने के समान है। इस रास्ते में सामने से गुण, अंग, इन्द्रियों के भाले छेद रहे हैं, इसलिए हे मेरी आत्मा! तुम धैर्य और साहस का शृंगार करके चलो।

सागर नीर खारे लेहेरां मार मारे फिरें, बेटो बीच बेसुध पछाड़ खावे।
खेलें मछ मिले गलें लेउछाले, संधो संध बंधे अंधों यों जो भावे।। ३ ।।

इस भवसागर में माया की लहरें थपेड़े मारती हैं। जिसमें यह जीव छोटे-छोटे टापुओं से टकराकर बेसुध हो जाता है, अर्थात् कमजोर दिल वाले साथियों के असहयोग से निराशा होती है। इस भवसागर में बड़े-बड़े मगरमच्छ हैं। यह एक दूसरे को निगल रहे हैं। बड़े-बड़े गद्दीधारी महन्त, धर्माचार्य, साधारण मनुष्य को ज्ञान से भटकाते हैं। इस तरह से यह मनुष्य धर्मों के जटिल बन्धनों से बंधकर इसको अच्छा समझ रहे हैं।

दाहो दसे दसों दिस सबे धखे, लाल झालां चले इंड न झलाए।
फोड़ आकास फिरे सिर सिखरों, ए फलंग उलंघ संग खसम मिलाए।। ४ ।।

इन बड़े लोगों को भी काम, क्रोध, मोह, लोभ, अहंकार, मद, मत्सर की दशों दिशाओं से उठ रही ज्वालाओं ने नहीं छोड़ा है, इसलिए हे मेरी आत्मा! तुम इन सबसे बचो। क्षर ब्रह्माण्ड को ही फोड़कर धनी का ध्यान करके भवसागर को छलांग लगाकर पार कर जाओ। धनी तुम्हें मिल जाएंगे।

घाट अवघाट सिलपाट अति सलवली, तहां हाथ ना टिके पपील पाए।
वाओ वाए बढ़े आग फैलाए चढ़े, जले पर अनलें ना चले उड़ाए।। ५ ।।

इस भवसागर के घाट टूटे-फूटे हैं, अवघाट हैं तथा इनके पत्थरों पर काई (सिल) की चिकनाहट है। अर्थात् यहां साधु महात्माओं, धर्माचार्यों, कर्मकाण्डियों, कुटुम्ब की लोक-लाज में भटकने वाले को कितना

Nijanand App

ही समझाओ, उनके मनों पर लोभ की चिकनी काई लगी है, इसलिए कोई असर नहीं होता। इस लोभ (चिकनी सिल) का इतना जबरदस्त प्रभाव है कि यहां चींटी भी चलकर फिसलती है, अर्थात् साधारण जीव तो चल ही नहीं सकता। चारों तरफ इनकी चाहनाओं की पूर्ति के लिए इनके सेवक प्रचार-प्रसार में लगे हैं। लोभ की अग्नि को धधका रहे हैं, जिससे साधारण जीव के इश्क और ईमान डोल जाते हैं तथा जीव इस कठिन रास्ते को पार नहीं कर पाता है।

पेहेन पाखर गज घंट बजाए चल, पैठ सकोड़ सुई नाके समाए।
डार आकार संभार जिन ओसरे, दौड़ चढ़ पहाड़ सिर झांप खाए।।६ ।।

अब महामतिजी अपनी आत्मा से कहते हैं कि ऐसे टेढ़े रास्ते तथा स्थितियों में अवसर पाते ही हाथी की चाल, घण्टे बजाते हुए, चलो, अर्थात् यदि कोई निन्दा करता है या रास्ते में बाधाएं डालता है, तो उसकी तरफ ध्यान ही मत दो। धनी की मेहर का पाखर पहन कर इश्क और ईमान के घण्टे बजाते चलो तथा साहस का सहारा लेकर लक्ष्य की ओर संसार के मान और अपमान की तरफ से अपने को सिकोड़ कर (मुख मोड़कर) इतना छोटा बना लो कि सुई के नाके से निकल सको, अर्थात् मान और अपमान की तरफ ध्यान ही मत दो। हे मेरी आत्मा! तुम माया की सब चाहनाओं को ऐसे छोड़ दो जैसे शरीर छोड़ा जाता है और भूलकर भी इनकी तरफ ध्यान न दो, अर्थात जिन्होंने साथ नहीं निभाया उनके बारे में मत सोचो। तुम अपने ही बल से पहाड़ पर चढ़कर कूद जाओ, अर्थात साहस करके इस जागनी के कार्य में लग जाओ।

बोहोत बंध फंद धंध अजूं कई बीच में, सो देखे अलेखे मुख भाख न आवे।
निराकार सुन्य पार के पार पिउ वतन, इत हुकम हाकिम बिना कौन आवे।।७ ।।

अभी भी तेरे सामने इस रास्ते में झंझटें आएंगी। वह दिखाई तो देंगी पर अभी से उनका कुछ अनुमान नहीं किया जा सकता। फिर भी तू दृढ़ता के साथ ध्यान रखना कि तेरे धनी निराकार, शून्य के पार और अक्षर से परे परमधाम में हैं, जहां बिना धाम धनी की मर्जी से कोई आ नहीं सकता।

मन तन वचन लगे तिन उतपन, आस पिया पास बांध्यो विश्वास।
कहे महामती इन भांत तो रंग रती, दई पिया अग्या जाग करूं विलास।।८ ।।

हे मेरी आत्मा! इस प्रकार के वचनों की विचारधारा से अपने तन, मन, धन को शक्तिशाली बनाकर अपने धनी पर दृढ़ विश्वास रखो। इस तरह से महामतिजी कहते हैं कि धनी के प्रेम में रम जाने पर ही धनी की आज्ञा होगी और मैं घर में जाकर धनी से आनन्द विलास करूंगी।

।। प्रकरण ।। ३ ।। चौपाई ।। १०० ।।

राग श्री सामेरी

पिया मोहे स्वांत न आवहीं, न कछू नैनों नीर।
पिया बिना पल जो जात है, अहनिस धखे सरीर।। १ ।।

हे धनी! मुझे इस तरह से शान्ति भी नहीं आ सकती। विरह से आंखों में आंसू भी नहीं आते हैं। हे धनी! आपके बिना जो पल भी बीतता है वह दिन-रात शरीर को जलाता है।

सब अंग अगनी जलके, जात उड़े ज्यों गरद।
क्यों इत स्वांत जो आवहीं, जित दुलहे का दरद।। २ ।।

इस विरह से सारे शरीर में आग लगी है। शक्तिहीन होकर धूल की तरह शरीर जलकर उड़ रहा है। जहां दूल्हे की जुदाई का दर्द हो वहां शान्ति कैसे हो सकती है?

Nijanand App

ही समझाओ, उनके मनों पर लोभ की चिकनी काई लगी है, इसलिए कोई असर नहीं होता। इस लोभ (चिकनी सिल) का इतना जबरदस्त प्रभाव है कि यहां चींटी भी चलकर फिसलती है, अर्थात् साधारण जीव तो चल ही नहीं सकता। चारों तरफ इनकी चाहनाओं की पूर्ति के लिए इनके सेवक प्रचार-प्रसार में लगे हैं। लोभ की अग्नि को धधका रहे हैं, जिससे साधारण जीव के इश्क और ईमान डोल जाते हैं तथा जीव इस कठिन रास्ते को पार नहीं कर पाता है।

पेहेन पाखर गज घंट बजाए चल, पैठ सकोड़ सुई नाके समाए।
डार आकार संभार जिन ओसरे, दौड़ चढ़ पहाड़ सिर झांप खाए।।६ ।।

अब महामतिजी अपनी आत्मा से कहते हैं कि ऐसे टेढ़े रास्ते तथा स्थितियों में अवसर पाते ही हाथी की चाल, घण्टे बजाते हुए, चलो, अर्थात् यदि कोई निन्दा करता है या रास्ते में बाधाएं डालता है, तो उसकी तरफ ध्यान ही मत दो। धनी की मेहर का पाखर पहन कर इश्क और ईमान के घण्टे बजाते चलो तथा साहस का सहारा लेकर लक्ष्य की ओर संसार के मान और अपमान की तरफ से अपने को सिकोड़ कर (मुख मोड़कर) इतना छोटा बना लो कि सुई के नाके से निकल सको, अर्थात् मान और अपमान की तरफ ध्यान ही मत दो। हे मेरी आत्मा! तुम माया की सब चाहनाओं को ऐसे छोड़ दो जैसे शरीर छोड़ा जाता है और भूलकर भी इनकी तरफ ध्यान न दो, अर्थात जिन्होंने साथ नहीं निभाया उनके बारे में मत सोचो। तुम अपने ही बल से पहाड़ पर चढ़कर कूद जाओ, अर्थात साहस करके इस जागनी के कार्य में लग जाओ।

बोहोत बंध फंद धंध अजूं कई बीच में, सो देखे अलेखे मुख भाख न आवे।
निराकार सुन्य पार के पार पिउ वतन, इत हुकम हाकिम बिना कौन आवे।।७ ।।

अभी भी तेरे सामने इस रास्ते में झंझटें आएंगी। वह दिखाई तो देंगी पर अभी से उनका कुछ अनुमान नहीं किया जा सकता। फिर भी तू दृढ़ता के साथ ध्यान रखना कि तेरे धनी निराकार, शून्य के पार और अक्षर से परे परमधाम में हैं, जहां बिना धाम धनी की मर्जी से कोई आ नहीं सकता।

मन तन वचन लगे तिन उतपन, आस पिया पास बांध्यो विश्वास।
कहे महामती इन भांत तो रंग रती, दई पिया अग्या जाग करूं विलास।।८ ।।

हे मेरी आत्मा! इस प्रकार के वचनों की विचारधारा से अपने तन, मन, धन को शक्तिशाली बनाकर अपने धनी पर दृढ़ विश्वास रखो। इस तरह से महामतिजी कहते हैं कि धनी के प्रेम में रम जाने पर ही धनी की आज्ञा होगी और मैं घर में जाकर धनी से आनन्द विलास करूंगी।

।। प्रकरण ।। ३ ।। चौपाई ।। १०० ।।

राग श्री सामेरी

पिया मोहे स्वांत न आवहीं, न कछू नैनों नीर।
पिया बिना पल जो जात है, अहनिस धखे सरीर।। १ ।।

हे धनी! मुझे इस तरह से शान्ति भी नहीं आ सकती। विरह से आंखों में आंसू भी नहीं आते हैं। हे धनी! आपके बिना जो पल भी बीतता है वह दिन-रात शरीर को जलाता है।

सब अंग अगनी जलके, जात उड़े ज्यों गरद।
क्यों इत स्वांत जो आवहीं, जित दुलहे का दरद।। २ ।।

इस विरह से सारे शरीर में आग लगी है। शक्तिहीन होकर धूल की तरह शरीर जलकर उड़ रहा है। जहां दूल्हे की जुदाई का दर्द हो वहां शान्ति कैसे हो सकती है?

Nijanand App

हाड़े हाड़ पिसात हैं, चकी बीच जिन भांत।
आराम ना जीवरा होवहीं, तो क्यों कर उपजे स्वांत।। ३ ।।

अन्दर ही अन्दर हड्डियां चक्की की तरह रगड़ खाकर पिस रही हैं। जब जीव को किसी तरह से आराम नहीं मिल रहा तो शान्ति कहां से मिले?

सब अंग सारन होए के, सारे सकल संधान।
अपनी इन्द्री आप को, उलट लगी है खान।। ४ ।।

मेरे सारे अंग ही दुश्मन होकर अंग-अंग में छेद करते हैं और मेरे ही गुण, अंग, इन्द्रिय उलटा मुझे खा रहे हैं।

उड़ी जो नींद अंदर की, पड़त न क्यों ही चैन।
प्यारी पिउ के दरस की, कब देखूं मुख नैन।। ५ ।।

जब अन्दर की नींद (अज्ञानता) हट गई तो फिर किस तरह से चैन पड़े? हे पिया! अब मेरी आत्मा आपके दर्शनों के लिए तड़प रही है कि कब आपको नैनों से देखूंगी?

पिया बिन कछुए न भावहीं, जानूं कब सुनों पिया बैन।
जोलों पिउ मुझे न मिले, तोलों तलफत हों दिन रैन।। ६ ।।

हे पिया! आपके बिना किसी की बात अच्छी नहीं लगती (कुछ भाता नहीं)। बस चाहना है कि कब आपके मीठे-मीठे वचन सुनूं। जब तक आप मुझे नहीं मिल जाते तब तक दिन-रात तड़पती रहूंगी।

घाटी टेढ़ी सकड़ी, तीखी खांडा धार।
रोम रोम सांगा सामिया, तामें चढूं कर सिनगार।। ७ ।।

आपके मिलने का रास्ता बहुत टेढ़ा, संकरा, तलवार की धार के समान है और ऊपर से दुनियां वाले तीखे वचनों से तानें मारकर भाले के समान छेद रहे हैं। ऐसा समझते हुए भी अब मैं सब अंगों से सावचेत होकर पूर्ण उत्साह के साथ चल पड़ी हूं।

नीर खारे भवसागर, और लेहेरां मारे मार।
बेटो बीच पछाड़हीं, वार न काहूं पार।। ८ ।।

भवसागर का ज्ञान खारे जल के समान है। यह रास्ते में थपेड़े मारकर गुमराह करता है। लहरों की चोट से टापुओं से टकराती हूं, अर्थात् सहारा देने वाले सुन्दरसाथ भी बेशुमार ठोकरें मारकर गिराते हैं।

तान तीखे आड़े उलटे, और लेत भमरियां जल।
मिने मछ लडाइयां, यामें लेवें सारे निगल।। ९ ।।

लहरों की चोट ऐसी तीखी है कि आड़े आकर जल की भंवर में गिरा देती है। इसमें बड़े-बड़े मगरमच्छ निगलने को तैयार बैठे हैं।

ए दुनी दिल अंधी दिवानी, और बंधी संधों संध।
हाथों हाथ न सूझहीं, तिमर तो या सनंध।। १० ।।

यह दुनियां दिल की अन्धी है और सब कर्मकाण्ड से जर्रा-जर्रा बंधी है। यहां इतना घोर अन्धकार है कि अपने और पराए की भी पहचान नहीं होती है।

Nijanand App

धखत दाह दसो दिस, झालां इंड न समाए।
फोड़ आकास पर फिरे, किन जाए न उलंघी ताए।। ११ ।।

ऐसे हालात में मेरे अन्दर दसों दिशाओं में इस अग्नि की लपटें अपने शरीर से सही नहीं जाती हैं। इस अग्नि की लपटें इतनी तेज हैं कि मेरे पूरे शरीर में फैल गई हैं और जिनसे बचना किसी तरह सम्भव नहीं है।

घाट पाट अति सलवली, तहां हाथ न टिके पपील पाए।
पवने अगनी पर जले, किन चढ़्यो न उड़्यो जाए।। १२ ।।

किनारे की चट्टानों पर मोह-ममता की ऐसी काई लगी है कि इस पर चींटी भी नहीं चल पाती। ऊपर से लोगों की चापलूसी की बातें हवा की भांति उस आग को और धधकाती हैं। उससे न तो आगे चढ़ा जाता है और न ही पक्षी की तरह उड़कर आप तक पहुंच सकते हैं।

इत चल तूं हस्ती होए के, पेहेन पाखर गज घंट बजाए।
पैठ सकोड़ सुई नाके मिने, जिन कहूं अंग अटकाए।। १३ ।।

हे मेरी आत्मा! ऐसे विकराल रास्ते में तू श्री राजजी की मेहर रूपी पाखर ओढ़कर इश्क और ईमान के घण्टे बजाकर मस्त हाथी की चाल चल और अपने अहंकार को इतनी दूर कर दे कि सिकुड़कर सुई के नाके के छेद में से निकल जा और कोई अंग न अटके।

दीजे न आल आकार को, पिउ मिलना अंग इन।
दौड़ चढ़ पहाड़ झांप खा, कायर होवे जिन।। १४ ।।

किसी प्रकार की सुस्ती मत कर, क्योंकि इस तन से कार्य पूरा करके धनी से मिलना है, इसलिए अब पूर्ण साहस करके पहाड़ जैसे जागनी के काम में लग जा और कायर मत बन।

बोहोत फंद बंध धंध कई, कई कोटान लाखों लाख।
अंदर नजरों आवही, पर मुख न देवे भाख।। १५ ।।

इस रास्ते में अभी भी लाखों करोड़ों मुसीबतें आएंगी जिनका कोई अनुमान नहीं है, इसलिए उनका अभी कहना ही क्या?

आड़े चौदे तबक मोह, निराकार निरंजन।
याके पार पोहोंचना, इन पार पिउ वतन।। १६ ।।

चौदह तबकों (लोकों) के ऊपर निराकार और निरंजन का परदा है। इनको पार करते हुए तुम्हें अपने धनी के पास पहुंचना है।

पांउं चले ना पर उड़े, बीच तो ऐसे पंथ।
पर ए सब तोलों देखिए, जोलों ना दृष्टें कंथ।। १७ ।।

बीच में धर्म, पन्थों, पैंडों के ऐसे विकट रास्ते हैं जिनको न तो चलकर और न उड़कर ही पार करना सम्भव है। फिर भी इतना निश्चित है कि जब तक धनी को पा नहीं लिया जाता तभी तक यह मुसीबतें नजर आती हैं।

Nijanand App

आतम बंधी आस पिया, मन तन लगे वचन।
कहे महामती कौन आवहीं, इत हुकम खसमके बिन।। १८ ।।

अब तन, मन और वचन से आपसे मिलने की मेरी आत्मा को आशा लगी है। महामतिजी कहते हैं कि इसको आपके बिना और कौन आकर पूरा कर सकता है?

।। प्रकरण ।। ४ ।। चौपाई ।। ११८ ।।

विरह के प्रकरण–राग देसांकी

तलफे तारूनी रे, दुलही को दिल दे।
सनमंध मूल जानके रे, सेज सुरंगी पर ले।। १ ।।

मैं आपकी युवा अंगना हूं और आपके वियोग में तड़प रही हूं। कृपा करके मुझ दुलहिन को अपना दिल देकर परमधाम का मूल सम्बन्ध जानकर अपने इश्क और प्यार की शैय्या पर स्वीकार करें।

सब तन विरहे खाइया, गल गया लोहू मांस।
न आवे अंदर बाहेर, या विध सूकत स्वांस।। २ ।।

आपके वियोग ने मेरा शरीर जर्जर कर दिया है। इसमें खून सूख गया है और मांस भी गल गया है। अब सांस लेना भी भारी हो गया है।

हाड़ हुए सब लकड़ी, सिर श्रीफल विरह अगिन।
मांस मीज लोहू रगां, या विध होत हवन।। ३ ।।

मेरे तन की सब हड्डियां लकड़ी बन गयी हैं और सिर आपके विरह में नारियल बन चुका है। अब शरीर के मांस, मज्जा, खून और नसों को विरह की अग्नि में हवन कर देती हूं।

रोम रोम सूली सुगम, खंड खंड खांडा धार।
पूछ पिया दुख तिनको, जो तेरी विरहिन नार।। ४ ।।

मेरे रोएं-रोएं में आपके विरह के सूए चुभ रहे हैं और तलवार की धार (आप का विरह) से अंग टुकड़े-टुकड़े हो रहे हैं। हे धनी! मैं आपकी अंगना आपके विरह में दुःखी हूं। आप कृपा करके मेरा हाल तो पूछ लो।

ए दरद जाने सोई, जिन लगे कलेजे घाव।
ना दारू इन दरद का, फेर फेर करे फैलाव।। ५ ।।

आपके विरह के दर्द को वही जानता है जिसके कलेजे में विरह के घाव लगे होते हैं। इस कठोर दर्द की कोई दवा नहीं है। यह तो लगातार फैलता ही जाता है।

ए दरद तेरा कठिन, भूखन लगे ज्यों दाग।
हेम हीरा सेज पसमी, अंग लगावे आग।। ६ ।।

हे मेरे धनी! आपके विरह का दर्द बड़ा कठिन है। इसमें आभूषण, जला देने वाली अग्नि के समान लगते हैं। हीरे और सोने के पलंग जिस पर कोमल गद्दा बिछा होता है, वह सुख की बजाय विरह का दुःख बढ़ाते हैं।

Nijanand App

आतम बंधी आस पिया, मन तन लगे वचन।
कहे महामती कौन आवहीं, इत हुकम खसमके बिन।। १८ ।।

अब तन, मन और वचन से आपसे मिलने की मेरी आत्मा को आशा लगी है। महामतिजी कहते हैं कि इसको आपके बिना और कौन आकर पूरा कर सकता है?

।। प्रकरण ।। ४ ।। चौपाई ।। ११८ ।।

विरह के प्रकरण-राग देसांकी

तलफे तारूनी रे, दुलही को दिल दे।
सनमंध मूल जानके रे, सेज सुरंगी पर ले।। १ ।।

मैं आपकी युवा अंगना हूं और आपके वियोग में तड़प रही हूं। कृपा करके मुझ दुलहिन को अपना दिल देकर परमधाम का मूल सम्बन्ध जानकर अपने इश्क और प्यार की शैय्या पर स्वीकार करें।

सब तन विरहे खाइया, गल गया लोहू मांस।
न आवे अंदर बाहेर, या विध सूकत स्वांस।। २ ।।

आपके वियोग ने मेरा शरीर जर्जर कर दिया है। इसमें खून सूख गया है और मांस भी गल गया है। अब सांस लेना भी भारी हो गया है।

हाड़ हुए सब लकड़ी, सिर श्रीफल विरह अगिन।
मांस मीज लोहू रगां, या विध होत हवन।। ३ ।।

मेरे तन की सब हड्डियां लकड़ी बन गयी हैं और सिर आपके विरह में नारियल बन चुका है। अब शरीर के मांस, मज्जा, खून और नसों को विरह की अग्नि में हवन कर देती हूं।

रोम रोम सूली सुगम, खंड खंड खांडा धार।
पूछ पिया दुख तिनको, जो तेरी विरहिन नार।। ४ ।।

मेरे रोएं-रोएं में आपके विरह के सूए चुभ रहे हैं और तलवार की धार (आप का विरह) से अंग टुकड़े-टुकड़े हो रहे हैं। हे धनी! मैं आपकी अंगना आपके विरह में दुःखी हूं। आप कृपा करके मेरा हाल तो पूछ लो।

ए दरद जाने सोई, जिन लगे कलेजे घाव।
ना दारू इन दरद का, फेर फेर करे फैलाव।। ५ ।।

आपके विरह के दर्द को वही जानता है जिसके कलेजे में विरह के घाव लगे होते हैं। इस कठोर दर्द की कोई दवा नहीं है। यह तो लगातार फैलता ही जाता है।

ए दरद तेरा कठिन, भूखन लगे ज्यों दाग।
हेम हीरा सेज पसमी, अंग लगावे आग।। ६ ।।

हे मेरे धनी! आपके विरह का दर्द बड़ा कठिन है। इसमें आभूषण, जला देने वाली अग्नि के समान लगते हैं। हीरे और सोने के पलंग जिस पर कोमल गद्दा बिछा होता है, वह सुख की बजाय विरह का दुःख बढ़ाते हैं।

Nijanand App

विरहिन होवे पिउ की, वाको कोई ना उपाए।
अंग अपने वैरी हुए, सब तन लियो है खाए।।७।।

हे धनीजी! आपकी जो ऐसी विरहिणी हो उसका और कोई उपाय नहीं है। उसके अपने ही अंग उसको दुश्मन के समान लगते हैं। उसे विरह के दु:ख ने पूर्ण रूप से खा लिया है।

ए लछन तेरे दरद के, ताए गृह आंगन न सुहाए।
रतन जड़ित जो मंदिर, सो उठ उठ खाने धाए।।८।।

आपके विरह के दर्द की हकीकत का बयान किया है। आपकी विरहिणी को घर और आंगन अच्छा नहीं लगता और रत्नों से जड़े हुए, सब सुख से भरे साधन खाने को आ रहे हैं।

ना बैठ सके विरहनी, सोए सके ना रोए।
राजप्रथी पांउ दाब के, निकसी या विध होए।।९।।

आपकी विरहिणी को बैठने में, सोने में किसी तरह से चैन नहीं है। पूरी घर-गृहस्थी की सुख सामग्री का त्याग कर आपके विरह में भटकती है।

विरहा ना देवे बैठने, उठने भी ना दे।
लोट पोट भी ना कर सके, हूक हूक स्वांस ले।।१०।।

आपका विरह उठने-बैठने नहीं देता है और लेटने भी नहीं देता है। केवल हाय धनी, हाय धनी की सांस चल रही है।

आठों जाम विरहनी, स्वांस लिए हूक हूक।
पत्थर काले ढिग हुते, सो भी हुए टूक टूक।।११।।

इस तरह से हाय धनी, हाय धनी की रट दिन-रात लगने पर कठोर दिल वाले सुन्दरसाथ भी नर्म हो गए और साथ निभाने को तैयार हो गए।

एह विध मोहे तुम दई, अपनी अंगना जान।
परदा बीच टालने, ताथें विरहा परवान।।१२।।

हे मेरे धनी! आपने अपनी अंगना जानकर मेरे दिल में आकर साहस दिया तथा मैंने यह जो ऊपर तक वचनों में विरह किया वह केवल आपके और मेरे बीच में तामस का परदा हो गया था, सो हट गया।

॥ प्रकरण ॥ ५ ॥ चौपाई ॥ १३० ॥

राग धना मेवाड़

विरहा गत रे जाने सोई, जो मिल के बिछुरी होए, मेरे दुलहा।
ज्यों मीन बिछुरी जलथें, या गत जाने सोए, मेरे दुलहा।
विरहनी विलखे तलफे तारुनी, तारुनी तलफे कलपे कामनी।।१।।

हे मेरे धनी! विरह की हकीकत वही जानता है जो मिलने के बाद अलग होता है। जैसे मछली जल से अलग होती है तो विरह का अनुभव उसे होता है, इसलिए हे मेरे धनी! मैं आपकी युवा अंगना बिलख-बिलख कर विरह में तड़प रही हूं तथा मैं कामिनी आपके वियोग में कलप रही हूं।

Nijanand App

विरहिन होवे पिउ की, वाको कोई ना उपाए।
अंग अपने वैरी हुए, सब तन लियो है खाए।। ७ ।।

हे धनीजी! आपकी जो ऐसी विरहिणी हो उसका और कोई उपाय नहीं है। उसके अपने ही अंग उसको दुश्मन के समान लगते हैं। उसे विरह के दुःख ने पूर्ण रूप से खा लिया है।

ए लछन तेरे दरद के, ताए गृह आंगन न सुहाए।
रतन जड़ित जो मंदिर, सो उठ उठ खाने धाए।। ८ ।।

आपके विरह के दर्द की हकीकत का बयान किया है। आपकी विरहिणी को घर और आंगन अच्छा नहीं लगता और रत्नों से जड़े हुए, सब सुख से भरे साधन खाने को आ रहे हैं।

ना बैठ सके विरहनी, सोए सके ना रोए।
राजप्रथी पांउ दाब के, निकसी या विध होए।। ९ ।।

आपकी विरहिणी को बैठने में, सोने में किसी तरह से चैन नहीं है। पूरी घर-गृहस्थी की सुख सामग्री का त्याग कर आपके विरह में भटकती है।

विरहा ना देवे बैठने, उठने भी ना दे।
लोट पोट भी ना कर सके, हूक हूक स्वांस ले।। १० ।।

आपका विरह उठने-बैठने नहीं देता है और लेटने भी नहीं देता है। केवल हाय धनी, हाय धनी की सांस चल रही है।

आठों जाम विरहनी, स्वांस लिए हूक हूक।
पत्थर काले ढिग हुते, सो भी हुए टूक टूक।। ११ ।।

इस तरह से हाय धनी, हाय धनी की रट दिन-रात लगने पर कठोर दिल वाले सुन्दरसाथ भी नर्म हो गए और साथ निभाने को तैयार हो गए।

एह विध मोहे तुम दई, अपनी अंगना जान।
परदा बीच टालने, ताथें विरहा परवान।।१२।।

हे मेरे धनी! आपने अपनी अंगना जानकर मेरे दिल में आकर साहस दिया तथा मैंने यह जो ऊपर तक वचनों में विरह किया वह केवल आपके और मेरे बीच में तामस का परदा हो गया था, सो हट गया।

।। प्रकरण ।। ५ ।। चौपाई ।। १३० ।।

राग धना मेवाड़

विरहा गत रे जाने सोई, जो मिल के बिछुरी होए, मेरे दुलहा।
ज्यों मीन बिछुरी जलथें, या गत जाने सोए, मेरे दुलहा।
विरहनी विलखे तलफे तारुनी, तारुनी तलफे कलपे कामनी।। १ ।।

हे मेरे धनी! विरह की हकीकत वही जानता है जो मिलने के बाद अलग होता है। जैसे मछली जल से अलग होती है तो विरह का अनुभव उसे होता है, इसलिए हे मेरे धनी! मैं आपकी युवा अंगना बिलख-बिलख कर विरह में तड़प रही हूं तथा मैं कामिनी आपके वियोग में कलप रही हूं।

Nijanand App

बिछरो तेरो वल्लभा, सो क्यों सहे सुहागिन।
तुम बिना पिंड ब्रह्मांड, हो गई सब अगिन।।। २ ।।

हे मेरे धनी! आपकी अंगना आपका वियोग कैसे सहन करे? आपके बिना तो यह तन और ब्रह्माण्ड आग के समान हो गया है।

विरहा जाने विरहनी, वाके आग ना अंदर समाए।
सो झालां बाहेर पड़ी, तिन दियो वैराट लगाए।। ३ ।।

इस विरह के दुःख को विरहिणी ही जानती है। उसको फिर दुनियां के दुःख नहीं सताते। विरह की अग्नि की लपटों से सारा तन जल रहा है।

विरहा ना छूटे वल्लभा, जो पड़े विघन अनेक।
पिंड ना देखो ब्रह्मांड, देखों दुलहा अपनो एक।। ४ ।।

हे धनी! कितने भी माया के सुख आड़े आएं, आपका विरह छूटता नहीं है। मुझे तो केवल मेरे दूल्हा दिखते हैं। तन और संसार कोई दिखाई नहीं देता अर्थात् किसी की तरफ ध्यान ही नहीं जाता।

विरहनी विरहा बीच में, कियो सो अपनों घर।
चौदे तबक की साहेबी, सो वारूं तेरे विरहा पर।। ५ ।।

हे धनी! तेरी विरहिणी ने तो अपना घर ही विरह को बना लिया है। अब चौदह लोकों की साहिबी भी मैं आपके विरह पर कुर्बान कर दूंगी।

आंधी आई विरह की, तिन दियो ब्रह्मांड उड़ाए।
विरहिन गिरी सो उठ ना सकी, मूल अकूंर रही भराए।। ६ ।।

आपका विरह आंधी की तरह आया जिससे मेरे तन की शक्ति समाप्त हो गई। आपके विरह में ऐसी-ऐसी बातें हो गईं कि उससे उठा ही नहीं गया। अब तो परमधाम का मूल अंकुर ही चित्त में रह गया है।

विरहा सागर होए रह्या, बीच मीन विरहनी नार।
दौड़त हों निसवासर, कहूं बेट ना पाऊं पार।। ७ ।।

अब आपका यह विरह सागर के समान हो गया है जिसमें आपकी अंगना मछली की तरह तड़प रही है। सहारे के लिए रात-दिन दौड़ती है, किन्तु विरह के सागर में कोई सहारा नहीं मिल रहा है (अर्थात् जब आप मिलें तो विरह हटे और सहारा मिले)।

।। प्रकरण ।। ६ ।। चौपाई ।। १३७ ।।

राग सोख मलार

इस्क बड़ा रे सबन में, ना कोई इस्क समान।
एक तेरे इस्क बिना, उड़ गई सब जहान।। १ ।।

हे मेरे धनी! अब आपके इश्क की याद आती है। यह इश्क सबसे बड़ा है और इसके समान कुछ भी नहीं है। एक आपके इश्क के बिना मेरी दुनियां ही उजड़ गई है।

Nijanand App

बिछरो तेरो वल्लभा, सो क्यों सहे सुहागिन।
तुम बिना पिंड ब्रह्मांड, हो गई सब अगिन।।।२ ।।

हे मेरे धनी! आपकी अंगना आपका वियोग कैसे सहन करे? आपके बिना तो यह तन और ब्रह्माण्ड आग के समान हो गया है।

विरहा जाने विरहनी, वाके आग ना अंदर समाए।
सो झालां बाहेर पड़ी, तिन दियो वैराट लगाए।। ३ ।।

इस विरह के दु:ख को विरहिणी ही जानती है। उसको फिर दुनियां के दु:ख नहीं सताते। विरह की अग्नि की लपटों से सारा तन जल रहा है।

विरहा ना छूटे वल्लभा, जो पड़े विघन अनेक।
पिंड ना देखो ब्रह्मांड, देखों दुलहा अपनो एक।। ४ ।।

हे धनी! कितने भी माया के सुख आड़े आएं, आपका विरह छूटता नहीं है। मुझे तो केवल मेरे दूल्हा दिखते हैं। तन और संसार कोई दिखाई नहीं देता अर्थात् किसी की तरफ ध्यान ही नहीं जाता।

विरहनी विरहा बीच में, कियो सो अपनों घर।
चौदे तबक की साहेबी, सो वारूं तेरे विरहा पर।। ५ ।।

हे धनी! तेरी विरहिणी ने तो अपना घर ही विरह को बना लिया है। अब चौदह लोकों की साहिबी भी मैं आपके विरह पर कुर्बान कर दूंगी।

आंधी आई विरह की, तिन दियो ब्रह्मांड उड़ाए।
विरहिन गिरी सो उठ ना सकी, मूल अकूंर रही भराए।। ६ ।।

आपका विरह आंधी की तरह आया जिससे मेरे तन की शक्ति समाप्त हो गई। आपके विरह में ऐसी-ऐसी बातें हो गईं कि उससे उठा ही नहीं गया। अब तो परमधाम का मूल अंकुर ही चित्त में रह गया है।

विरहा सागर होए रह्या, बीच मीन विरहनी नार।
दौड़त हों निसवासर, कहूं खेट ना पाऊं पार।। ७ ।।

अब आपका यह विरह सागर के समान हो गया है जिसमें आपकी अंगना मछली की तरह तड़प रही है। सहारे के लिए रात-दिन दौड़ती है, किन्तु विरह के सागर में कोई सहारा नहीं मिल रहा है (अर्थात् जब आप मिलें तो विरह हटे और सहारा मिले)।

।। प्रकरण ।। ६ ।। चौपाई ।। १३७ ।।

राग सोख मलार

इस्क बड़ा रे सबन में, ना कोई इस्क समान।
एक तेरे इस्क बिना, उड़ गई सब जहान।। १ ।।

हे मेरे धनी! अब आपके इश्क की याद आती है। यह इश्क सबसे बड़ा है और इसके समान कुछ भी नहीं है। एक आपके इश्क के बिना मेरी दुनियां ही उजड़ गई है।

Nijanand App

चौदे तबक हिसाब में, हिसाब निरंजन सुंन।
न्यारा इस्क हिसाब थें, जिन देख्या पिउ वतन।। २ ।।

चौदह लोकों का ब्रह्माण्ड, शून्य और निरंजन का किसी तरह से हिसाब किया जा सकता है, परन्तु जिस इश्क से घर और प्रीतम की पहचान हुई है उसका हिसाब नहीं हो सकता।

लोक अलोक हिसाब में, हिसाब जो हद बेहद।
न्यारा इस्क जो पिउ का, जिन किया आद लों रद।। ३ ।।

इस संसार के सभी लोकों का तथा हद-बेहद का तो किसी तरह लेखा-जोखा हो सकता है, परन्तु धनी के इश्क के सामने मैंने सब कुछ रद्द कर दिया।

एक अनेक हिसाब में, और निराकार निरगुन।
न्यारा इस्क हिसाब थें, जो कछू ना देखे तुम बिन।। ४ ।।

आदि नारायण तथा अनेक देवी-देवता और निराकार, निर्गुण तक का हिसाब किया जा सकता है, परन्तु आपके वियोग में जो इश्क आता है उसका वर्णन नहीं हो सकता।

और इस्क कोई जिन कथो, इस्कें ना पोहोंच्या कोए।
इस्क तहां जाए पोहोंचिया, जहां सुन्य सब्द ना होए।। ५ ।।

इसलिए महामतिजी कहती हैं कि इश्क तक कोई पहुंचा ही नहीं। इश्क का नाम ही मत लेना। इश्क की पहुंच बहुत ऊंची है, जहां शून्य के शब्द भी नहीं पहुंच सकते।

नाहीं कथनी इस्क की, और कोई कथियो जिन।
इस्क तो आगे चल गया, सब्द समाना सुंन।। ६ ।।

इश्क की कोई कहानी नहीं है, इसलिए कोई कहना मत। इश्क तो शून्य मण्डल से आगे गया है और तुम्हारे शब्द शून्य तक के ही हैं और शून्य में ही समा गए।

सब्द जो सूकया अंग में, हले नहीं हाथ पाए।
इस्क बेसुध न करे, रही अंदर बिलखाए।। ७ ।।

इश्क के शब्द तो अंग में सूख जाते हैं और हाथ-पाव भी नहीं चलते, परन्तु जो सच्चा इश्क है वह बेसुध नहीं करता और सुध में प्रीतम की याद में अन्दर ही अन्दर विरहिणी को बिलखाता है।

पांपण पल न लेवही, दसो दिस नैन फिराऊं।
देह बिना दौड़ो अंदर, पिया कित मिलसी कहां जाऊं।। ८ ।।

ऐसी विरहिणी अपनी आंखों की पलक तक नहीं लगाती। वह दसों दिशाओं में तरसती नजर से देखती है कि पिया कहां मिलेंगे? कहां जाऊं? यह विचारधारा उसके हृदय में दौड़ती रहती है। उसे तन की सुध नहीं रहती है।

इस्क को ए लछन, जो नैनों पलक न ले।
दौड़े फिरे न मिल सके, अंदर नजर पिया में दे।। ९ ।।

इश्क का यह लक्षण है कि विरहिणी अपनी आंखों के पलक भी न झपकाये और न कहीं आये-जाये और न किसी से मिले। उसकी अन्दर की दृष्टि पिया में लगी रहती है।

Nijanand App

नजरों निमख न छूटहीं, तो नाहीं लागत पल।
अंदर तो न्यारा नहीं, पर जाए न दाह बिना मिल।।१०।।

उसकी नजर पिया से नहीं छूटती, इसलिए पलक नहीं लगाती। विरहिणी को प्रीतम अन्दर से मिले होते हैं, परन्तु जब तक बाहर से न मिलें तब तक विरह की अग्नि बुझती नहीं।

जो दुख तुमहीं विछुरे, मोहे लाग्यो जो तासों प्यार।
एता सुख तेरे विरह में, तो कौन सुख होसी विहार।।११।।

हे धनी! आपके बिछुड़ने से मुझे विरह का जो दुःख हुआ है, वह मुझे बहुत प्यारा हो गया है, क्योंकि आप मेरे चित्त से हटते ही नहीं। इतना सुख जब आपके विरह में है तो आपके मिलन में कितना सुख होगा।

।। प्रकरण ।। ७ ।। चौपाई ।। १४८ ।।

राग श्री धना काफी

सनमंध मूल को, मैं तो पाव पल छोड़्यो न जाए।
अब छल बल मोहे कहा करे, मोह आद थें दियो उड़ाए।।१।।

हे धनी! मेरा और आपका सम्बन्ध परमधाम का है। ऐसा जानकर अब चौथाई पल के लिए भी छोड़ा नहीं जाता। आपने मेरी अज्ञानता की नींद (मोह) आदि (जड़) से उड़ा दी है। अब यह माया की ताकत मेरा कुछ नहीं बिगाड़ सकती।

दरद जो तेरे दुलहा, कर डारयो सब नास।
पर आस न छोड़े जीव को, करने तुम विलास।।२।।

हे मेरे धनी! आपके इस विरह के दर्द ने मेरा सब कुछ नष्ट कर दिया, परन्तु मेरे जीव को आपके साथ मिलकर आनन्द करने की आशा लगी है।

विरहा न छोड़े जीव को, जीव आस भी पिउ मिलन।
पिया संग इन अंगे करूं, तो मैं सुहागिन।।३।।

यह आपके बिछुड़ने का विरह मेरे जीव को छोड़ नहीं रहा और जीव को भी आपसे मिलने की आशा लगी है। मैं इस तन से आपसे मिलूं तभी मैं सुहागिनी कहलाऊंगी।

लागी लड़ाई आप में, एक विरहा दूजी आस।
ए भी विरहा पिउ का, आस भी पिउ विलास।।४।।

मेरे अन्दर एक आपके बिछुड़ने का विरह और दूसरा आपसे मिलने की आशा—इन दोनों की आपस में लड़ाई होने लगी है। विरह भी आपका है और आपसे मिलकर विलास की चाह भी आपकी है।

मैं कहावत हों सुहागनी, जो विरहा न देऊं जिउ।
तो पीछे वतन जाए के, क्यों देखाऊं मुख पिउ।।५।।

मैं सुहागिनी अंगना कहलाती हूं। आपके वियोग में यदि न तड़पूं तो पीछे घर में जाकर मुख कैसे दिखाऊंगी?

Nijanand App

नजरों निमख न छूटहीं, तो नाहीं लागत पल।
अंदर तो न्यारा नहीं, पर जाए न दाह बिना मिल।। १० ।।

उसकी नजर पिया से नहीं छूटती, इसलिए पलक नहीं लगाती। विरहिणी को प्रीतम अन्दर से मिले होते हैं, परन्तु जब तक बाहर से न मिलें तब तक विरह की अग्नि बुझती नहीं।

जो दुख तुमहीं विछुरे, मोहे लाग्यो जो तासों प्यार।
एता सुख तेरे विरह में, तो कौन सुख होसी विहार।। ११ ।।

हे धनी! आपके बिछुड़ने से मुझे विरह का जो दुःख हुआ है, वह मुझे बहुत प्यारा हो गया है, क्योंकि आप मेरे चित्त से हटते ही नहीं। इतना सुख जब आपके विरह में है तो आपके मिलन में कितना सुख होगा।

।। प्रकरण ।। ७ ।। चौपाई ।। १४८ ।।

राग श्री धना काफी

सनमंध मूल को, मैं तो पाव पल छोड़्यो न जाए।
अब छल बल मोहे कहा करे, मोह आद थें दियो उड़ाए।। १ ।।

हे धनी! मेरा और आपका सम्बन्ध परमधाम का है। ऐसा जानकर अब चौथाई पल के लिए भी छोड़ा नहीं जाता। आपने मेरी अज्ञानता की नींद (मोह) आदि (जड़) से उड़ा दी है। अब यह माया की ताकत मेरा कुछ नहीं बिगाड़ सकती।

दरद जो तेरे दुलहा, कर डारयो सब नास।
पर आस न छोड़े जीव को, करने तुम विलास।। २ ।।

हे मेरे धनी! आपके इस विरह के दर्द ने मेरा सब कुछ नष्ट कर दिया, परन्तु मेरे जीव को आपके साथ मिलकर आनन्द करने की आशा लगी है।

विरहा न छोड़े जीव को, जीव आस भी पिउ मिलन।
पिया संग इन अंगे करूं, तो मैं सुहागिन।। ३ ।।

यह आपके बिछुड़ने का विरह मेरे जीव को छोड़ नहीं रहा और जीव को भी आपसे मिलने की आशा लगी है। मैं इस तन से आपसे मिलूं तभी मैं सुहागिनी कहलाऊंगी।

लागी लड़ाई आप में, एक विरहा दूजी आस।
ए भी विरहा पिउ का, आस भी पिउ विलास।। ४ ।।

मेरे अन्दर एक आपके बिछुड़ने का विरह और दूसरा आपसे मिलने की आशा—इन दोनों की आपस में लड़ाई होने लगी है। विरह भी आपका है और आपसे मिलकर विलास की चाह भी आपकी है।

मैं कहावत हों सुहागनी, जो विरहा न देऊं जिउ।
तो पीछे वतन जाए के, क्यों देखाऊं मुख पिउ।। ५ ।।

मैं सुहागिनी अंगना कहलाती हूं। आपके वियोग में यदि न तड़पूं तो पीछे घर में जाकर मुख कैसे दिखाऊंगी?

Nijanand App

जो जीव देते सकुचों, तो क्यों रहे मेरा धरम।
विरहा आगे कहा जीव, ए केहेत लगत मोहे सरम।।६ ।।

ऐसी हालत में यदि मैं अपने जीव को कुर्बान करने में संकोच करूं तो मेरा धर्म कैसे रहेगा? विरह की आग के सामने जीव हैं ही क्या? ऐसा कहने में मुझे शर्म लगती है।

माया काया जीवसों, भान भून टूक कर।
विरहा तेरा जिन दिसा, मैं वारूं तिन दिस पर।।७ ।।

माया, शरीर और जीव के टुकड़े कर तथा भूनकर आपकी उस दिशा पर कुर्बान कर दूं, जिस दिशा से मुझे आपका विरह मिला है।

जब आह सूकी अंग में, स्वांस भी छोड्यो संग।
तब तुम परदा टालके, दियो मोहे अपनो अंग।।८ ।।

जब मेरे अंग से 'हाय धनी' की रट खत्म हो गई और सांस ने भी साथ छोड़ दिया, तब आपने मेरे शरीर का तामस हटाकर (शरीर का कष्ट हटाकर) मुझे स्वीकार किया और सनन्ध वाणी दी।

मैं तो अपना दे रही, पर तुम ही राख्यो जिउ।
बल दे आप खड़ी करी, कारज अपने पिउ।।९ ।।

मैंने तो निराशा में ही अपने आप को खत्म कर दिया था। आपने ही मुझे जीवित रखा। आपने अपने काम के लिए (ब्रह्मसृष्टि को घर ले जाने का काम) ही अपनी ताकत देकर फिर से खड़ा कर दिया।

जीवरा भी मेरा रख्या, तुम कारज भी कारन।
आस भी पूरी सुहागनी, और व्रध भी राख्यो विरहिन।।१० ।।

हे धनी! आपने अपने काम के लिए मुझे जीवित किया। मेरी चाहना भी पूरी की और मेरी लाज भी रखी।

तुम आए सब आइया, दुख गया सब दूर।
कहे महामती ए सुख क्यों कहूं, जो उदया मूल अंकूर।।११ ।।

हे धनी! अब आप आ गये तो मेरे विरह के सब दुःख भूल गए। सब कुछ मिल गया। इन सुखों का वर्णन कैसे करूं? मुझे तो ऐसा लगा जैसे परमधाम में आपके साथ रहते थे वैसे ही यहां हूं।

॥ प्रकरण ॥ ८ ॥ चौपाई ॥ १५९ ॥

विरह को प्रकास–राग आसावरी

एह बात मैं तो कहूं, जो कहने की होए।
पर ए खसमें रीझ के, दया करी अति मोहे।।१ ।।

हे धनी! मुझे इतनी खुशी हो गई है कि मैं कह भी नहीं सकती। यह तो मुझे मेरे पिया श्री राजजी महाराज ने खुश होकर मुझ पर दया की है।

सुनियो बानी सुहागनी, दीदार दिया पिउ जब।
अंदर परदा उड़ गया, हुआ उजाला सब।।२ ।।

हे मेरे मोमिनो! मेरी बात को सुनो। मेरी निराश हालत में जब श्री राजजी महाराज ने दर्शन दिया तो अन्दर का परदा (विरहा का परदा) उड़ गया और सब रोशनी हो गई।

Nijanand App

जो जीव देते सकुचों, तो क्यों रहे मेरा धरम।
विरहा आगे कहा जीव, ए केहेत लगत मोहे सरम।। ६ ।।

ऐसी हालत में यदि मैं अपने जीव को कुर्बान करने में संकोच करूं तो मेरा धर्म कैसे रहेगा? विरह की आग के सामने जीव हैं ही क्या? ऐसा कहने में मुझे शर्म लगती है।

माया काया जीवसों, भान भून टूक कर।
विरहा तेरा जिन दिसा, मैं वारूं तिन दिस पर।। ७ ।।

माया, शरीर और जीव के टुकड़े कर तथा भूनकर आपकी उस दिशा पर कुर्बान कर दूं, जिस दिशा से मुझे आपका विरह मिला है।

जब आह सूकी अंग में, स्वांस भी छोड़्यो संग।
तब तुम परदा टालके, दियो मोहे अपनो अंग।। ८ ।।

जब मेरे अंग से 'हाय धनी' की रट खत्म हो गई और सांस ने भी साथ छोड़ दिया, तब आपने मेरे शरीर का तामस हटाकर (शरीर का कष्ट हटाकर) मुझे स्वीकार किया और सनन्ध वाणी दी।

मैं तो अपना दे रही, पर तुम ही राख्यो जिउ।
बल दे आप खड़ी करी, कारज अपने पिउ।। ९ ।।

मैंने तो निराशा में ही अपने आप को खत्म कर दिया था। आपने ही मुझे जीवित रखा। आपने अपने काम के लिए (ब्रह्मसृष्टि को घर ले जाने का काम) ही अपनी ताकत देकर फिर से खड़ा कर दिया।

जीवरा भी मेरा रख्या, तुम कारज भी कारन।
आस भी पूरी सुहागनी, और व्रध भी राख्यो विरहिन।। १० ।।

हे धनी! आपने अपने काम के लिए मुझे जीवित किया। मेरी चाहना भी पूरी की और मेरी लाज भी रखी।

तुम आए सब आइया, दुख गया सब दूर।
कहे महामती ए सुख क्यों कहूं, जो उदया मूल अंकूर।। ११ ।।

हे धनी! अब आप आ गये तो मेरे विरह के सब दुःख भूल गए। सब कुछ मिल गया। इन सुखों का वर्णन कैसे करूं? मुझे तो ऐसा लगा जैसे परमधाम में आपके साथ रहते थे वैसे ही यहां हूं।

॥ प्रकरण ॥ ८ ॥ चौपाई ॥ १५९ ॥

विरह को प्रकास–राग आसावरी

एह बात मैं तो कहूं, जो कहने की होए।
पर ए खसमें रीझ के, दया करी अति मोहे।। १ ।।

हे धनी! मुझे इतनी खुशी हो गई है कि मैं कह भी नहीं सकती। यह तो मुझे मेरे पिया श्री राजजी महाराज ने खुश होकर मुझ पर दया की है।

सुनियो बानी सुहागनी, दीदार दिया पिउ जब।
अंदर परदा उड़ गया, हुआ उजाला सब।। २ ।।

हे मेरे मोमिनो! मेरी बात को सुनो। मेरी निराश हालत में जब श्री राजजी महाराज ने दर्शन दिया तो अन्दर का परदा (विरहा का परदा) उड़ गया और सब रोशनी हो गई।

Nijanand App

पिया जो पार के पार हैं, तिन खुद खोले द्वार।
पार दरवाजे तब देखे, जब खोल देखाया पार।। ३ ।।

पिया जो अक्षर के भी परे अक्षरातीत हैं, उन्होंने खुद मेरे अन्दर बैठकर यह सारा ज्ञान मुझे दिया। पार के परमधाम के दर्शन तब हुए जब उन्होंने स्वयं परमधाम के पट (रास्ते) खोलकर दिखाए।

कर पकर बैठाए के, आवेस दियो मोहे अंग।
ता दिन थें पसरी दया, पल पल चढ़ते रंग।। ४ ।।

श्री राजजी महाराज ने ही मेरे टूटे-फूटे शरीर को आवेश की अपनी शक्ति देकर उठाया। उसी दिन से दिन प्रतिदिन मेहर बरस रही है। पल-पल वाणी उतर रही है।

हुई पेहेचान पिउसों, तब कह्यो महामती नाम।
अब मैं हुई जाहेर, देख्या वतन श्री धाम।। ५ ।।

जब अपने पिया से पूरी पहचान हुई तब उन्होंने मेरा नाम महामति रखा। अपने अखण्ड घर को देखकर महामति के नाम से सबमें जाहिर हो गई।

बात कही सब वतन की, सो निरखे मैं निसान।
प्रकास पूरन दृढ़ हुआ, उड़ गया उनमान।। ६ ।।

श्री प्राणनाथजी ने घर की सब बातें बताईं। घर के सब निशान जाहिर हो गए। मेरी अटकल उड़ गई और सब कुछ स्पष्ट हो गया।

आपा मैं पेहेचानिया, सनमंध हुआ सत।
ए मेहेर कही न जावहीं, सब सुध परी उतपत।। ७ ।।

मैंने अपने आपको पहचाना। अब पता चला कि मैं परब्रह्म की अंगना हूं। इस मेहर का अब मैं कैसे वर्णन करूं? अब शुरू से आखिर तक के सब संशय मिट गए हैं।

मुझे जगाई जुगतसों, सुख दियो अंग आप।
कंठ लगाई कंठसों, या विध कियो मिलाप।। ८ ।।

बड़ी युक्ति से धनी ने मुझे जगाया तथा अपना अंग देकर मुझे सुख दिया। उन्होंने मुझे गले से लगाया और बड़े प्यार से चिपटा लिया।

खासी जान खेड़ी जिमी, जल सींचिया खसम।
बोया बीज वतन का, सो ऊग्या वाही रसम।। ९ ।।

अब मेरे हृदय रूपी जमीन को अच्छी (खेडी) समझकर जोता तथा पिया ने प्रेम के जल में सींचकर वतन के ज्ञान का बीज (सनन्ध) बोया। उसने विशाल वाणी का रूप धारण कर लिया।

बीज आतम संग निज बुध के, सो ले उठिया अंकूर।
या जुबां इन अंकूर को, क्यों कर कहूं सो नूर।। १० ।।

इस बीज को मेरे हृदय में आत्मा को जागृत बुद्धि का साथ मिला और अंकुर फूटे। अब इस जबान से इसके प्रकाश का वर्णन कैसे करूं?

Nijanand App

नातो ए बात जो गुझ की, सो क्यों होए जाहेर।
सोहागिन प्यारी मुझ को, सो कर ना सकों अंतर।। ११ ।।

अभी तक कुरान के गुझ (गुह्य) रहस्य छिपे हुए थे और जाहिर नहीं हो पा रहे थे, पर मेरे मोमिन मुझे प्यारे हैं, इसलिए मैं उनसे कुछ भी नहीं छिपा सकती।

नेक कहूं या नूर की, कछुक इसारत अब।
पीछे तो जाहेर होएसी, तब दुनी देखसी सब।। १२ ।।

फिर भी इस ज्ञान के प्रकाश की कुछ बातें अब बताती हूं। पीछे तो इस वाणी के जाहिर होने से यह सारी दुनियां को मिल जाएगी।

ए जो विरहा बीतक कही, पिया मिले जिन सूल।
अब फेर कहूं प्रकास थें, जासों पाइए माएने मूल।। १३ ।।

हे मोमिनो! यह मैंने अपने विरह की तथा जैसे श्री प्राणनाथजी मुझे जिस दर्द और कष्ट से मिले हैं, उस हकीकत को कहा है। अब मैं दुबारा अपनी जागृत बुद्धि से बताती हूं जिससे मूल हकीकत के मायने (अर्थ) खुल जाएंगे।

ए विरहा लछन मैं कहे, पर नाहीं विरहा ताए।
या विध विरह उदम की, जो कोई किया चाहे।। १४ ।।

यह तो मैंने विरह के लक्षण बताए हैं, पर तुम्हारे अन्दर अभी विरह नहीं है। यदि तुम में से कोई विरह चाहता है तो उसका यह उद्यम (तरीका, उपाय) है।

विरह सुनते पिउ का, आह ना उड़ गई जिन।
ताए वतन सैयां यों कहें, नाहीं न ए विरहिन।। १५ ।।

प्रीतम के बिछुड़ने की खबर सुनते ही जिस विरहिणी ने अपने जीव को नहीं त्यागा, उन्हें रूहें कहेंगी कि वह विरहिणी नहीं है।

जो होवे आपे विरहनी, सो क्यों कहे विरहा सुध।
सुन विरहा जीव ना रहे, तो विरहिन कहां थें बुध।। १६ ।।

जो स्वयं वियोग से विरहिणी हो जाती है वह किसी के सामने अपना दुःख नहीं बताती, क्योंकि विरह को सुनकर जीव नहीं रहता, तो विरहिणी को बुद्धि कहां से आएगी?

पतंग कहे पतंग को, कहां रह्या तूं सोए।
मैं देख्या है दीपक, चल देखाऊं तोहे।। १७ ।।

यदि एक पतंगा दूसरे पतंगे को सूचना देता है कि तू कहां सोया पड़ा है? मैंने एक दीपक देखा है। चल तुझे भी दिखा दूं।

के तो ओ दीपक नहीं, या तूं पतंग नाहें।
पतंग कहिए तिनको, जो दीपक देख झंपाए।। १८ ।।

दूसरा पतंगा जवाब देता है या तो वह दीपक नहीं है या फिर तू पतंगा नहीं है। पतंगा तो उसी को कहते हैं जो दीपक को देखते ही अपने आप को उसमें झोंक देता है।

Nijanand App

पतंग और पतंग को, जो सुध दीपक दे।
तो होवे हांसी तिन पर, कहे नाहीं पतंग ए।। १९ ।।

एक पतंगा दूसरे पतंगे को यदि सूचना देता है तो उस पर हंसी होती है और सभी कहते हैं कि यह पतंगा ही नहीं है।

दीपक देख पीछा फिरे, साबित राखे अंग।
आए देवे सुध और को, सो क्यों कहिए पतंग।। २० ।।

दीपक को देखकर यदि वह पतंगा पीछे लौटता है, अपने आप को कुर्बान नहीं करता है और दूसरों को खबर देता है, तो उसे पतंगा नहीं कहा जाता।

जब मैं हुती विरह में, तब क्यों मुख बोल्यो जाए।
पर ए वचन तो तब कहे, जब लई पिया उठाए।। २१ ।।

जब मैं विरह में थी तो बोल भी नहीं सकती थी। पर यह वचन तो मैं तब कह रही हूं जब धनी ने स्वयं उठा लिया है।

ज्यों ए विरहा उपज्या, ए नहीं हमारा धरम।
विरहिन कबहूं ना करे, यों विरहा अनूकरम।। २२ ।।

यह जो तामस विरह मेरे हृदय में उत्पन्न हुआ है, यह मेरा धर्म नहीं था। विरहिणी इस प्रकार के सिलसिले से कभी विरह नहीं करती।

विरहा नहीं ब्रह्मांड में, बिना सोहागिन नार।
सोहागिन आतम पिउ की, वतन पार के पार।। २३ ।।

इस ब्रह्माण्ड में बिना ब्रह्मसृष्टि के और किसी को विरह आता ही नहीं। सुहागिनियां तो श्री प्राणनाथ जी के अंग हैं। उनका घर बेहद के पार से परे है।

अब कहूं नेक अंकूर की, जाए कहिए सोहागिन।
सो विरहिन ब्रह्मांड में, हुती ना एते दिन।। २४ ।।

अब ब्रह्मसृष्टियों की हकीकत कहती हूं। इनको सुहागिनी कहा जाता है। ऐसी ब्रह्म अंगनाएं जो अपने धनी की सुहागिन हैं, पहले कभी ब्रह्माण्ड में आई ही नहीं।

सोई सुहागिन आइयां, खसम की विरहिन।
अंतरगत पिया पकरी, ना तो रहे ना तन।। २५ ।।

संसार में जितनी भी ब्रह्मसृष्टियां हैं वह श्री प्राणनाथजी के मिलने में अपने आप को कुर्बान कर देतीं, परन्तु धाम-धनी ने ही उनको संसार में जीवित रखा है।

ए सुध पिया मुझे दई, अन्दर कियो प्रकास।
तो ए जाहेर होत है, जो गयो तिमर सब नास।। २६ ।।

इसकी सुध मुझे श्री प्राणनाथजी ने दी और इस रहस्य को बताया। तभी अन्धकार का नाश हुआ और यह हकीकत सबको जाहिर हुई।

Nijanand App

प्यारी पिया सोहागनी, सो जुबां कही न जाए।
पर हुआ जो मुझे हुकम, सो कैसे कर ढंपाए।। २७ ।।

श्री प्राणनाथजी को ब्रह्मसृष्टियां बहुत प्यारी हैं। इसे जबान से कहा नहीं जा सकता, पर मुझे हुक्म हुआ है, इसलिए इसे कैसे छिपाऊं।

अनेक करहीं बंदगी, अनेक विरहा लेत।
पर ए सुख तिन सुपने नहीं, जो हमको जगाए के देत।। २८ ।।

यहां के लोग कई तरह से बन्दगी करते हैं और बहुत लोग विरह भी लेते हैं। इतना करने पर भी जो सुख हमको जगाकर धनी देते हैं वह उनको स्वप्न में भी नहीं मिलता।

छलथें मोहे छुड़ाए के, कछू दियो विरहा संग।
सो भी विरहा छुड़ाइया, देकर अपनों अंग।। २९ ।।

धाम धनी ने सबसे पहले मुझे माया से छुड़ाया, फिर कुछ विरह दिया। फिर स्वयं आकर विराजमान होकर विरह भी छुड़ा दिया।

अंग बुध आवेस देए के, कहे तूं प्यारी मुझ।
देने सुख सबन को, हुकम करत हों तुझ।। ३० ।।

मेरे अन्दर जागृत बुद्धि देकर धनी ने कहा कि तू मुझे बहुत प्यारी है। अब यह सुख सबको दो, ऐसा मैं हुक्म करता हूं।

दुख पावत हैं सोहागनी, सो हम सह्यो न जाए।
हम भी होसी जाहेर, पर तूं सोहागनियां जगाए।। ३१ ।।

मेरी ब्रह्मसृष्टि को यदि दुःख होता है तो मेरे से सहन नहीं होता, इसलिए सुहागिनी अंगनाओं को तू जगा फिर मैं भी जाहिर हो जाऊंगा।

सिर ले आप खड़ी रहो, कहे तूं सब सैयन।
प्रकास होसी तुझ से, दृढ़ कर देखो मन।। ३२ ।।

हे महामति! तू दृढ़ता से मन में विचार कर देख ले कि इस वाणी का फैलाव तुझसे ही होना है— यह ईमान लेकर तू खड़ी हो जा और सुन्दरसाथ को स्पष्ट बताकर पहचान करा।

तोसों न कछू अंतर, तूं है सोहागिन नार।
सत सब्द के माएने, तूं खोलसी पार द्वार।। ३३ ।।

मेरा तुझसे कोई भेद नहीं है और तू तो मेरी सुहागिनी अंगना है, इसलिए सबके सामने तारतम वाणी के रहस्य को बताकर पार के दरवाजे खोल दे।

जो कदी जाहेर न हुई, सो तुझे होसी सुध।
अब थें आद अनाद लों, जाहेर होसी निज बुध।। ३४ ।।

जिसकी आज दिन तक किसी को सुध नहीं थी वह सब जानकारी तुझे दे दी है। अब से अन्त तक जागृत बुद्धि से तुझे सारी जानकारी मिल जाएगी।

Nijanand App

सब ए बातें सूझसी, कहूं अटके नहीं निरधार।
हुकम कारन कारज, पार के पारै पार।। ३५ ।।

अब तुझे पूर्ण ज्ञान हो गया है। अब तू कहीं अटकेगी नहीं। यह श्री राजजी महाराज के हुक्म से कारज कारण हुआ है कि आगे होकर सबको पार के पार का ज्ञान दो।

चौदे तबक एक होएसी, सब हुकम के प्रताप।
ए सोभा होसी तुझे सोहागनी, जिन जुदी जाने आप।। ३६ ।।

तेरे हुक्म से चौदह लोकों का संसार एक परमात्मा का पूजक बन जाएगा। हे महामति! यह शोभा तुझे मिलने वाली है, इसलिए अपने को मुझसे अलग मत समझ।

जो कोई सब्द संसार में, अर्थ न लिए किन कब।
सो सब खातिर सोहागनी, तूं अर्थ करसी अब।। ३७ ।।

संसार में जितने भी धर्म ग्रन्थ हैं उनके भी भेद अभी तक नहीं खुले थे। अब मोमिनों के वास्ते तू सब खोलेगी।

तूं देख दिल विचार के, उड़जासी सब असत।
सारों के सुख कारने, तूं जाहेर हुई महामत।। ३८ ।।

तू मन में विचार करके देख, यह संसार उड़ जाएगा। तू सबको सुख देने के लिए ही, हे महामति! सबके बीच जाहिर हुई है।

पेहेले सुख सोहागनी, पीछे सुख संसार।
एक रस सब होएसी, घर घर सुख अपार।। ३९ ।।

सबसे पहले इस वाणी से घर और धनी की पहचान का सुख ब्रह्मसृष्टि को होगा। पीछे सारे संसार को इसका ज्ञान मिलेगा। सब एक रस हो जाएंगे और घर-घर यह अपार सुख सबको होगा।

ए खेल किया जिन खातिर, सो तूं कहियो सोहागिन।
पेहेले खेल दिखाए के, पीछे मूल वतन।। ४० ।।

यह खेल तुम्हारे लिए बनाया है। इसकी सब मोमिनों (ब्रह्मसृष्टि) को पहचान करा दो। पहले खेल दिखाना है और बाद में अपने घर चलेंगे।

अंतर सैयों से जिन करे, जो सैयां हैं इन घर।
पीछे चौदे तबक में, जाहिर होसी आखिर।। ४१ ।।

हे महामति! तू रूहों से अन्तर मत करना। यह आत्माएं अपने ही घर की हैं। पीछे तो महाप्रलय के समय यह चौदह लोकों में जाहिर होना ही है।

तें कहे वचन मुख थें, होसी तिनथें प्रकास।
असत उड़सी तूल ज्यों, जासी तिमर सब नास।। ४२ ।।

हे महामति! जो वाणी तूने अपने मुख से कही है, उसका बड़ा भारी प्रकाश होगा। इससे सारे झूठ का ब्रह्माण्ड आक के तूल (रूई) के समान उड़ जाएगा और सारा कुफ्र मिट जाएगा।

Nijanand App

तूं लीजे नीके माएने, तेरे मुख के बोल।
जो साख देवे तुझे आतमा, तो लीजे सिर कौल।।४३।।

हे महामति! जो वाणी तेरे मुख से कही जाए उसके अच्छी तरह से मायने लेना। अगर तेरी आत्मा तुझे साक्षी दे तो अपने किए वायदे पूरे करना।

खसम खड़ा है अंतर, जेती सोहागिन।
तूं पूछ देख दिल अपना, कर कारज दृढ़ मन।।४४।।

धनी अभी मेरे अन्दर विराजमान हैं, पर ब्रह्मसृष्टि से अन्तर है। इस बात की हकीकत अपने दिल से पूछ और दृढ़ता के साथ सबको पहचान कराने का काम कर।

आप खसम अजूं गोप है, आगे होत प्रकास।
उदया सूर छिपे नहीं, गयो तिमर सब नास।।४५।।

स्वयं धनी अभी गुप्त हैं। यह आगे जाहिर हो जाएंगे। सूर्य जब उदय होता है तो कभी छिपता नहीं और सब अज्ञानता दूर हो जाती है, अर्थात् यह तो अखण्ड धाम के धनी का ज्ञान रूपी सूर्य है। कैसे छिपेगा। इससे ही सारी अज्ञानता हटेगी।

|| प्रकरण || ९ || चौपाई || २०४ ||

राग श्री

सत असत पटंतरो, जैसे दिन और रात।
सत सूरज सब देखहीं, जब प्रगट भयो प्रभात।।१।।

सत और झूठ का दिन और रात के समान अन्तर है। जब सच्चा ज्ञान मिल जाता है तब समझना चाहिए सवेरा हुआ।

जोलों पिउ परदे मिने, विश्व विगूती तब।
सो परदा अब खोलिया, एक रस होसी अब।।२।।

जब तक प्रीतम की पहचान नहीं थी तभी तक दुनियां उलझी थी। अब अज्ञान मिट गया है, इसलिए दुनियां सब एक रास्ते पर आ जाएगी।

जोलों जाहिर ना हुते, तब इत उपज्या क्रोध।
जब प्रगटे तब मिट गया, सब दुनियां को व्रोध।।३।।

जब तक परब्रह्म की पहचान नहीं थी, तब तक क्रोध और अहंकार था। जैसे ही परब्रह्म जाहिर हुए दुनियां का विरोध मिट गया।

ए प्रकास खसम का, सो कैसे कर ढंपाए।
छल बल वल जो उलटे, सो देवे सब उड़ाए।।४।।

यह धनी के ज्ञान का उजाला कैसे ढंपे। यह दुनियां के छल, बल और टेढ़ाई वाले ज्ञान जो माया की तरफ खींच रहे थे, उन सबको उड़ा देगा।

दुनियां टेढ़ी मूल की, सो पेड़ से निकालूं वल।
पिया प्रकास जो खिन में, सीधा करूं मंडल।।५।।

यह दुनियां मोह तत्व से ही टेढ़ी है, इसलिए इसकी टेढ़ाई मोह तत्व से ही उड़ा दूंगा। धनी का ज्ञान एक पल में सारे ब्रह्माण्ड को सीधा कर देगा।

Nijanand App

तूं लीजे नीके माएने, तेरे मुख के बोल।
जो साख देवे तुझे आतमा, तो लीजे सिर कौल।। ४३ ।।

हे महामति! जो वाणी तेरे मुख से कही जाए उसके अच्छी तरह से मायने लेना। अगर तेरी आत्मा तुझे साक्षी दे तो अपने किए वायदे पूरे करना।

खसम खड़ा है अंतर, जेती सोहागिन।
तूं पूछ देख दिल अपना, कर कारज दृढ़ मन।। ४४ ।।

धनी अभी मेरे अन्दर विराजमान हैं, पर ब्रह्मसृष्टि से अन्तर है। इस बात की हकीकत अपने दिल से पूछ और दृढ़ता के साथ सबको पहचान कराने का काम कर।

आप खसम अजूं गोप है, आगे होत प्रकास।
उदया सूर छिपे नहीं, गयो तिमर सब नास।। ४५ ।।

स्वयं धनी अभी गुप्त हैं। यह आगे जाहिर हो जाएंगे। सूर्य जब उदय होता है तो कभी छिपता नहीं और सब अज्ञानता दूर हो जाती है, अर्थात् यह तो अखण्ड धाम के धनी का ज्ञान रूपी सूर्य है। कैसे छिपेगा। इससे ही सारी अज्ञानता हटेगी।

।। प्रकरण ।। ९ ।। चौपाई ।। २०४ ।।

राग श्री

सत असत पटंतरो, जैसे दिन और रात।
सत सूरज सब देखहीं, जब प्रगट भयो प्रभात।। १ ।।

सत और झूठ का दिन और रात के समान अन्तर है। जब सच्चा ज्ञान मिल जाता है तब समझना चाहिए सवेरा हुआ।

जोलों पिउ परदे मिने, विश्व विगूती तब।
सो परदा अब खोलिया, एक रस होसी अब।। २ ।।

जब तक प्रीतम की पहचान नहीं थी तभी तक दुनियां उलझी थी। अब अज्ञान मिट गया है, इसलिए दुनियां सब एक रास्ते पर आ जाएगी।

जोलों जाहिर ना हुते, तब इत उपज्या क्रोध।
जब प्रगटे तब मिट गया, सब दुनियां को क्रोध।। ३ ।।

जब तक परब्रह्म की पहचान नहीं थी, तब तक क्रोध और अहंकार था। जैसे ही परब्रह्म जाहिर हुए दुनियां का विरोध मिट गया।

ए प्रकास खसम का, सो कैसे कर ढंपाए।
छल बल वल जो उलटे, सो देवे सब उड़ाए।। ४ ।।

यह धनी के ज्ञान का उजाला कैसे ढंपे। यह दुनियां के छल, बल और टेढ़ाई वाले ज्ञान जो माया की तरफ खींच रहे थे, उन सबको उड़ा देगा।

दुनियां टेढ़ी मूल की, सो पेड़ से निकालूं वल।
पिया प्रकास जो खिन में, सीधा करूं मंडल।। ५ ।।

यह दुनियां मोह तत्व से ही टेढ़ी है, इसलिए इसकी टेढ़ाई मोह तत्व से ही उड़ा दूंगा। धनी का ज्ञान एक पल में सारे ब्रह्माण्ड को सीधा कर देगा।

Nijanand App

सत जो ढांप्या ना रहे, उड़ाय दियो अंधेर।
नूर पिया पसरे बिना, क्यों मिटे दुनियां फेर।। ६ ।।

सत का ज्ञान छिपा नहीं रह सकता। इसके सामने दुनियां के सारे झूठे ज्ञान अंधेरे की तरह उड़ जाएंगे। धनी का ज्ञान जब तक नहीं फैलता तब तक दुनियां का जन्म-मरण का चक्कर कैसे मिटेगा?

अब अंधेर कछू ना रह्या, जाहेर हुआ उजास।
तबक चौदे खसम का, प्रगट भया प्रकास।। ७ ।।

अब तारतम वाणी जाहिर हो गई है, इसलिए सब अज्ञानता का अंधेरा समाप्त हो जाएगा। धनी के इस ज्ञान ने चौदह लोकों में उजाला फैलाया।

जोलों तिमर ना उड़े, तोलों सृष्ट न होवे एक।
तिमर तीनों लोक का, उड़ाए दिया उठ देख।। ८ ।।

जब तक यह अज्ञान का अन्धकार नहीं उड़ेगा तब तक संसार के लोग एक रास्ते पर नहीं आऐंगे (एक परब्रह्म के पूजक नहीं बनेंगे)। हे मेरी आत्मा! जागृत बुद्धि से उठके देख, तीनों लोकों का अन्धकार खत्म हो गया।

ए प्रकास है अति बड़ा, सो राखत हों अजूं गोप।
जिन कोई ना सहे सके, ताथें हलके करूं उद्दोत।। ९ ।।

जागृत बुद्धि का ज्ञान बहुत भारी है, इसलिए इसे छिपाकर रखता हूं और धीरे-धीरे जाहिर करता हूं, ताकि सभी लोक इसको ग्रहण कर सकें।

ए जो सब्द खसम के, जिन तुम समझो और।
आद करके अबलों, किन कह्या ना पिया ठौर।। १० ।।

यह जागृत बुद्धि का ज्ञान धनी की वाणी है, इसको और किसी का न समझ लेना। जब से ब्रह्माण्ड बना है तब से आज तक किसी ने भी धनी के घर का ठिकाना नहीं बताया।

ए अकथ केहेनी खसम की, काहूं ना कथियल कोए।
जो किनका कथियल कहूं, तो पिया वतन सुध क्यों होए।। ११ ।।

यह धनी के कहे हुए वचन मैं कहती हूं, जिसे आज तक किसी ने कभी नहीं कहा। अगर दूसरे ज्ञान को कहने लगूंगी तो घर की और धनी की सुध कैसे होगी?

केतेक ठौरों सोहागनी, तिन सब ठौरों उजास।
पर जब इत थें जोत पसरी, तब ओ ले उठसी प्रकास।। १२ ।।

जहां-जहां पर ब्रह्मसृष्टियां हैं उन सब जगह यह ज्ञान है। यहां से ज्ञान का प्रसार होगा, तब सब ब्रह्मसृष्टियां जागृत होकर उठ बैठेंगी।

कोई दिन राखत हों गुझ, सो भी सैयों के सुख काज।
जब सैयां सबे मिलीं, तब रहे ना पकरयो अवाज।। १३ ।।

कुछ दिन तक मैं जागृत ज्ञान को छिपा कर रखती हूं वह भी ब्रह्मसृष्टियों के सुख के लिए (ताकि उनकी इच्छाएं पूरी हो जाएं), जब ब्रह्मसृष्टियां एक साथ मिलेंगी तब जागृत बुद्धि की पुकार को रोका नहीं जा सकेगा।

Nijanand App

क्यों रहे प्रकास पकरयो, एह जोत अति जोर।
जब सब उजाला इत आईया, तब गई रैन भयो भोर।। १४ ।।

तारतम वाणी का उजाला रोका नहीं जा सकेगा। इसकी रोशनी का तेज अधिक है। जब पूर्ण रूप से वाणी का उजाला हो जाएगा तब रात्रि (अज्ञानता का अन्धकार) मिटकर प्रभात हो जाएगा।

मैं अबला अरधांग हों, पिउ की प्यारी नार।
सब जगाऊं सोहागनी, तो मुझे होए करार।। १५ ।।

महामति कहती हैं कि मैं अपने पिया की अबला प्यारी अर्धांगिनी हूं। मैं जब अपने सुन्दरसाथ को जगा लूंगी तभी मुझे आराम मिलेगा।

सैयों को वतन देखावने, उलसत मेरे अंग।
करने बात खसम की, मावत नहीं उमंग।। १६ ।।

सुन्दरसाथ को परमधाम की पहचान कराने के लिए मेरे मन में बहुत उमंग है और उनको धनी की बातें बताने की भी बड़ी चाहना है।

नए नए रंग सोहागनी, आवत हैं सिरदार।
खेल जो होसी जागनी, नाहीं इन सुख को पार।। १७ ।।

अब घर और धनी की पहचान लेकर सिरदार ब्रह्मसृष्टि तरह-तरह के आनन्द में विभोर होकर आएगी और तब जागृत होकर घर का सुख मिलेगा। वह इतना अधिक होगा जिसका शुमार नहीं होगा।

जो पिउ प्यारी आवत, ताको गुझ राखों उजास।
बाट देखों और सैयन की, सब मिल होसी विलास।। १८ ।।

धनीजी की जो भी प्यारी ब्रह्मसृष्टि आएगी, उसको यह धनी का छिपा ज्ञान समझाऊंगी। दूसरी ब्रह्मसृष्टि के आने का रास्ता देखूंगी। सब एक साथ मिलकर आनन्द करेंगे।

ए उजास इन भांत का, जो कबूं निकसी किरन।
तो पसरसी एक पल में, चारों तरफों सब धरन।। १९ ।।

यह ज्ञान का उजाला इस तरह का है कि इसकी एक छोटी-सी किरण भी बाहर निकली तो एक पल में चौदह लोकों में फैल जाएगी।

बात बड़ी इन खसम की, सो क्यों कर ढापूं अब।
सुख लेने को या समें, पीछे दुनियां मिलसी सब।। २० ।।

मेरे धनी की साहिबी बहुत बड़ी है, उसे कैसे छिपाऊं? सुख लेने का समय तो अभी है। पीछे तो सारी दुनियां आ जाएगी।

ए प्रकास जो पिउ का, टाले अंदर का फेर।
याही सब्द के सोर से, उड़ जासी सब अंधेर।। २१ ।।

धनी की यह तारतम वाणी अन्दर के सारे संशय मिटा देती है। इस वाणी के तेज से (प्रकाश से) सारी दुनियां का अंधेरा मिट जाएगा।

Nijanand App

और बेर अब कछू नहीं, गयो तिमर सब नास।
होसी सब में आनन्द, चौदे तबक प्रकास।। २२ ।।

अब और कोई देरी नहीं है, अन्धकार तो मिट गया है। चौदह लोकों में यह ज्ञान फैल जाएगा तो सब की अज्ञानता हट जाएगी और सबको आनन्द का सुख मिलेगा।

।। प्रकरण ।। १० ।। चौपाई ।। २२६ ।।

सोहागनियों के लछन

पार वतन जो सोहागनी, ताकी नेक कहूं पेहेचान।
जो कदी भूली वतन, तो भी नजर तहां निदान।। १ ।।

अक्षर के पार रहने वाली जो ब्रह्मसृष्टियां हैं (वह खेल देखने यहां आई हैं), उनकी थोड़ी सी पहचान कराती हूं। संसार में आकर भले वह अपने घर परमधाम को भूल गई हैं फिर भी उनकी सुरता परमधाम में ही रहती है।

आसिक प्यारी पिउ की, कोई प्रेम कहो विरहिन।
ताए कोई दरदन कहो, ए लछन सोहागिन।। २ ।।

यह अपने पिया की प्यारी विरहिणी हैं। इनको ही केवल उस परब्रह्म प्रीतम से मिलने की तड़प है। इनसे ही सुहागिन की पहचान होती है।

रूह खसम की क्यों रहे, आप अपने अंग बिन।
पर पकरी पिया ने अंतर, नातो रहे न तन।। ३ ।।

परब्रह्म की यह अंगनाएं अपने धनी के बिना कैसे रह सकती हैं? यह उनके अंग हैं। धनी ने ही अन्दर से अपनी शक्ति से ही यहां रोक रखा है। नहीं तो इनकी पहचान होने के बाद अपने तनों को तुरन्त छोड़ देतीं।

ऊपर काहूं न देखावहीं, जो दम न ले सके खिन।
सो प्यारी जाने या पिया, या विध अनेक लछन।। ४ ।।

ऐसी व्याकुल ब्रह्मसृष्टियां ऊपर का दिखावा नहीं करतीं। एक पल भी विरह सहन नहीं कर सकतीं। इनके विरह को धनी जानते हैं या वह जानती हैं। इस तरह से ब्रह्मसृष्टियों की पहचान के कई लक्षण हैं।

आकीन न छूटे सोहागनी, जो परे अनेक विघन।
प्यारी पिउ के कारने, जीव को न करे जतन।। ५ ।।

कितने भी कष्ट क्यों न आएं सुहागिनियों का यकीन नहीं छूट सकता। वह अपने पिया के वास्ते अपने जीव तक की भी कुर्बानी करने में पीछे नहीं हटतीं।

रेहेवे निरगुन होए के, और आहार भी निरगुन।
साफ दिल सोहागनी, कबहूं न दुखावे किन।। ६ ।।

इनका पहनावा और खाना-पीना साधारण होता है। इनके दिल निर्मल होते हैं। यह कभी भी किसी को दुखाती नहीं हैं।

ओ खोजे अपने आप को, और खोजे अपनो घर।
और खोजे अपने खसम को, और खोजे दिन आखिर।। ७ ।।

यह अपने आप की, अपने घर की और अपने प्रीतम की और आखिर के दिन की खोज में तब तक लगी रहती हैं जब तक उनको प्राप्त नहीं कर लेतीं।

Nijanand App

और बेर अब कछू नहीं, गयो तिमर सब नास।
होसी सब में आनन्द, चौदे तबक प्रकास।। २२ ।।

अब और कोई देरी नहीं है, अन्धकार तो मिट गया है। चौदह लोकों में यह ज्ञान फैल जाएगा तो सब की अज्ञानता हट जाएगी और सबको आनन्द का सुख मिलेगा।

।। प्रकरण ।। १० ।। चौपाई ।। २२६ ।।

सोहागनियों के लछन

पार वतन जो सोहागनी, ताकी नेक कहूं पेहेचान।
जो कदी भूली वतन, तो भी नजर तहां निदान।। १ ।।

अक्षर के पार रहने वाली जो ब्रह्मसृष्टियां हैं (वह खेल देखने यहां आई हैं), उनकी थोड़ी सी पहचान कराती हूं। संसार में आकर भले वह अपने घर परमधाम को भूल गई हैं फिर भी उनकी सुरता परमधाम में ही रहती है।

आसिक प्यारी पिउ की, कोई प्रेम कहो विरहिन।
ताए कोई दरदन कहो, ए लछन सोहागिन।। २ ।।

यह अपने पिया की प्यारी विरहिणी हैं। इनको ही केवल उस परब्रह्म प्रीतम से मिलने की तड़प है। इनसे ही सुहागिन की पहचान होती है।

रूह खसम की क्यों रहे, आप अपने अंग बिन।
पर पकरी पिया ने अंतर, नातो रहे न तन।। ३ ।।

परब्रह्म की यह अंगनाएं अपने धनी के बिना कैसे रह सकती हैं? यह उनके अंग हैं। धनी ने ही अन्दर से अपनी शक्ति से ही यहां रोक रखा है। नहीं तो इनकी पहचान होने के बाद अपने तनों को तुरन्त छोड़ देतीं।

ऊपर काहूं न देखावहीं, जो दम न ले सके खिन।
सो प्यारी जाने या पिया, या विध अनेक लछन।। ४ ।।

ऐसी व्याकुल ब्रह्मसृष्टियां ऊपर का दिखावा नहीं करतीं। एक पल भी विरह सहन नहीं कर सकतीं। इनके विरह को धनी जानते हैं या वह जानती हैं। इस तरह से ब्रह्मसृष्टियों की पहचान के कई लक्षण हैं।

आकीन न छूटे सोहागनी, जो परे अनेक विघन।
प्यारी पिउ के कारने, जीव को न करे जतन।। ५ ।।

कितने भी कष्ट क्यों न आएं सुहागिनियों का यकीन नहीं छूट सकता। वह अपने पिया के वास्ते अपने जीव तक की भी कुर्बानी करने में पीछे नहीं हटतीं।

रेहेवे निरगुन होए के, और आहार भी निरगुन।
साफ दिल सोहागनी, कबहूं न दुखावे किन।। ६ ।।

इनका पहनावा और खाना-पीना साधारण होता है। इनके दिल निर्मल होते हैं। यह कभी भी किसी को दुखाती नहीं हैं।

ओ खोजे अपने आप को, और खोजे अपनो घर।
और खोजे अपने खसम को, और खोजे दिन आखिर।। ७ ।।

यह अपने आप की, अपने घर की और अपने प्रीतम की और आखिर के दिन की खोज में तब तक लगी रहती हैं जब तक उनको प्राप्त नहीं कर लेतीं।

Nijanand App

खोज सोहागिन ना थके, जोलों पार के पारै पार।
नित खोजे चरनी चढ़े, नए नए करे विचार।। ८ ।।

सुहागिनियां क्षर के पार अक्षर और अक्षर के पार परब्रह्म के धाम की खोज में सदा लगी रहती हैं और थकती नहीं हैं। नित्य नए-नए विचारों से खोज करती हैं और आगे बढ़ती हैं।

खोज खोज और खोजहीं, आद के आद अनाद।
पल पल सब्द प्रकास हीं, श्रवणों एही स्वाद।। ९ ।।

सुहागिनियां, आदि नारायण तथा उनके बनाने वाले अक्षरब्रह्म और उससे आगे परब्रह्म को खोजती ही रही हैं। उनको धर्म ग्रन्थों के शब्दों से खोज करती हैं और उनको खोज के ज्ञान के बिना कुछ और सुनना अच्छा ही नहीं लगता।

सोहागिन तोलों खोज हीं, जोलों पाइए पिउ वतन।
पिउ वतन पाए बिना, विरहा न जाए निसदिन।। १० ।।

सुहागिनियां तब तक खोज में लगी रहती हैं जब तक घर और प्रीतम मिल नहीं जाते। प्रीतम और घर (परमधाम) पाए बिना उनका विरह नहीं हटता।

ओतो आगे अंदर उजली, खिन खिन होत उजास।
देह भरोसा ना करे, पिया मिलन की आस।। ११ ।।

वह तो अन्दर से निर्मल होती हैं। पल-पल उनको और जानकारी मिलती है, पल-पल पिया से मिलने की आशा में वह अपने तन की भी चिन्ता नहीं करतीं।

विचार विचार विचारहीं, बेधे सकल संधान।
रोम रोम ताए भेदहीं, सत सब्द के बान।। १२ ।।

धर्म ग्रन्थों में जो सत परब्रह्म की पहचान लिखी है, वह सुनकर उस पर बार-बार विचार करती हैं और यह शब्द बाण की तरह उनके अंगों को छेदते हैं।

पार वतन के सब्द, अंगमें जो निकसे फूट।
गलित गात सब भीगल, पिया सब्दें होए टूक टूक।। १३ ।।

अक्षर के पार घर के शब्दों से उनके अंगों में उल्लास भर जाता है और पिया की वाणी सुनकर गलित गात होकर कुर्बानी के लिए तैयार रहती हैं।

खिन खेले खिन में हंसे, खिन में गावे गीत।
खिन रोवे सुध ना रहे, ए सोहागिन की रीत।। १४ ।।

वह पिया के विरह में बावरी होकर पल में खेलती हैं, पल में हंसती हैं और पल में गीत गाती हैं। दूसरे पल ऐसा रोती हैं कि उनको सुध ही नहीं रहती। यह सुहागिनियों के लक्षण हैं।

पिउ बातें खेलें हंसे, गीत पिया के गाए।
रोवें उरझे पिउ की, बातनसों मुरछाए।। १५ ।।

पिया की बातें सुनकर खेलती हैं, हंसती है और धनी के गीत गाती हैं। पिया की याद में ही वह रोती हैं, बिलखती हैं और उनकी बातें सुनकर बेहोश रहती हैं।

Nijanand App

सोहागिन विरहा ना सहे, जब जाहेर हुए पिउ।
सोहागिन अंग जो पिउ की, पिउ सोहागिन अंग जिउ।। १६ ।।

प्रीतम की पहचान होने पर वह पिया का विरह सहन नहीं कर सकतीं क्योंकि सुहागिनियां अपने पिया के अंग हैं और पिया ही सुहागिन का जीवन हैं।

जोलों पिउ सुध ना हुती, सोहागिन अंग में पिउ।
जब पिया जाहेर हुए, तब ले खड़ी अंग जिउ।। १७ ।।

जब तक पिया की खबर नहीं थी, तब तक पिया सुहागिन के अन्दर ही थे। जब अपने प्राणनाथ की पहचान हो गई तो अपने प्रीतम से मिलने के लिए खड़ी हो गईं।

जो होए सैयां सोहागनी, सो निरखो अपने निसान।
वचन कहे मैं जाहेर, सोहागनियों पेहेचान।। १८ ।।

अब जो कोई पिया की विरहिणी हो वह अपने आपकी पहचान करे। मैंने अपने स्पष्ट शब्दों में सुहागिनियों की पहचान बता दी है।

बोहोत निसानी और हैं, प्रेम सोहागिन गुझ।
जब सैयां जाहिर हुई, तब होसी सबों सुझ।। १९ ।।

अभी सुहागिनियों की पहचान की और भी बहुत बातें हैं। वह अपने प्रेम को छिपाकर रखती हैं। जब सब ब्रह्मसृष्टियां जाहिर हो जाएंगी तो उनको भी एक-दूसरे की पहचान हो जाएगी।

तुम हो सैयां सोहागनी, ए समझ लीजो दिल बूझ।
जब सैयां भेली भई, तब होसी बड़ा गूझ।। २० ।।

हे ब्रह्मसृष्टियो! तुम ही सुहागिनियां हो, यह दिल में पक्का समझ लेना। जब सब सुन्दरसाथ इकट्ठे होंगे तब यह सब रहस्य जाहिर होंगे।

ए सब्द जो कहती हों, सो कारन सब सैयन।
सोहागिन ढांपी ना रहे, सुनते एह वचन।। २१ ।।

मैंने यह जो कुछ कहा है सब ब्रह्मसृष्टि के लिए ही कहा है। यह वचन सुनकर ब्रह्मसृष्टि छिपी नहीं रहेगी।

ए सब्द सुन सोहागनी, रहे ना सके एक पल।
तामें मूल अकूंर को, रहे ना पकड़्यो बल।। २२ ।।

सुहागिनियां इन वचनों को सुनकर एक पल भी माया में नहीं रह सकतीं, क्योंकि इनकी परात्म परमधाम में है। आत्मा उनके इन तनों में है। अतः धनी से मिलने की तड़प को रोका नहीं जा सकता।

जब खसम की सुध सुनी, तब रहे ना सोहागिन।
ख्वाबी दम भी ना रहे, तो क्यों रहे सैयां चेतन।। २३ ।।

प्रीतम की सुध होने पर सुहागिन रह नहीं सकती। जब संसार के सपने के जीव नहीं रह सकते तो सदा अखण्ड रहने वाली ब्रह्मसृष्टियां कैसे रह सकती हैं?

मैं तुमको चेतन करूं, एही कसौटी तुम।
या विध सब सैयन का, तसीहा लेवें खसम।। २४ ।।

मैं तुमको सावधान कर रही हूं कि यही तुम्हारी परख भी है। धनी भी खेल में अपनी आत्माओं की परीक्षा ले रहे हैं।

Nijanand App

जो हुकम सिर लेय के, उठी ना अंग मरोर।
पिया सैयां सब देखहीं, तुम इस्क का जोर।। २५ ।।

जो धनी के हुक्म को सिर चढ़ाकर और आलस्य को एक किनारे फेंककर नहीं उठी तो धनी और दूसरे सुन्दरसाथ उसके इश्क पर हंसेंगे।

जो सुन के दौड़ी नहीं, तो हांसी है तिन पर।
जैसा इस्क जिन पे, सो अब होसी जाहिर।। २६ ।।

जो इन वचनों को भी सुनकर नहीं दौड़ी तो उस पर हंसी होगी। अब किस में धनी का कितना इश्क है, यह जाहिर हो जाएगा।

जो इस्क ले मिलसी, सो लेसी सुख अपार।
दरद बिना दुख होएसी, सो जानों निरधार।। २७ ।।

जो इस समय धनी के इश्क को लेकर परस्पर (इकट्ठी होंगी) मिलेंगी उन्हें अपार सुख होगा, परन्तु यह निश्चित है कि उनको शारीरिक कष्ट के बिना आत्मा में पिया से मिलने की तड़प का बहुत दुःख होगा।

जो किने गफलत करी, जागी नहीं दिल दे।
सो इत लोक अलोक का, कछू न लाहा ले।। २८ ।।

ऐसे अवसर पर भी जिसने भूल की और एकाग्रचित्त होकर नहीं जागी, उसे संसार में और परमधाम में कहीं भी लाभ नहीं मिलेगा।

लाहा तो ना लेवहीं, पर सामी हांसी होए।
अब ए हांसी सोहागनी, जिन कराओ कोए।। २९ ।।

लाभ तो मिलेगा नहीं ऊपर से हंसी और होगी, इसलिए हे सुहागिन! अपने ऊपर हंसी मत करवाओ।

जिन उपजे सैयन को, इन हांसी का भी दुख।
ए दुख बुरा सोहागनी, जो याद आवे मिने सुख।। ३० ।।

अपनी ब्रह्मसृष्टियों को इस शर्मिंदा करने वाली हंसी का भी दुःख न हो, इसलिए सावधान करती हूं, क्योंकि अखण्ड सुख में यह शर्मिंदा करने वाली हंसी दुःख देगी।

ए दुख तो नेहेचे बुरा, मेरी सैयोंपे सह्यो न जाए।
जो कदी हांसी ना करे, पर जिन हिरदे चढ़ आए।। ३१ ।।

इस शर्मिंदा करने वाली हंसी का दुःख निश्चित ही बुरा है जो मेरी ब्रह्मसृष्टियों से सहन नहीं होगा। यदि कोई जाहिरी हंसी न भी करे और हृदय में उसकी याद ही आ गई तो दुःख होगा। मैं यह भी नहीं चाहती कि हमारे सुन्दरसाथ को ऐसा भी दुःख देखना पड़े।

जिन जुबां मैं दुख कहूं, सोए करूं सत टूक।
पर ए दुख जिन तुमें लागहीं, तो मैं करत हों कूक।। ३२ ।।

जिस जबान से मैं सुन्दरसाथ के दुःख की बात करती हूं उस जबान के सौ टुकड़े कर दूं, इसलिए पुकार कर रही हूं कि तुम्हें ऐसा दुःख कभी भी न हो।

Nijanand App

जो दुख मेरी सैयन को, तब सुख कैसा मोहे।
हम तुम एक वतन के, अपनी रूह नहीं दोए।। ३३ ।।

यदि मेरे सुन्दरसाथ को किसी प्रकार का भी दुःख होता है तो मुझे कैसे सुख हो सकता है, क्योंकि हम सभी एक घर के हैं तथा एक श्यामाजी के अंग हैं।

।। प्रकरण ।। ११ ।। चौपाई ।। २५९ ।।

भी कहूं मेरी सैयन को, जो हैं मूल अंकूर।
सो निज वतनी सोहागनी, पिया अंग निज नूर।। १ ।।

मैं अपने सुन्दरसाथ को जो परमधाम के निसबती (सम्बन्धी) हैं और मेरे घर की सुहागिनियां हैं, हम एक धनी की अंगना हैं, इसलिए और भी कहती हूं।

पार पुरुख पिया एक है, दूसरा नाहीं कोए।
और नार सब माया, यामें भी विध दोए।। २ ।।

अक्षर के पार पुरुष तो केवल हमारे धनी ही हैं और दूसरा पुरुष तो कोई है ही नहीं। यहां पर तो सारा माया का ब्रह्माण्ड है। उसमें भी दो तरह की सृष्टियां हैं।

जो रूह असलू ईश्वरी, दूजी रूह सब जहान।
पर रूह न्यारी सोहागनी, सो आगे कहूंगी पेहेचान।। ३ ।।

एक तो ईश्वरी सृष्टि की आत्माएं हैं और दूसरी संसार सब जीव सृष्टि का है। इन दोनों से ब्रह्मसृष्टि अलग है। इनकी पहचान आगे कहती हूं।

सैयां सुख निज वतनी, ईश्वरी को सुख और।
दुनी भी सुख होसी सदा, आगे कहूंगी तीनों ठौर।। ४ ।।

ब्रह्मसृष्टि के यहां आने पर घर का सुख है। ईश्वरी सृष्टि को और दूसरे तरीके का सुख है। दुनियां की भी अखण्ड मुक्ति होगी। आगे तीनों के ठिकाने बताऊंगी।

ए लछन सैयां अंकूरी, जो होसी इन घर।
ए वचन वतनी सुनके, आवत हैं तत्पर।। ५ ।।

जो परमधाम की ब्रह्मसृष्टि होगी उनके लक्षण इस तरह से होंगे कि वह अपने घर की बात सुनते ही माया को छोड़कर पिया के चरणों में आ जाएगी।

अटक रह्या साथ आधा, जिनो खेल देखन का प्यार।
ए किया मूल इन खातिर, जो हैं तामसियां नार।। ६ ।।

हमारे आधे सुन्दरसाथ यहां तामसी स्वभाव के हैं। इनको खेल देखने की इच्छा बाकी थी। यह ब्रह्माण्ड उनके लिए ही बनाया गया है।

भूल गईयां खेल में, जो सैयां हैं समरथ।
प्रकास पिया का मुझ पे, कहे समझाऊं अर्थ।। ७ ।।

ऐसे समर्थ मोमिन खेल में आकर भूल गए हैं। श्री प्राणनाथजी का ज्ञान मेरे पास है। इसे समझाकर कहूंगी।

Nijanand App

जो दुख मेरी सैयन को, तब सुख कैसा मोहे।
हम तुम एक वतन के, अपनी रूह नहीं दोए।। ३३ ।।

यदि मेरे सुन्दरसाथ को किसी प्रकार का भी दुःख होता है तो मुझे कैसे सुख हो सकता है, क्योंकि हम सभी एक घर के हैं तथा एक श्यामाजी के अंग हैं।

।। प्रकरण ।। ११ ।। चौपाई ।। २५९ ।।

भी कहूं मेरी सैयन को, जो हैं मूल अंकूर।
सो निज वतनी सोहागनी, पिया अंग निज नूर।। १ ।।

मैं अपने सुन्दरसाथ को जो परमधाम के निसबती (सम्बन्धी) हैं और मेरे घर की सुहागिनियां हैं, हम एक धनी की अंगना हैं, इसलिए और भी कहती हूं।

पार पुरुख पिया एक है, दूसरा नाहीं कोए।
और नार सब माया, यामें भी विध दोए।। २ ।।

अक्षर के पार पुरुष तो केवल हमारे धनी ही हैं और दूसरा पुरुष तो कोई है ही नहीं। यहां पर तो सारा माया का ब्रह्माण्ड है। उसमें भी दो तरह की सृष्टियां हैं।

जो रूह असलू ईश्वरी, दूजी रूह सब जहान।
पर रूह न्यारी सोहागनी, सो आगे कहूंगी पेहेचान।। ३ ।।

एक तो ईश्वरी सृष्टि की आत्माएं हैं और दूसरी संसार सब जीव सृष्टि का है। इन दोनों से ब्रह्मसृष्टि अलग है। इनकी पहचान आगे कहती हूं।

सैयां सुख निज वतनी, ईश्वरी को सुख और।
दुनी भी सुख होसी सदा, आगे कहूंगी तीनों ठौर।। ४ ।।

ब्रह्मसृष्टि के यहां आने पर घर का सुख है। ईश्वरी सृष्टि को और दूसरे तरीके का सुख है। दुनियां की भी अखण्ड मुक्ति होगी। आगे तीनों के ठिकाने बताऊंगी।

ए लछन सैयां अंकूरी, जो होसी इन घर।
ए वचन वतनी सुनके, आवत हैं तत्पर।। ५ ।।

जो परमधाम की ब्रह्मसृष्टि होगी उनके लक्षण इस तरह से होंगे कि वह अपने घर की बात सुनते ही माया को छोड़कर पिया के चरणों में आ जाएगी।

अटक रह्या साथ आधा, जिनो खेल देखन का प्यार।
ए किया मूल इन खातिर, जो हैं तामसियां नार।। ६ ।।

हमारे आधे सुन्दरसाथ यहां तामसी स्वभाव के हैं। इनको खेल देखने की इच्छा बाकी थी। यह ब्रह्माण्ड उनके लिए ही बनाया गया है।

भूल गईयां खेल में, जो सैयां हैं समरथ।
प्रकास पिया का मुझ पे, कहे समझाऊं अर्थ।। ७ ।।

ऐसे समर्थ मोमिन खेल में आकर भूल गए हैं। श्री प्राणनाथजी का ज्ञान मेरे पास है। इसे समझाकर कहूंगी।

Nijanand App

सबन को भेली करूं, दृढ़ कर देऊं मन।
खेल देखाऊं खोल के, जिन विध ए उतपन।। ८ ।।

मैं सबको इकट्ठा करूंगी और सब संशय मिटाकर उनके हृदय में दृढ़ता लाऊंगी। सारे रहस्य जिनसे ब्रह्माण्ड की उत्पत्ति हुई है, को खोल्कर खेल दिखाऊंगी।

ए खेल है जोरावर, बड़ो सो रचियो छल।
ए तब जाहेर होएसी, जब काढ़ देखाऊं बल।। ९ ।।

यह खेल बड़ा शक्तिशाली है, इस माया ने ऐसा छल रच रखा है। जब इसके बल को नष्ट कर दूंगी तो दुनियां को पता चलेगा कि यह माया तो कुछ भी नहीं थी।

तुम नाहीं इन छल के, छल को जोर अमल।
सांची को झूठी लगी, ऐसो छल को बल।। १० ।।

हे मोमिनो! तुम माया के नहीं हो, पर माया के नशे का यहां बड़ा जोर है, सच्ची ब्रह्मसृष्टि को माया पकड़कर बैठी है, ऐसी छल बल वाली है।

तुम आइयां छल देखने, भिल गैयां मांहें छल।
छल को छल न लागहीं, ओ लेहेरी ओ जल।। ११ ।।

हे ब्रह्मसृष्टियो! तुम खेल देखने के लिए आई हो और खेल में मिल गई हो (खेल बन गई हो)। माया के जीवों को इसका असर नहीं होता, क्योंकि वह इसी मोहजल की लहरें हैं।

ए झूठी तुमको लग रही, तुम रहे झूठी लाग।
ए झूठी अब उड़ जाएसी, दे जासी झूठा दाग।। १२ ।।

इस झूठी माया ने तुम्हें पकड़ रखा है और माया को तुमने पकड़ रखा है। यह झूठी माया तो खत्म हो जाएगी, परन्तु तुमको दाग लग जाएगा।

हांसी होसी अति बड़ी, जिन मोहे देओ दोस।
कमी कहे मैं ना करूं, पर तुमें छल हुआ सिरपोस।। १३ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि उस समय (परमधाम में) तुम्हारी बड़ी हंसी होगी, इसलिए मुझे दोष मत देना। मैं तो किसी तरह की कमी कहने में नहीं कर रही हूं। पर तुमने ही माया से सिर ढांप लिया है।

मांग लिया खसम पें, ए छल तुम देखन।
जो कदी भूलियां छल में, तो फेर न आवे ए दिन।। १४ ।।

तुमने खेल देखने की मांग धनी से की थी। अब यदि खेल में भूल गई तो फिर से ऐसा दिन हाथ में नहीं आएगा।

तुम मुख नीचा होएसी, आगूं सैयां सबन।
ए हांसी सत ठौर की, कोई सैयां कराओ जिन।। १५ ।।

सब ब्रह्मसृष्टियों के सामने तुम्हारा मुख नीचा होगा, इसलिए हे ब्रह्मसृष्टियो! अपने अखण्ड घर परमधाम में ऐसी हंसी कोई मत करवाना।

Nijanand App

दुख ले चलसी इत थें, नहीं आवन दूजी बेर।
तिन क्यों मुख ऊंचा होएसी, जो पिउसों बैठी मुख फेर।। १६ ।।

अपने धनी से मुख फिराकर मत बैठो। नहीं तो परमधाम में तुम्हारा मुख कैसे ऊंचा होगा। यहां दूसरी बार तो आना नहीं है, इसलिए धनी से मुख फिरा कर मत बैठो। चलते समय दुःख साथ ले चलोगे?

तुम सुध पिउ ना आपकी, ना सुध अपनों घर।
नाहीं सुध इन छल की, सो कर देऊं सब जाहेर।। १७ ।।

तुमको अपने आपकी, पिया की, घर की और इस माया की खबर नहीं है। वह सब मैं तुम्हें बता देती हूं।

मैं देखाऊं तिन विध, ज्यों होए पेहेचान छल।
जब तुम छल पेहेचानिया, तब चले न याको बल।। १८ ।।

हे सुन्दरसाथजी ! मैं तुमको इस तरह से माया दिखाऊंगी जिससे तुम्हें इस माया रूपी छल की पहचान हो जाए। जब तुम माया की पहचान कर लोगे तो इसकी ताकत तुम्हारे सामने नहीं चलेगी।

अब देखो या छल को, जो देखन आइयां एह।
प्रकास करूं इन भांत का, ज्यों रहेवे नहीं संदेह।। १९ ।।

अब इस माया को देखो यदि तुम देखने के लिए आए हो। इसकी इस तरह से तुम्हें पहचान कराऊंगी जिससे कोई संशय नहीं रह जाएगा।

अन्धेर सब उड़ाए के, सब छल करूं जाहेर।
खोलूं कमाड़ कल कुलफ, अन्तर मांहें बाहेर।। २० ।।

सब अज्ञान दूर करके माया की पहचान कराती हूं। इसके अन्दर और बाहर की कुल हकीकत जाहिर करूंगी। इसके बन्द दरवाजे, ताले और उसके खोलने की युक्ति बता देती हूं।

।। प्रकरण ।। १२ ।। चौपाई ।। २७९ ।।

खेल के मोहोरों का प्रकरण

अब निरखो नीके कर, ए जो देखन आइयां तुम।
मांग्या खेल हिरस का, सो देखलावें खसम।। १ ।।

हे ब्रह्मसृष्टियो! (सुन्दरसाथजी) जिस खेल को देखने आई हो उसको अच्छी तरह से पहचानो। तुमने माया के खेल को देखने की चाहना की थी, उसे धनी दिखा रहे हैं।

भोम भली भरतखंड की, जहां आई निध नेहेचल।
और सारी जिमी खारी, खारे जल मोह जल।। २ ।।

भरतखण्ड की भूमि भाग्यशाली है जहां यह अखण्ड वाणी आई है। बाकी सारा संसार माया के मोह से भरा है।

इत बोए बिरिख होत है, ताको फल पावे सब कोए।
बीज जैसा फल तैसा, किया जो अपना सोए।। ३ ।।

यहां की ही जमीन ऐसी है जहां बीज बोने से वृक्ष होता है, जिसका फल सभी को मिलता है। जैसा बीज होता है वैसा फल मिलता है, अर्थात् जैसी करनी वैसी भरनी।

Nijanand App

दुख ले चलसी इत थें, नहीं आवन दूजी बेर।
तिन क्यों मुख ऊंचा होएसी, जो पिउसों बैठी मुख फेर।। १६ ।।

अपने धनी से मुख फिराकर मत बैठो। नहीं तो परमधाम में तुम्हारा मुख कैसे ऊंचा होगा। यहां दूसरी बार तो आना नहीं है, इसलिए धनी से मुख फिरा कर मत बैठो। चलते समय दुःख साथ ले चलोगे?

तुम सुध पिउ ना आपकी, ना सुध अपनों घर।
नाहीं सुध इन छल की, सो कर देऊं सब जाहेर।। १७ ।।

तुमको अपने आपकी, पिया की, घर की और इस माया की खबर नहीं है। वह सब मैं तुम्हें बता देती हूं।

मैं देखाऊं तिन विध, ज्यों होए पेहेचान छल।
जब तुम छल पेहेचानिया, तब चले न याको बल।। १८ ।।

हे सुन्दरसाथजी ! मैं तुमको इस तरह से माया दिखाऊंगी जिससे तुम्हें इस माया रूपी छल की पहचान हो जाए। जब तुम माया की पहचान कर लोगे तो इसकी ताकत तुम्हारे सामने नहीं चलेगी।

अब देखो या छल को, जो देखन आइयां एह।
प्रकास करूं इन भांत का, ज्यों रहेवे नहीं संदेह।। १९ ।।

अब इस माया को देखो यदि तुम देखने के लिए आए हो। इसकी इस तरह से तुम्हें पहचान कराऊंगी जिससे कोई संशय नहीं रह जाएगा।

अन्धेर सब उड़ाए के, सब छल करूं जाहेर।
खोलूं कमाड़ कल कुलफ, अन्तर मांहें बाहेर।। २० ।।

सब अज्ञान दूर करके माया की पहचान कराती हूं। इसके अन्दर और बाहर की कुल हकीकत जाहिर करूंगी। इसके बन्द दरवाजे, ताले और उसके खोलने की युक्ति बता देती हूं।

।। प्रकरण ।। १२ ।। चौपाई ।। २७९ ।।

खेल के मोहोरों का प्रकरण

अब निरखो नीके कर, ए जो देखन आइयां तुम।
मांग्या खेल हिरस का, सो देखलावें खसम।। १ ।।

हे ब्रह्मसृष्टियो! (सुन्दरसाथजी) जिस खेल को देखने आई हो उसको अच्छी तरह से पहचानो। तुमने माया के खेल को देखने की चाहना की थी, उसे धनी दिखा रहे हैं।

भोम भली भरतखंड की, जहां आई निध नेहेचल।
और सारी जिमी खारी, खारे जल मोह जल।। २ ।।

भरतखण्ड की भूमि भाग्यशाली है जहां यह अखण्ड वाणी आई है। बाकी सारा संसार माया के मोह से भरा है।

इत बोए बिरिख होत है, ताको फल पावे सब कोए।
बीज जैसा फल तैसा, किया जो अपना सोए।। ३ ।।

यहां की ही जमीन ऐसी है जहां बीज बोने से वृक्ष होता है, जिसका फल सभी को मिलता है। जैसा बीज होता है वैसा फल मिलता है, अर्थात् जैसी करनी वैसी भरनी।

Nijanand App

इनमें जो ठौर अव्वल, जाको नाम नौतन।
जहां आए उदय हुई, नेहेचल बात वतन।। ४ ।।

इस सारे भरतखण्ड में जो सबसे अच्छी धरती है उसे नौतनपुरी कहते हैं। जहां पर अखण्ड मूल परमधाम की बात जाहिर हुई।

एह खेल तुम मांगिया, सो किया तुम खातिर।
ए विध सब देखाए के, पीछे कहूं वतन आखिर।। ५ ।।

हे ब्रह्मसृष्टियो! तुमने खेल को मांगा है, तुम्हारे लिए इसे बनाया है। यह सब तुम्हें दिखलाकर वतन और खसम के दर्शन कराऊंगी।

मोहोरे सब जुदे जुदे, जुदी जुदी मुख बान।
खेले मन के भाव तें, सब आप अपनी तान।। ६ ।।

इस खेल में सभी अगुए (गुरुजन) जुदे-जुदे हैं और उनकी बोली अलग-अलग है। यह सब अपनी मन की भावना के अनुसार ही अपना राग अलापते हैं।

स्वांग काछें जुदे जुदे, जुदे जुदे रूप रंग।
चलें आप चित चाहते, और रहे जो भेले संग।। ७ ।।

इसमें अपना-अपना भेष बनाते हैं, जिनके अलग-अलग रूप और रंग होते हैं। सभी अपनी-अपनी इच्छा के अनुसार मनमानी चाहते हैं और साथ में भी रहते हैं।

अनेक सेहेर बाजार चौहटे, चौक चौवटे अनेक।
अनेक कसबी कसब करते, हाट पीठ वसेक।। ८ ।।

यहां कई तरह के शहर, बाजार, दुकान, चौहटे, चौक हैं, जिनमें अनेक तरह का धन्धा करने वाले धन्धा करते हैं। कहीं-कहीं पर हाट और बाजार भी लगते हैं, अर्थात् यहां पर धर्मों के धाम बने हैं और धर्मों के क्षेत्र हैं। गद्दी (पीठ) हैं, मठ हैं और उनके प्रचारक प्रचार कर दुनियां को ठगते हैं। यहीं पर मेलों के रूप में हाट-पीठ लगते हैं जिनमें कई तरह की चमत्कारी लीला भी करते हैं।

भेख सारे बनाए के, करें होहोकार।
कोई मिने आहार खाए, कोई खाए अहंकार।। ९ ।।

इसमें तरह-तरह के भेष बनाकर अपनी ध्वजा (पताका) लेकर शोर मचाते हैं। जिनके कारण कोई धर्म को पेट का साधन बनाता है, कोई अपने अहंकार को दिखाता है।

बिध बिध के भेख काछे, सारे जान प्रवीन।
वरन चारों खेलें चित दे, नाहीं न कोई मतहीन।। १० ।।

इनमें लोग तरह-तरह के भेष बनाकर अपने को होशियार ज्ञानी के रूप में जाहिर करते हैं। चारों वर्ण के लोग बड़े चित्त से खेलते हैं। धर्म प्रचार करते हैं। कोई अपने आपको कम नहीं कहता है।

पढ़े चारों विद्या चौदे, हुए वरन विस्तार।
आप चंगी सब दुनियां, खेलत हैं नर नार।। ११ ।।

इनमें कोई चारों वेदों और चौदह विद्याओं के जानने वाले हैं। आप भी माया में मस्त होकर दुनियां वालों को भी माया में मग्न कर रखा है।

Nijanand App

वरन सारे पसरे, लोभें लिए करें उपाय।
बिना अगनी पर जले, अंग काम क्रोध न माय।। १२ ।।

चारों वर्ण वाले अपना प्रसार करते हैं और उनमें लोभ के ही उपाय करते हैं। वे काम, क्रोध की अग्नि में जल रहे हैं जो हकीकत में अग्नि नहीं है।

नाहीं जासों पेहेचान कबहूं, तासों करे सनमंध।
सगे सहोदरे मिलके, ले देवें मन के बंध।। १३ ।।

जिसके साथ कभी पहचान नहीं उससे शादी करते हैं। सब कुटुम्ब और बिरादरी वाले मिलकर माया के बन्धन में बांध देते हैं।

सनमंध करते आप में, उछरंग अंग न माए।
केसर कसूंबे पेहेर के, सेहेर में फेरे खाए।। १४ ।।

जब शादी करते हैं तो बड़ी खुशी होती है और पीले-लाल वस्त्र पहनकर जगत को दिखाते हैं (बारात निकालते हैं)।

सिनगार करके तुरी चढ़े, कोई करे छाया छत्र।
कोई आगे नाटारंभ करे, कोई बजावे बाजंत्र।। १५ ।।

दूल्हा का श्रृंगार करके घोड़े पर बैठाते हैं। कोई छत्र लेकर साथ में चलते हैं। कई आगे नाचते हुए बाजे बजाते चलते हैं।

कोई बांध सीढ़ी आवे सामी, करे पोक पुकार।
विरह वेदना अंग न माए, पीटे मांहें बाजार।। १६ ।।

कई सामने से मुर्दे की अर्थी लेकर हाय-हाय करते चले आते हैं। उनके अंग में दु:ख नहीं समाता। बाजार में छाती पीटते हैं।

गाड़ें जालें हाथ अपने, रुदन करें जलधार।
सनमंधी सब मिलके, टलवलें नर नार।। १७ ।।

वह अपने ही हाथों से मुर्दों को गाड़ देते हैं या जला देते हैं तथा आंसुओं की धारा बहा-बहाकर रोते हैं। सगे सम्बन्धी मिलकर शोक मनाते हैं और दु:खी होते हैं।

जनम होवे काहू के, काहू के होवे मरन।
कोई हिरदे हंसे हरखे, कोई सोक रुदन।। १८ ।।

किसी के यहां जन्म होता है। किसी के यहां मरण हो रहा है। किसी के दिल में बड़ी खुशी है। कोई दु:ख से रो रहा है।

धन खरचें खाएं गफलतें, आपे बुजरक होए।
कीरत अपनी कराए के, खेल या विध होए।। १९ ।।

कोई अपने को अपनी औकात से बड़ा दिखाने के लिए धन खर्च करते हैं और अपनी थोड़ी-सी महिमा कराकर पीछे दु:खी होते हैं।

Nijanand App

कोई किरपी कोई दाता, कोई मंगन केहेलाए।
किसी के अवगुन बोले, किसी के गुन गाए।। २० ।।

कोई कंजूस है, कोई दानी है। कोई मांगने वाले भिखारी कहलाते हैं। किसी के गुण गाए जाते हैं। किसी की निन्दा की जाती है।

कोई मिने बेहेवारिए, कोई राने राज।
कोई मिने रांक रलझले, रोते फिरें अकाज।। २१ ।।

कोई आपस में सांसारिक व्यवहार करते हैं। कोई राणा है। कोई राजा है। कोई गरीब बनकर अकारण रोता है।

कोई पोंढ़े पलंग हेम के, कोई ऊपर ढोले वाए।
बात करते जी जी करे, ए खेल यों सोभाए।। २२ ।।

कोई सोने के पलंग पर सोते हैं। कोई ऊपर पंखे झलते हैं। कई आगे सेवा में खड़े 'जी जी' करते हैं। इस तरह से यह खेल की शोभा है।

कोई बैठे सुखपाल में, कोई दौड़े उचाए।
जलेब आगे जोर चले, ए खेल यों खेलाए।। २३ ।।

कोई पालकी में बैठते हैं। कोई पालकी उठाकर चलते हैं। कोई इनकी सेना में आगे चलते हैं। यह खेल इस तरह से शोभायमान है।

कोई बैठे तखतरवा, आगे तुरी गज पाएदल।
अति बड़े बाजंत्र बाजे, जाने राज नेहेचल।। २४ ।।

कोई तखतरवा (बड़े रथ) पर बैठते हैं। उनके आगे हाथी-घोड़े पैदल चलते हैं। बड़े-बड़े बाजे बजते हैं। वह समझते हैं कि हमारा राज्य अखण्ड है।

साम सामी करे सैन्या, भारथ होवे लोह अंग।
लज्या बांधे होवें टुकड़े, कहावें सूर अभंग।। २५ ।।

कई आमने-सामने फौजें खड़ी करके तलवार और भालों से लड़ते हैं। वह अपने को राजा कहलाने के लिए लड़ मरते हैं तथा हाथ-पैर तोड़ लेते हैं।

कोई मिने होय कायर, छोड़ लज्या भाग जाए।
कोई मारे कोई पकड़े, कोई गए आप बचाए।। २६ ।।

उनमें कोई कायर होकर शर्म के मारे पीछे भाग जाते हैं। कोई मारता है। कोई पकड़ता है तथा कोई अपने को बचाता है।

कोई जीते कोई हारे, काहू हरख काहू सोक।
जो तरफ सारी जीत आवे, ताए कहें पृथीपत लोक।। २७ ।।

कोई जीतता है तो कोई हारता है। किसी को हर्ष होता है तो किसी को दुःख होता है। जो चारों तरफ जीतकर आता है, वह पृथ्वीपति कहलाता है।

Nijanand App

कोई करे ले कैद में, बांधत उलटे बंध।
मारते अरवाह काढ़ें, ए खेल या सनंध।। २८ ।।

किसी को कैद में डालते हैं। कई उनके बन्धन में बंध जाते हैं जिनको मार-मारकर प्राण निकालते हैं। यह खेल इसी तरह का है।

जीते हरखे पौरसे, सूरातन अंग न माए।
हारे सारे सोक पावें, सो करें मुख त्राहे त्राहे।। २९ ।।

कोई जीतने पर खुशी मनाता है और उसके अंग में उमंग नहीं समाती है। हारे हुए लोग शोक मनाते हैं तथा तोबा-तोबा करते हैं।

कई फिरत हैं रोगिए, कई लूले टूटे अपंग।
कई मिने आंधले, यों होत खेलमें रंग।। ३० ।।

कई रोगी घूमते हैं। कई लूले, टूटे अंग वाले तथा अपंग हैं। कई अन्धे हैं। इस तरह से खेल में आनन्द हो रहा है।

कई उदर कारने, फिरत होत फजीत।
कई पवाड़े करें कोटल, ए होत खेल या रीत।। ३१ ।।

कई अपने पेट के वास्ते मांगते फिरते हैं और अपनी फजीहत कराते हैं। इस तरह से खेल में बिना हिसाब झंझट है।

।। प्रकरण ।। १३ ।। चौपाई ।। ३१० ।।

खेल में खेल

अब दिखाऊं इन विध, जासों समझ सब होए।
भेले हैं सत असत, सो जुदे कर देऊं दोए।। १ ।।

श्री महामतिजी कहती हैं अब तुमको इस तरह से दिखाती हूं जिससे तुम्हें सब समझ आ जाए। यहां सत (परब्रह्म) और झूठ (माया) को लोगों ने इकट्ठा समझ रखा है, उन दोनों सत और असत को जुदा-जुदा करके दिखाती हूं।

इन खेलमें जो खेल है, सो केहेत न आवे पार।
इन भेखोंमें भेख सोभहीं, सो कहूं नेक विचार।। २ ।।

इस खेल में जो खेल हो रहा है, वह बेशुमार है और कहनी (वर्णन) से परे है। विभिन्न भेषों में तरह-तरह के भेष दिखाई पड़ते हैं। कुछ थोड़ा सा उनके प्रति विचार सुनो।

कई द्योहरे अपासरे, कई मुनारे मसीत।
तलाव कुआ कुंड बावरी, मांहें विसामां कई रीत।। ३ ।।

यहां पर कई मन्दिर, कई जैन मन्दिर और कई मुसलमानों की मीनारों वाली मस्जिदें हैं। कई तालाब, कुण्ड, बावरी और तीर्थ स्थान हैं, कई धर्मशालाएं हैं। इस तरह धर्मों की रस्में हैं।

Nijanand App

कोई करे ले कैद में, बांधत उलटे बंध।
मारते अरवाह काढ़ें, ए खेल या सनंध।। २८ ।।

किसी को कैद में डालते हैं। कई उनके बन्धन में बंध जाते हैं जिनको मार-मारकर प्राण निकालते हैं। यह खेल इसी तरह का है।

जीते हरखे पौरसे, सूरातन अंग न माए।
हारे सारे सोक पावें, सो करें मुख त्राहे त्राहे।। २९ ।।

कोई जीतने पर खुशी मनाता है और उसके अंग में उमंग नहीं समाती है। हारे हुए लोग शोक मनाते हैं तथा तोबा-तोबा करते हैं।

कई फिरत हैं रोगिए, कई लूले टूटे अपंग।
कई मिने आंधले, यों होत खेलमें रंग।। ३० ।।

कई रोगी घूमते हैं। कई लूले, टूटे अंग वाले तथा अपंग हैं। कई अन्धे हैं। इस तरह से खेल में आनन्द हो रहा है।

कई उदर कारने, फिरत होत फजीत।
कई पवाड़े करें कोटल, ए होत खेल या रीत।। ३१ ।।

कई अपने पेट के वास्ते मांगते फिरते हैं और अपनी फजीहत कराते हैं। इस तरह से खेल में बिना हिसाब झंझट है।

।। प्रकरण ।। १३ ।। चौपाई ।। ३१० ।।

खेल में खेल

अब दिखाऊं इन विध, जासों समझ सब होए।
भेले हैं सत असत, सो जुदे कर देऊं दोए।। १ ।।

श्री महामतिजी कहती हैं अब तुमको इस तरह से दिखाती हूं जिससे तुम्हें सब समझ आ जाए। यहां सत (परब्रह्म) और झूठ (माया) को लोगों ने इकट्ठा समझ रखा है, उन दोनों सत और असत को जुदा-जुदा करके दिखाती हूं।

इन खेलमें जो खेल है, सो केहेत न आवे पार।
इन भेखोंमें भेख सोभहीं, सो कहूं नेक विचार।। २ ।।

इस खेल में जो खेल हो रहा है, वह बेशुमार है और कहनी (वर्णन) से परे है। विभिन्न भेषों में तरह-तरह के भेष दिखाई पड़ते हैं। कुछ थोड़ा सा उनके प्रति विचार सुनो।

कई दयोहरे अपासरे, कई मुनारे मसीत।
तलाव कुआ कुंड बावरी, मांहें विसामां कई रीत।। ३ ।।

यहां पर कई मन्दिर, कई जैन मन्दिर और कई मुसलमानों की मीनारों वाली मस्जिदें हैं। कई तालाब, कुण्ड, बावरी और तीर्थ स्थान हैं, कई धर्मशालाएं हैं। इस तरह धर्मों की रस्में हैं।

Nijanand App

कई भेख जो साध कहावें, कई पंडित पुरान।
कई भेख जो जालिम, कई मूरख अजान।।४ ।।

कई ऐसे भेष पहनते हैं कि लोग उन्हें साधु कहते हैं। कई पुराण पढ़ने वाले पण्डितों का भेष धारण करते हैं। कई डाकुओं का भेष धारण करते हैं। कई मूर्ख नासमझ घूमते रहते हैं।

कई अंन नीर सबीले, कई करें दया दान।
कई तरपन तीरथ, कई करे नित अस्नान।।५ ।।

कई अन्न क्षेत्र खोलते हैं। कई प्याऊ बनवाते हैं। कई दया तथा दान करते हैं। कई तीर्थों में जाकर पिण्डों का तर्पण (पिण्डदान) करते हैं। कई जाकर तीर्थों में नहाते हैं।

कई कहावें दरसनी, धरें जुदे जुदे भेख।
सुध आप ना पार की, हिरदे अंधेरी विसेख।।६ ।।

कई दर्शन-शास्त्र के ज्ञाता कहलाते हैं। वह अलग भेष धरते हैं। उन्हें न अपनी खबर है और न ब्रह्माण्ड के पार की खबर है। उनका हृदय अंधेरे से भरा हुआ है।

कई लूचे कई मूंड़े, कई बढ़ावें केस।
कई काले कई उजले, कई धरें भगुए भेस।।७ ।।

कई बालों को नुचवाते हैं, कई मुंडवाते हैं, कई लोग केश बढ़ाते हैं। कई काले हैं। कई गोरे हैं। कई भगवा भेष धारण करके घूमते हैं।

कई नेक छेदें कई न छेदें, कई बोहोत फारें कान।
कई माला तिलक धोती, कई धरें बैठे ध्यान।।८ ।।

कई कान छेदते हैं, कई नहीं छेदते हैं, कई कानों को बहुत फाड़ते हैं, कई माला पहनते हैं, कई धोती पहनते हैं, कई ध्यानी होकर बैठते हैं।

कई जिंदे मलंग मुल्ला, कई बांग दे मन धीर।
कई जावें पाक होए, कई मीर पीर फकीर।।९ ।।

कई इस्लाम धर्म के अन्दर जिन्दे, मलंग, मुल्ला (यह उनके महात्माओं की उपाधियां हैं) हैं। कई मस्जिद की मीनारों पर बांग देकर मन को शान्ति देते हैं। कई शरीर के चौदह अंग धोकर अपने को पवित्र बनाना समझते हैं। कई मीर, पीर और फकीरों का भेष बनाकर अपने को जीव, हंस और परमहंस समझ बैठे हैं।

कई लंगरी बोदले, कई आलम पढ़े इलम।
कई ओलिए बेकैद सोफी, पर छोड़े नहीं जुलम।।१० ।।

कई लंगरी तथा बोदले हैं। कई इल्म पढ़कर आलिम कहलाते हैं। कई तपस्वी शरीयत से ऊपर उठकर सूफी कहलाते हैं, पर माया से मन को हटा नहीं सके। केवल माया के स्वांगों के वास्ते सब बनाए हैं।

कई सती सीलवंती, कई आरजा अरधांग।
जती बरती पोसांगरी, ए अति सोभावे स्वांग।।११ ।।

कई शीलवन्ती, कई सती कहलाती हैं। कई पतिव्रता अर्द्धांगिनी कहलाती हैं। कई यती हैं। कई व्रती हैं। कई नशा करने वाले हैं। इसी तरह से सब रूप दिखाई पड़ते हैं।

Nijanand App

कई जुगते जोगी जंगम, कई जुगते सन्यास।
कई जुगते देह दमे, पर छूटे नहीं जमफांस।। १२ ।।

कई तरह के योगी हैं। कई तरह के संन्यासी हैं। कई विभिन्न तरीकों से देह दमन करते हैं। कई चलते फिरते योगी हैं। पर किसी से यम की फन्द नहीं छूटती है। सब माया में उलझे पड़े हैं।

कई सिवी कई वैष्नवी, कई साखी समरथ।
लिए जो सारे गुमाने, सब खेलें छल अनरथ।। १३ ।।

कई शिव को मानने वाले (शैव) हैं। कई विष्णु के उपासक हैं। कई कविता लिखने वाले सन्त कवि हैं। यह सब अपने अहंकार में डूबे हुए माया का ही खेल खेल रहे हैं।

कई श्रीपात ब्रह्मचारी, कई वेदिए वेदान्त।
कई गए पुस्तक पढ़ते, परमहंस सिद्धांत।। १४ ।।

कई श्रीपाद (पूज्यपाद) ब्रह्मचारी हैं। कई वेद पढ़ने वाले वेदान्ती हैं। कई पुस्तक पढ़ते-पढ़ते परमहंसों के सिद्धान्त तक पहुंचते हैं।

कई अवतार तीर्थंकर, कई देव दानव बड़े बल।
बुजरक नाम धराइया, पर छोड़े न काहू छल।। १५ ।।

कई विष्णु के अवतार हुए हैं। कई जैन मत के तीर्थंकर हुए हैं। कई देव और कई शक्तिशाली दानव हैं। कई बड़े ज्ञानी कहलाते हैं, पर किसी को माया ने नहीं छोड़ा।

कई होदी बोदी पादरी, कई चंडिका चामंड।
बिना हिसाबें खेलहीं, जाहेर छल पाखंड।। १६ ।।

कई यहूदी हैं। कई बौधी हैं। कई पादरी हैं (यह ईसाई मत के सन्त हैं)। कई चण्डी देवी के उपासक हैं। कई चामुण्डा के उपासक हैं। इस तरह से बिना हिसाब के लोग इसमें खेलते हैं, पर यह छल और पाखण्ड है।

कई डिम्भ करामात, कई जंत्र मंत्र मसान।
कई जड़ी मूली औखदी, कई गुटका धात रसान।। १७ ।।

कई पाखण्डी करामाती हैं। कई यन्त्र, मन्त्र, मसान की पूजा करते हैं। कई साधु जड़ी-बूटी की औषधि देकर कई रस तथा धातु की गोलियां बांटते हैं।

कई जुगतें सिध साधक, कई व्रत धारी मुन।
कई मठ वाले पिंड पालें, कई फिरें होए नगिन।। १८ ।।

कई सिद्ध और साधक बनकर घूमते हैं। कई व्रत धारण करके मौन रहते हैं। कई मठाधीश बनकर पिण्ड पालते हैं। कई जैन मुनि बनकर नंगे घूमते हैं।

कई खट चक्र नाड़ी पवन, कई अजपा अनहद।
कई त्रिवेनी त्रिकुटी, जोती सोहं राते सब्द।। १९ ।।

कई षट चक्रों से नाड़ी शोधन करते हैं। कई अजपा, अनहद का जाप करते हैं, कई चित्त को त्रिकुटि में स्थिर करते हैं और ज्योति स्वरूप ओउम्-सोऽहं शब्दों का आनन्द लेते हैं।

Nijanand App

कई संत जो महंत, कई देखीते दिगम्बर।
पर छल ना छोड़े काहू को, कई कापड़ी कलंदर।। २० ।।

कई सन्त हैं। कई महन्त हैं। कई नंगे हैं। कई श्वेताम्बर जैन हैं, कई कलंदर हैं पर माया ने किसी को नहीं छोड़ा।

कई आचारी अप्रसी, कई करें कीरतन।
यों खेलें जुदे जुदे, सब परे बस मन।। २१ ।।

कई आचार-विचार वाले हैं। कई छूतछात को मानने वाले हैं। कई कीर्तन करने वाले हैं। यह सब लोग अलग-अलग रूप से मन के वशीभूत होकर खेलते हैं।

कई कीरतन करें बैठे, कई जाग जगन।
कई कथें ब्रह्मग्यान, कई तपें पंच अगिन।। २२ ।।

कई बैठे-बैठे कीर्तन करते हैं। कई रात्रि जागरण करते हैं। कई ब्रह्मज्ञान का कथन करते हैं। कई पांच तरह की अग्नि में अपने को तपाते हैं।

कई इन्द्री करें निग्रह, मन ल्याए कष्ट मोह।
कई उर्ध ठाड़ेश्वरी, कई बैठे खुद होए।। २३ ।।

कई इन्द्रियों को वश में करते हैं। कई लोग मोह के वश में कष्ट उठाते हैं। कई उल्टे खड़े रहते हैं। कई खुद को ही ब्रह्म कहलाते हैं।

कई फिरें देस देसांतर, कई करें काओस।
कई कपाली अघोरी, कई लेवें ठंड पाओस।। २४ ।।

कई देश-विदेश में घूमते हैं। कई काओस (ओस में बैठकर उपासना करने वाले), कई कापालिक (मुर्दे की खोपड़ी लेकर घूमने वाले), कई अघोरी हैं। कोई मलेच्छ खाना खाते हैं। कई ठण्ड के मौसम में छाती तक पानी में डूबे रहते हैं।

कई पवन दूध आहारी, कई ले बैठत हैं नेम।
कई कैद ना करे कछुए, ए सब छल के चेन।। २५ ।।

कई हवा खाते हैं। कई दूध पीते हैं तथा नियम पालन करते हैं। कई कर्मकाण्ड करते हैं। कई कुछ नहीं करते। यह सब छल और कपट के चरित्र हैं।

कई फल फूल पत्र भखी, कई आहार अलप।
कई करें काल की साधना, जिया चाहें कलप।। २६ ।।

कई फल खाते हैं। कई फूल खाते हैं। कई पत्ते खाने वाले हैं। कई थोड़ा खाने वाले हैं। कई काल की साधना करके मरना नहीं चाहते हैं, और कल्पान्त तक जीना चाहते हैं।

कई धारा गुफा झांपा, कई जो गालें तन।
कई सूके बिना खाए, कई करे पिंड पतन।। २७ ।।

कई पानी की धारा के नीचे बैठे हैं। कई बर्फ में अपने तन को गला रहे हैं। कई भूखों मरकर सूख रहे हैं। कई इस तरह अपने शरीर को नष्ट करने में लगे हैं।

Nijanand App

यों वैराग जो साधना, करें जुदे जुदे उपचार।
यों चले सब पंथ पैंड़े, यों खेले सब संसार।। २८ ।।

कई वैराग्य साधना करते हैं। कई तरह-तरह के उपचारों में लगे हैं (दवाई ढूंढ़ते फिरते हैं)। इसी तरह से सभी पन्थ पैंड़े चल रहे हैं। इन पर चलकर संसार में खेल खेल रहे हैं।

खेलें सब देखा देखी, ज्यों चले चींटी हार।
यों जो अंधे गफलती, बांधे जाएं कतार।। २९ ।।

यह सब चींटियों की कतार की तरह देखा-देखी चलते हैं। इस तरह से यह अन्धे गफलत में डूबे हुए एक कतार में चले जा रहे हैं।

कोई ना चीन्हें आप को, ना चीन्हें अपनो घर।
जिमी पैंड़ा ना सूझे काहूं, जात चले इन पर।। ३० ।।

किसी को न अपनी पहचान है न घर की पहचान है। किसी को भी इस भवसागर से पार जाने का रास्ता दिखता नहीं है, पर चले जा रहे हैं।

बाजीगर न्यारा रह्या, ए खेलत कबूतर।
तो कबूतर जो खेल के, सो क्यों पावें बाजीगर।। ३१ ।।

इस संसार के रचने वाले बाजीगर की पहचान नहीं है और ये सब खेल के कबूतर की तरह खेल रहे हैं। जैसे खेल के कबूतरों को बाजीगर की पहचान नहीं होती, इसी प्रकार इनको परब्रह्म की पहचान नहीं है।

अब देखो ले माएने, खेल बिना हिसाब।
आप अकलें देखिए, ए रच्यो खसमें ख्वाब।। ३२ ।।

अब हकीकत के मायने लेकर देखो तो यह खेल बिना हिसाब चल रहे हैं। अब आप यदि तारतम वाणी से देखें तो श्री राजजी ने ऐसा स्वप्न का खेल बनाया है।

धरे नाम खसम के, जुदे जुदे आप अनेक।
अनेक रंगे संगे ढंगे, बिध बिध खेलें विवेक।। ३३ ।।

इन्होंने अपनी ही तरफ से परमात्मा के अनेक नाम रख लिए हैं तथा अनेक तरह से आपस में वाद विवाद (शास्त्रार्थ) करते हैं।

खसम एक सबन का, नाहीं न दूसरा कोए।
एह विचार तो करे, जो आप सांचे होए।। ३४ ।।

इस बात का विचार वही करेगा जो स्वयं सच्चा होगा, अर्थात् जिसको परब्रह्म की पहचान हो गई होगी कि परमात्मा जिसको कहते हैं वह सबका एक ही है।

खेल खेलें अनेक रब्दें, मिनों मिने करें क्रोध।
जैसे मछ गलागल, छोड़े न कोई व्रोध।। ३५ ।।

इस खेल में खेलते हैं और आपस में क्रोधित होकर झगड़ा करते हैं। जिस तरह मगरमच्छ आपस की दुश्मनी नहीं छोड़ते, वही हाल इनका है।

।। प्रकरण ।। १४ ।। चौपाई ।। ३४५ ।।

Nijanand App

पन्थ पैंड़ों की खेंचा खेंच

कोई कहे दान बड़ा, कोई केहेवे ग्यान।
कोई कहे विग्यान बड़ा, यों लरें सब उनमान।। १ ।।

यहां कोई दान को, कोई ज्ञान को, कोई विज्ञान को बड़ा कहता है और अटकल लगाकर लड़ते रहते हैं।

कोई केहेवे करम बड़ा, कोई केहेवे काल।
कोई कहे साधन बड़ा, यों लरें सब पंपाल।। २ ।।

कोई कर्म को, कोई काल को तथा कोई साधन को बड़ा कहकर झूठ में लड़ते रहते हैं।

कोई कहे बड़ा तीरथ, कोई कहे बड़ा तप।
कोई कहे सील बड़ा, कोई केहेवे सत।। ३ ।।

कोई तीरथ को, कोई तप को, कोई शील को और कोई सत (सत्य) को बड़ा कहते हैं।

कोई कहे विचार बड़ा, कोई कहे बड़ा व्रत।
कोई कहे मत बड़ी, या विध कई जुगत।। ४ ।।

कोई विचार को, कोई व्रत को, कोई बुद्धि को तथा कोई युक्ति को बड़ा कहते हैं।

कोई कहे बड़ी करनी, कोई कहे मुगत।
कोई कहे भाव बड़ा, कोई कहे भगत।। ५ ।।

कोई करनी को, कोई भाव को, कोई मुक्ति को, कोई भक्त को बड़ा कहते हैं।

कोई कहे कीरतन बड़ा, कोई कहे श्रवन।
कोई कहे बड़ी वंदनी, कोई कहे अरचन।। ६ ।।

कोई कीर्तन को, कोई श्रवण को, कोई वन्दना को, कोई अर्चना को बड़ा कहते हैं।

कोई कहे ध्यान बड़ा, कोई कहे धारन।
कोई कहे सेवा बड़ी, कोई कहे अरपन।। ७ ।।

कोई ध्यान को, कोई धारणा को, कोई सेवा को, कोई अर्पण को बड़ा कहते हैं।

कोई कहे संगत बड़ी, कोई कहे बड़ा दास।
कोई कहे विवेक बड़ा, कोई कहे विश्वास।। ८ ।।

कोई संगति को, कोई दास को, कोई विवेक को, कोई विश्वास को बड़ा कहते हैं।

कोई कहे स्वांत बड़ी, कोई कहे तामस।
कोई केहेवे पन बड़ा, यों खेलें परे परबस।। ९ ।।

कोई शान्ति को, कोई तामस को, कोई प्रतिज्ञा को बड़ा कहकर बेबस होकर खेलते हैं।

कोई कहे सदा सिव बड़ा, कोई कहे आद नारायन।
कोई कहे आदें आद माता, यों लरें तानों तान।। १० ।।

कोई सदाशिव को, कोई आदि नारायण को, कोई आदि माता को बड़ा कहकर आपस में खींचा तानी करते हैं।

Nijanand App

कोई कहे आतम बड़ी, कोई कहे परआतम।
कोई कहे अहंकार बड़ा, जो आद का उतपन।।११।।

कोई आत्मा को, कोई परआतम (परात्म) को, कोई अहंकार को जो शुरू से ही पैंदा है, बड़ा कहते हैं।

कोई कहे सकल व्यापी, देखी तां सब ब्रह्म।
कोई कहे ए न लह्या, यों लरें भूले भरम।।१२।।

कोई कहता है कि ब्रह्म सब में व्यापक है। कोई कहता है हमने ब्रह्म को पा लिया। कोई कहता है हमने नहीं पाया। इस तरह से संशय में डूबे हुए लड़ते हैं।

कोई कहे सुन्य बड़ी, कोई कहे निरंजन।
कोई कहे निरगुन बड़ा, यों लरें वेद वचन।।१३।।

कोई शून्य को, कोई निरंजन को, कोई निर्गुण को बड़ा कहकर वेद के वचनों से लड़ते हैं।

कोई कहे आकार बड़ा, कोई कहे निराकार।
कोई केहेवे तेज बड़ा, यों लरें लिए विकार।।१४।।

कोई आकार को, कोई निराकार को तथा कोई तेज को बड़ा कहकर संशय में लड़ते हैं।

कोई कहे पारब्रह्म बड़ा, कोई कहे पुरसोतम।
यों वेद के वाद अंधकारें, करें लड़ाई धरम।।१५।।

कोई परब्रह्म को, कोई पुरुषोतम को बड़ा कहते हैं तथा अन्धकार में वेदों पर वाद-विवाद कर धर्म के लिए लड़ाई करते हैं।

जाहिर झूठा खेलहीं, हिरदे अति अंधेर।
कहें हम सांचे और झूठे, यों फिरें उलटे फेर।।१६।।

यह सब जाहिरी में झूठ है। इनके हृदय संशय से भरे हैं। वह कहते हैं कि हम ही सच्चे हैं। बाकी सब झूठे हैं। इस तरह से उलटे चक्कर में पड़े हैं।

पंथ सारों की एह मजल, अनेक विध वैराट।
ए जो विगत खेल की, सब रच्यो छल को ठाट।।१७।।

सारे पंथों की यही हालत है। वैराट में अनेक तरह की यही मंजिल है। यह जो खेल की हकीकत बताई, वह सब माया की ठाट-बाट है।

कोई हेम गले अगनी जले, कोई भैरव करवत ले।
खसम को पावे नहीं, जो तिल तिल काटे देह।।१८।।

कोई बर्फ में गलते हैं। कोई अग्नि में जलते हैं। कोई भैरव में झांप खाते हैं और कई काशी में जाकर करवट लेते हैं। इस तरह से अपने शरीर के टुकड़े-टुकड़े करते हैं, परन्तु परब्रह्म की प्राप्ति नहीं होती।

भेख जुदे जुदे खेल हीं, जाने खेल अखंड।
ए देत देखाई सब फना, मूल बिना ब्रह्मांड।।१९।।

तरह-तरह के भेष बनाकर खेलते हैं और उस खेल को अखण्ड समझते हैं, जबकि यह सब जो दिख रहा है मिटने वाला संसार है। यह बिना जड़ के खड़ा है।

Nijanand App

खसम एक सबन का, नाहीं न दूसरा कोए।
ए विचार तो करे, जो आप सांचे होए।। २० ।।

धनी सबका एक है। दूसरा तो कोई है नहीं। ऐसा विचार तो वही कर सकता है जो स्वयं सच्चा हो।

खेलें सब बेसुध में, कोई बोल काढ़े विसाल।
उतपन सारी मोह की, सो होए जाए पंपाल।। २१ ।।

यह सब बेसुधी में खेल खेलते बड़े-बड़े वचन बोलते हैं, जबकि सारी सृष्टि मोह से पैदा हुई है और मिट जाने वाली है।

बिना दिवालें लिखिए, अनेक चित्रामन।
सो क्यों पावे खुद को, जाको मूल मोह सुंन।। २२ ।।

इस तरह यहां पर बिना दीवाल के अनेक तरह के चित्र बना रहे हैं। ऐसे लोग संसार के हैं जिनका मूल ही शून्य निराकार है, वह परब्रह्म को कैसे पा सकते हैं?

अनेक किव इत उपजे, वैराट सचराचर।
ए छल मोहोरे छल को, खेलत हैं सत कर।। २३ ।।

यहां पर अनेक प्रकार के कवि पैदा हुए जिन्होंने संसार को कभी चल, कभी अचल कहा है। ये सब छल के मोहरे हैं और इसी छल को सत्य मानकर खेलते हैं।

|| प्रकरण || १५ || चौपाई || ३६८ ||

वैराट का कोहेड़ा

वैराट का फेर उलटा, मूल है आकास।
डारें पसरी पाताल में, यों कहे वेद प्रकास।। १ ।।

इस वैराट का फेरा उलटा है। इसका मूल आकाश में है और डालें पाताल में हैं। इस प्रकार वेदों का ज्ञान कहता है।

फल डारें अगोचर, आड़ी अंतराए पाताल।
वैराट वेद दोऊ कोहेड़ा, गूंथी सो छल की जाल।। २ ।।

इसकी फल और डालियां दिखाई नहीं देतीं। नीचे पाताल में छिप गई हैं। वैराट और वेद दोनों धुन्ध हैं जिन्होंने अलग-अलग अपनी जाली गूंथ रखी है।

विध दोऊ देखिए, एक नाभ दूजा मुख।
गूंथी जालें दोऊ जुगतें, मान लिए दुख सुख।। ३ ।।

दोनों की हकीकत देखिए तो वैराट की उत्पत्ति नाभि से हुई है और वेद की उत्पत्ति मुख से है। इन दोनों की युक्ति से जाली गुंथी है जिसमें सभी दुःख-सुख अनुभव करते हैं।

कोहेड़े दोऊ दो भांत के, एक वैराट दूजा वेद।
जीव जालों जाली बांधे, कोई जाने न छल भेद।। ४ ।।

एक वैराट और वेद की दो तरह की धुन्ध जाली में ही जीव बंधे हैं। पर इस छल को कोई जानता नहीं।

Nijanand App

खसम एक सबन का, नाहीं न दूसरा कोए।
ए विचार तो करे, जो आप सांचे होए।। २० ।।

धनी सबका एक है। दूसरा तो कोई है नहीं। ऐसा विचार तो वही कर सकता है जो स्वयं सच्चा हो।

खेलें सब बेसुध में, कोई बोल काढ़े विसाल।
उतपन सारी मोह की, सो होए जाए पंपाल।। २१ ।।

यह सब बेसुधी में खेल खेलते बड़े-बड़े वचन बोलते हैं, जबकि सारी सृष्टि मोह से पैदा हुई है और मिट जाने वाली है।

बिना दिवालें लिखिए, अनेक चित्रामन।
सो क्यों पावे खुद को, जाको मूल मोह सुंन।। २२ ।।

इस तरह यहां पर बिना दीवाल के अनेक तरह के चित्र बना रहे हैं। ऐसे लोग संसार के हैं जिनका मूल ही शून्य निराकार है, वह परब्रह्म को कैसे पा सकते हैं?

अनेक किव इत उपजे, वैराट सचराचर।
ए छल मोहोरे छल को, खेलत हैं सत कर।। २३ ।।

यहां पर अनेक प्रकार के कवि पैदा हुए जिन्होंने संसार को कभी चल, कभी अचल कहा है। ये सब छल के मोहरे हैं और इसी छल को सत्य मानकर खेलते हैं।

।। प्रकरण ।। १५ ।। चौपाई ।। ३६८ ।।

वैराट का कोहेड़ा

वैराट का फेर उलटा, मूल है आकास।
डारें पसरी पाताल में, यों कहे वेद प्रकास।। १ ।।

इस वैराट का फेरा उलटा है। इसका मूल आकाश में है और डालें पाताल में हैं। इस प्रकार वेदों का ज्ञान कहता है।

फल डारें अगोचर, आड़ी अंतराए पाताल।
वैराट वेद दोऊ कोहेड़ा, गूंथी सो छल की जाल।। २ ।।

इसकी फल और डालियां दिखाई नहीं देतीं। नीचे पाताल में छिप गई हैं। वैराट और वेद दोनों धुन्ध हैं जिन्होंने अलग-अलग अपनी जाली गूंथ रखी है।

विध दोऊ देखिए, एक नाभ दूजा मुख।
गूंथी जालें दोऊ जुगतें, मान लिए दुख सुख।। ३ ।।

दोनों की हकीकत देखिए तो वैराट की उत्पत्ति नाभि से हुई है और वेद की उत्पत्ति मुख से है। इन दोनों की युक्ति से जाली गुंथी है जिसमें सभी दुःख-सुख अनुभव करते हैं।

कोहेड़े दोऊ दो भांत के, एक वैराट दूजा वेद।
जीव जालों जाली बांधे, कोई जाने न छल भेद।। ४ ।।

एक वैराट और वेद की दो तरह की धुन्ध जाली में ही जीव बंधे हैं। पर इस छल को कोई जानता नहीं।

Nijanand App

देखलावने तुमको, कोहेड़े किए ए।
बताए देऊं आंकड़ी, छल बल की है जेह।।५।।

मोमिनों को खेल दिखाने के वास्ते ही इन दोनों कोहेड़े (धुन्ध) को बनाया है। इनकी आंकड़ी (हकीकत) को मैं बता देती हूं कि यह दोनों माया के छल और शक्ति की रचना हैं।

आंकड़ी एक इन भांत की, बांधी जोर सों ले।
आतम झूठी देखहीं, सांची देखें देह।।६।।

एक आंकड़ी बड़ी जोर से बांधी है जिससे आत्मा झूठी दिखती है और तन सच्चा दिखता है।

करें सगाई देह सों, नहीं आतमसों पेहेचान।
सनमंध पालें इनसों, ए लई सबों मान।।७।।

सारा संसार तन से रिश्ता करता है और आत्मा की पहचान होती ही नहीं। सारे सम्बन्ध इसी तन से ही पलते हैं, ऐसी जगत की रीति है।

नहवाए चरचे अरगजे, प्रीतें जिमावें पाक।
सनेह करके सेवहीं, पर नजर बांधी खाक।।८।।

इसी तन को नहलाते हैं, सुन्दर सुगन्धित तेल लगाते हैं, बड़े प्रेम से भोजन कराते हैं, प्रेम से सेवा करते हैं, पर यह खाक है। इससे रिश्ता गांठकर आशा लगाए बैठे हैं।

जीव गया जब अंग थें, तब अंग हाथों जालें।
सेवा जो करते सनेह सों, सो सनमंध ऐसा पालें।।९।।

इसी तन से जीव जब निकल जाता है तो अपने ही हाथों से उसी तन को जला देते हैं। जो बड़े प्यार से सेवा करते थे वह इस तरह का रिश्ता निभाते हैं।

हाथ पाऊं मुख नेत्र नासिका, सब सोई अंग के अंग।
तिन छूत लगाई घर को, प्यार था जिन संग।।१०।।

हाथ, पैर, मुख, नेत्र, नासिका, आदि सब अंग वही के वही रहते हैं। इनसे आज तक बड़ा प्यार था, परन्तु जीव निकल जाने के बाद वही तन अछूत हो जाता है।

अंग सारे प्यारे लगते, खिन एक रह्यो न जाए।
चेतन चले पीछे सो अंग, उठ उठ खाने धाए।।११।।

जो तन के अंग बड़े प्यारे लगते थे तथा जिनके बिना एक पल नहीं रहा जाता था, जीव निकल जाने के बाद वही दुश्मन लगते हैं। ऐसा लगता है कि हमें खा जाएंगे।

सनमंधी जब चल गया, अंग वैर उपज्या ताए।
सो तबहीं जलाए के, लियो सो घर बटाए।।१२।।

जब जीव चला जाता है तो उसी तन से दुश्मनी हो जाती है। फिर उसे घर से निकाल कर जला देते हैं। बाद में घर सम्पत्ति को हिस्सों में बांट लेते हैं।

छोड़ सगाई आतम की, करें सगाई आकार।
वैराट कोहेड़ा या बिध, उलटा सो कई प्रकार।।१३।।

आत्मा को छोड़कर तन से रिश्ता करते हैं, इस तरह का कोहेड़ा (धुन्ध) कई तरह से उलटा है।

Nijanand App

कई बिध यों उलटा, वैराट नेत्रों अंध।
चेतन बिना कहे छूत लागे, फेर तासों करे सनमंध।। १४ ।।

वैराट आंखों से अन्धा होने के कारण कई तरह से उलटा है। जब चेतन नहीं हो, तो कहते हैं कि छूत लग गई और चेतन होने पर उसी से सम्बन्ध करते हैं।

एक भेख जो विप्र का, दूजा भेख चंडाल।
जाके छुए छूत लागे, ताके संग कौन हवाल।। १५ ।।

एक तन ब्राह्मण का है। दूसरा तन चाण्डाल का है जिसे छूने से छूत मानते हैं और उसके साथ कैसा व्यवहार करते हैं।

चंडाल हिरदे निरमल, खेले संग भगवान।
देखलावे नहीं काहू को, गोप राखे नाम।। १६ ।।

यदि चाण्डाल का हृदय निर्मल हो तो उस तन के साथ भगवान सदा खेलता है। वह किसी प्रकार का दिखावा नहीं करता है और छिपकर रिझाता है।

अंतराए नहीं खिन की, सनेह सांचे रंग।
अहनिस दृष्ट आतम की, नहीं देहसों संग।। १७ ।।

चाण्डाल भगवान से एक क्षण का अन्तर नहीं करता और भगवान के प्रेम में मगन रहता है। उसकी आत्मदृष्टि सदा भगवान की तरफ रहती है। तन से उसका कोई मतलब नहीं होता।

विप्र भेख बाहेर दृष्टी, खट कर्म पाले वेद।
स्याम खिन सुपने नहीं, जाने नहीं ब्रह्म भेद।। १८ ।।

ब्राह्मण का तन बाहर की दृष्टि से षट कर्मों को पालने वाला होता है। उसकी विचारधारा में श्यामजी कभी सपने में भी नहीं हैं और न उसको परमात्मा के रहस्य का पता है।

उदर कुटम कारने, उत्तमाई देखावे अंग।
व्याकरण वाद विवाद के, अर्थ करें कई रंग।। १९ ।।

वह अपने परिवार का पेट भरने के लिए ही शरीर की स्वच्छता और उत्तमता दिखाता है और व्याकरण के वाद-विवाद में कई अर्थ करता है।

अब कहो काके छुए, अंग लागे छोत।
अधम तम विप्र अंगे, चंडाल अंग उद्दोत।। २० ।।

अब महामतिजी पूछते हैं कि बताओ, इन दोनों में से किसके तन को छूने से छूत लगनी चाहिए। ब्राह्मण का तन अन्धकार से भरा तुच्छ है और चाण्डाल का तन भगवान के अन्दर होने से पाक और साफ है।

पेहेचान सबों को देह की, आतम की नहीं दृष्ट।
वैराट का फेर उलटा, इन बिध सारी सृष्ट।। २१ ।।

संसार के सभी लोग तन को देखते हैं। आत्मा की तरफ नजर ही नहीं होती। इस तरह से सारे वैराट का मामला उलटा है।

Nijanand App

एक देखो ए अचंभा, चाल चले संसार।
जाहेर है ए उलटा, जो देखिए कर विचार।। २२ ।।

एक और आश्चर्य (हैरानी) की बात देखो जिसमें संसार चलता है। यदि दिल में विचार करके देखें तो यह जाहिरी में भी उलटा है।

सांचे को झूठा कहें, और झूठे को कहें सांच।
सो भी देखाऊं जाहेर, सब रहे झूठे रांच।। २३ ।।

यह सत् आत्मा को झूठा कहते हैं और झूठे शरीर को सत् माने बैठे हैं। संसार के सभी लोग झूठे शरीर में ही लिप्त हैं। इस बात को और जाहिर करके बताती हूं।

आकार को निराकार कहें, निराकार को आकार।
आप फिरे सब देखें फिरते, असत यों निरधार।। २४ ।।

यह शरीर जो मिट जाने वाला है उसे आकार कहते हैं और आत्मा जो अखण्ड है (अजर-अमर है) उसे निराकार कहते हैं। सारे जगत के जीव इसी चक्कर में घूम फिर रहे हैं। इस तरह से यह झूठा है।

मूल बिना वैराट खड़ा, यों कहे सब संसार।
तो ख्वाब के जो दम आपे, ताए क्यों कहिए आकार।। २५ ।।

सभी संसार के लोग कहते हैं कि यह वृक्ष रूपी ब्रह्माण्ड बिना जड़ (आधार) के खड़ा है। तो इस सपने के ब्रह्माण्ड के जो जीव हैं उन्हें आकार वाला कैसे कहा जाए?

आकार न कहिए तिनको, काल को जो ग्रास।
काल सो निराकार है, आकार सदा अविनास।। २६ ।।

जो जन्मता और मरता है उसे आकार वाला नहीं कहना चाहिए। मरने वाले (शरीर को) निराकार और सदा रहने वाले (आत्मा) को आकार (साकार) कहना ही ठीक है (उचित है)।

जिन राचो मृग जल दृष्टे, जाको नाम प्रपंच।
ए छल मायाऐं किया, ऐसे रचे उलटे संच।। २७ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि इस तरह से मृग-जल के प्रपंच (जाल) में मत फंसो। यह पूरा संसार उलटा है और संशय से भरा है।

।। प्रकरण ।। १६ ।। चौपाई ।। ३९५ ।।

वेद का कोहेड़ा

अब कहूं कोहेड़ा वेद का, जाकी मिहीं गूंथी जाल।
याकी भी नेक केहेके, देऊं सो आंकड़ी टाल।। १ ।।

वेद के कोहेड़े की जाली बड़ी बारीक गुंथी है। इसकी थोड़ी-सी हकीकत कहकर संशय मिटा देती हूं।

वैराट आकार ख्वाब का, ब्रह्मा सो तिनकी बुध।
मन नारद फिरे दसों दिसा, वेदें बांध किए बेसुध।। २ ।।

ब्रह्माण्ड का आकार सपने का है इसमें बुद्धि के मालिक ब्रह्माजी हैं। मन के मालिक नारदजी हैं। यह दसों दिशाओं में घूमते हैं। इस तरह से वेदों ने सबको बांधकर बेसुध कर रखा है।

Nijanand App

एक देखो ए अचंभा, चाल चले संसार।
जाहेर है ए उलटा, जो देखिए कर विचार।। २२ ।।

एक और आश्चर्य (हैरानी) की बात देखो जिसमें संसार चलता है। यदि दिल में विचार करके देखें तो यह जाहिरी में भी उलटा है।

सांचे को झूठा कहें, और झूठे को कहें सांच।
सो भी देखाऊं जाहेर, सब रहे झूठे रांच।। २३ ।।

यह सत् आत्मा को झूठा कहते हैं और झूठे शरीर को सत् माने बैठे हैं। संसार के सभी लोग झूठे शरीर में ही लिप्त हैं। इस बात को और जाहिर करके बताती हूं।

आकार को निराकार कहें, निराकार को आकार।
आप फिरे सब देखें फिरते, असत यों निरधार।। २४ ।।

यह शरीर जो मिट जाने वाला है उसे आकार कहते हैं और आत्मा जो अखण्ड है (अजर-अमर है) उसे निराकार कहते हैं। सारे जगत के जीव इसी चक्कर में घूम फिर रहे हैं। इस तरह से यह झूठा है।

मूल बिना वैराट खड़ा, यों कहे सब संसार।
तो ख्वाब के जो दम आपे, ताए क्यों कहिए आकार।। २५ ।।

सभी संसार के लोग कहते हैं कि यह वृक्ष रूपी ब्रह्माण्ड बिना जड़ (आधार) के खड़ा है। तो इस सपने के ब्रह्माण्ड के जो जीव हैं उन्हें आकार वाला कैसे कहा जाए?

आकार न कहिए तिनको, काल को जो ग्रास।
काल सो निराकार है, आकार सदा अविनास।। २६ ।।

जो जन्मता और मरता है उसे आकार वाला नहीं कहना चाहिए। मरने वाले (शरीर को) निराकार और सदा रहने वाले (आत्मा) को आकार (साकार) कहना ही ठीक है (उचित है)।

जिन राचो मृग जल दृष्टे, जाको नाम प्रपंच।
ए छल मायाऐं किया, ऐसे रचे उलटे संच।। २७ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि इस तरह से मृग-जल के प्रपंच (जाल) में मत फंसो। यह पूरा संसार उलटा है और संशय से भरा है।

।। प्रकरण ।। १६ ।। चौपाई ।। ३९५ ।।

वेद का कोहेड़ा

अब कहूं कोहेड़ा वेद का, जाकी मिहीं गूंथी जाल।
याकी भी नेक केहेके, देऊं सो आंकड़ी टाल।। १ ।।

वेद के कोहेड़े की जाली बड़ी बारीक गुंथी है। इसकी थोड़ी-सी हकीकत कहकर संशय मिटा देती हूं।

वैराट आकार ख्वाब का, ब्रह्मा सो तिनकी बुध।
मन नारद फिरे दसों दिसा, वेदें बांध किए बेसुध।। २ ।।

ब्रह्माण्ड का आकार सपने का है इसमें बुद्धि के मालिक ब्रह्माजी हैं। मन के मालिक नारदजी हैं। यह दसों दिशाओं में घूमते हैं। इस तरह से वेदों ने सबको बांधकर बेसुध कर रखा है।

Nijanand App

लगाए सब रब्दें, व्याकरण वाद अंधकार।
या बुधें बेसुध हुए, विवेक खाली विचार।। ३ ।।

व्याकरण के वाद-विवाद में सबको लड़ा रखा है। इस तरह से सारा संसार वेदों की बुद्धि से (ज्ञान से) बेसुध हो गया है। अन्धकार के ज्ञान में इनका विवेक और विचार शून्य हो गया है (रहा ही नहीं)।

बंध बांधे या विध, हर वस्त के बारे नाम।
सो बानी ले बड़ी कीनी, ए सब छल के काम।। ४ ।।

इस तरह का बंध बांध दिया है कि हर अक्षर के बारह नाम रख दिए हैं। वाणी का विस्तार कर दिया है। यह सब कपट (छल) का काम है।

लुगे लुगे के जुदे माएने, द्वादस के प्रकार।
उलटाए मूल माएने, बांधे अटकलें अपार।। ५ ।।

एक-एक शब्द के अलग-अलग मायने बारह तरह से करते हैं। मूल भावों को उलटा कर उलझा देते हैं। अटकल से तरह-तरह के अर्थ करते हैं।

अर्थ को डालने उलटा, अनेक तरफों ताने।
मूढ़ों को समझावने, रेहेस बीच में आने।। ६ ।।

अर्थ को उलटने के लिए व्याकरण से खींचातानी करते हैं और मूर्खों को समझाने के लिए बीच में कहानियां सुनाते हैं।

ऐसी कई आंकड़ियों मिने, बोलें बारे तरफ।
रेहेस रंचक धरें बीचमें, समझाए ना किन हरफ।। ७ ।।

ऐसी अनेक आंकड़ियां (घुंडिया, गांठें) हैं जिनके बारह-बारह अर्थ करते हैं, जिसकी किसी को भी हकीकत का पता चलता नहीं है। हकीकत को छिपाने के लिए बीच में मनगढ़ंत कहानियां सुनाते हैं।

बारे तरफों बोलत, एक अखर एक मात्र।
ऐसे बांध बतीस श्लोक में, बड़ा छल किया है सास्त्र।। ८ ।।

एक अक्षर में बारह मात्रा लगाकर बारह तरह से बोलते हैं। ऐसे बत्तीस अक्षर जोड़कर श्लोक बना कर शास्त्रों ने बड़ा छल किया है।

बारे मात्र एक अखर, अखर श्लोक बतीस।
छल एते आड़े अर्थके, और खोज करें जगदीस।। ९ ।।

एक अक्षर की बारह मात्राएं तथा एक श्लोक के बत्तीस अक्षर बनाकर (यानी एक अक्षर के बारह अर्थ और बत्तीस अक्षरों के तीन सौ चौरासी अर्थ हुए तो ऐसे श्लोक वाले वेदों का ज्ञान पढ़कर आप स्वयं सोचें कि हकीकत में क्या परमात्मा मिलेगा) परमात्मा की खोज करते हैं। जहां हकीकत के अर्थ के सामने इतने ज्यादा अर्थ हों तो वह परमात्मा कैसे मिलेगा?

अर्थ आड़े कई छल किए, तिन अर्थों में कई छल।
अखरा अर्थ भी ना होवहीं, किया भाव अर्थ अटकल।।१०।।

अर्थों की आड़ में भी कई तरह घुमा-फिराकर अर्थ करते हैं और दुनियां को ठगते हैं। अक्षर का तो अर्थ आता नहीं है पर भावार्थ अटकल से करते हैं।

Nijanand App

जाको नामै संस्कृत, सो तो संसे ही की कृत।
सो अर्थ दृढ़ क्यों होवहीं, जो एती तरफ फिरत।। ११ ।।

जिसका नाम संस्कृत है वह संशय से ही बनी है, क्योंकि इसके कई अर्थ निकलते हैं तो उस एक सच्चाई को कैसे पाया जाए?

सो पढ़े पंडित जुध करें, एक काने को टुकड़े होए।
आपसमें जो लड़ मरें, एक मात्र ना छोड़ें कोए।। १२ ।।

संस्कृत के पढ़े विद्वान बड़े आ की मात्रा के लिए झगड़ा करते हैं। वह एक मात्रा भी नहीं छोड़ते और आपस में लड़ मरते हैं।

ए वाद बानी सिर लेवहीं, सुध बुध जावे सान।
त्रास स्वांत न होवे सुपने, ऐसा व्याकरण ग्यान।। १३ ।।

इस वाद-विवाद की बेसुधी में जो वचन मुख से निकल जाते हैं, उसी को पकड़ लेते हैं। व्याकरण की व्याख्या में उलझे रहते हैं और उन्हें शान्ति नहीं मिलती है।

ए बानी ले बड़ी कीनी, दियो सो छल को मान।
सो खेंचा खेंच ना छूटहीं, लिए क्रोध गुमान।। १४ ।।

इस तरह से संस्कृत के श्लोकों की वाणी के ग्रन्थों का विस्तार किया। पण्डितों की आपस की खींचतान नहीं छूटती है तथा वह क्रोध और बुद्धि के अहंकार में ही भटकते हैं।

ए छल पंडित पढ़हीं, ताए मान देवें मूढ़।
बड़े होए खोले माएने, एह चली छल रूढ़।। १५ ।।

ऐसी छल की वाणी पढ़ने वालों को पण्डित कहते हैं और मूर्ख लोग ही उनका सम्मान करते हैं। यह पण्डित लोग अपने को बड़ा बताकर तरह-तरह के अर्थ करते हैं। ऐसी छल की रीति चल रही है।

सीधी इन भाखा मिने, माएने पाइए जित।
जो सब्द सब समझहीं, सो पकड़ें नहीं पंडित।। १६ ।।

सीधी भाषा जिसके अर्थ भी सीधे होते हैं और सभी लोग समझते हैं, उस भाषा को पण्डित लोग कभी ग्रहण नहीं करते हैं।

एक अर्थ न कहें सीधा, ए जाहेर हिन्दुस्तान।
अर्थ को डालने उलटा, जाए पढ़ें छल बान।। १७ ।।

हिन्दुस्तानी भाषा में वह पण्डित एक भी सीधी बात नहीं बताते हैं बल्कि अर्थ को उलटने के वास्ते छल की बोली (संस्कृत) ही बोलते हैं।

ए खेल जाको सोई जाने, दूजा खेल सारा छल।
ए छल के जीव न छूटे छल थें, जो देखो करते बल।। १८ ।।

हे ब्रह्मसृष्टियो! (सुन्दरसाथजी) देखो, सब जगह छल ही छल है। छल के जीव छल के ज्ञान (संस्कृत) से बाहर (मौँया से बाहर) नहीं जा सकते, चाहे कितनी ही आजमाइश (उपाय) कर लो।

Nijanand App

एक उरझन वैराटकी, दूजी वेद की उरझन।
ए नेक कही मैं तुमको, पर ए छल है अति घन।। १९ ।।

एक उरझन (उलझन) वैराट की है। इसी तरह दूसरी उलझन वेद की है। यह तो मैंने तुम्हें समझाने के लिए थोड़ी सी बताई है। इस छल का तो बहुत बड़ा विस्तार है।

मुख उदर के कोहेड़े, रचे मिने सुपन।
ए सुध काहू न परी, मिने झीलें मोह के जन।। २० ।।

एक मुख का (वेद), दूसरा नाभि का (वैराट), यह दोनों धुन्ध हैं जो सपने में बनाए गए हैं, इसलिए इसके अन्दर गफलत (बेसुधी) में खेलने वाले लोगों को इनकी पहचान नहीं होती।

वैराट वेदों देख के, बूझ करी सेवा एह।
देव जैसी पातरी, ए चलत दुनियां जेह।। २१ ।।

वैराट और वेद दोनों को देखकर के 'जैसा देव तैसी पूजा' के सिद्धान्त के अनुसार दुनियां चलती है और ऐसा समझकर सेवा करती है।

ए जो बोले साधू सास्त्र, जिनकी जैसी मत।
ए मोहोरे उपजे मोहके, तिनको ए सब सत।। २२ ।।

यहां के साधु तथा शास्त्रकारों की उत्पत्ति माया से हुई है और वह अपनी बुद्धि के अनुसार ही बोलते हैं। उनको यह माया का संसार सत् (सत्य, अखण्ड) लग रहा है।

तबक चौदे देखे वेदों, निराकार लों वचन।
उनमान आगे केहेके, फेर पड़े मांहें सुंन।। २३ ।।

वेदों ने चौदह लोकों को देखा और वचन से निराकार तक वर्णन किया। आगे अटकल से कहकर फिर निराकार में ही डूब गये (समा गए)।

ए देखो तुम जाहेर, पांचों उपजे तत्व।
ए मोह मिने मन खेलहीं, सब मन की उतपत।। २४ ।।

हे ब्रह्मसृष्टियो! तुम देखो, यह ब्रह्माण्ड पांच तत्वों से बना है। इसमें संशय में ही जीव भटकते हैं और जीव जन्मते हैं।

ए सारों में व्यापक, थावर और जंगम।
सबन थें एक है न्यारा, याको जाने सृष्टब्रह्म।। २५ ।।

सब चर (जंगम) और अचर (स्थावर) में जीव व्यापक है। इन सबसे न्यारा जो परब्रह्म है उसको केवल ब्रह्मसृष्टि ही जानती है।

दसों दिसा भवसागर, देखत एह सुपन।
आवरण गिरद मोह को, निराकार कहावे सुंन।। २६ ।।

दसों दिशाओं में स्वप्न का भवसागर है। इसके चारों तरफ मोहतत्व (संशय) का आवरण है, इसे निराकार और शून्य कहते हैं।

Nijanand App

ए इंड सारा कोहेड़ा, खेल चौदे भवन।
सुर असुर कई अनेक भांते, हुआ छल उतपन।। २७ ।।

चौदह लोक सब धुन्ध में हैं। इन सबमें माया व्यापक है। यहां पर देव और असुर कई तरह के संशय से भरे जीवों के साथ खेलते हैं।

वनस्पति पसु पंखी, आदमी जीव जंत।
मच्छ कच्छ सबसागर, रच्यो एह प्रपंच।। २८ ।।

यहां वनस्पति, पशु, पक्षी, आदमी, जीव, जन्तु, मछली, कछुआ तथा सागर सब झूठ के ही हैं।

जीवों मिने जुदी जिनसें, कहियत चारों खान।
थावर जंगम मिलके, लाख चौरासी निरमान।। २९ ।।

इसके अन्दर जीव तरह-तरह के तनों में चार तरह से (अण्डे से, शरीर से; पसीने से, अंकुर फोड़कर जमीन से) पैदा होते हैं जो पेड़ की तरह जड़ से, कोई पांव से, कोई पेट से, कोई पंख से एक स्थान पर खड़े रहते हैं। इस तरह से चौरासी लाख योनियों का निर्माण है।

कोई बैकुंठ कोई जमपुरी, कोई स्वर्ग पाताल।
सब खेलें ख्वाबी पुतले, आड़ी मोह सागर पाल।। ३० ।।

कोई बैकुण्ठ में, कोई यमपुरी में, कोई स्वर्ग में, कोई पाताल में यह सब सपने के जीव खेलते हैं। इसके आगे मोहतत्व (निराकार) का परदा पड़ा है।

जो बनजारे खेल के, तिन सिर जम को डंड।
कोइक दिन स्वर्ग मिने, पीछे नरक के कुंड।। ३१ ।।

इस संसार में जो जीव खेल रहे हैं, उनको यमराज के सामने जाना पड़ता है। कर्मों के हिसाब से कुछ दिन स्वर्ग का सुख लेकर पीछे नरक के कुण्ड में सजा भुगतनी पड़ती है।

लाठी तेरे लोक पर, संजमपुरी सिरदार।
जो जाने नहीं जगदीस को, तिन सिर जम की मार।। ३२ ।।

तेरह लोकों के ऊपर बैकुण्ठ में भगवान विष्णु मालिक हैं। जिसने उसे पहचान कर पूजा नहीं की उसे यमराज की मार खानी पड़ती है।

ए छल बनज छोड़ के, करे बैकुंठ वेपार।
ए सत लोक इनका, कोई गले निराकार।। ३३ ।।

संसार में कपट का रास्ता (धन्धा) छोड़कर जो बैकुण्ठ में जाने का प्रयत्न करते हैं, वह इसी बैकुण्ठ को सत् मान बैठे हैं और अन्त में निराकार में गल जाते हैं।

तबक चौदे इंड में, जिमी जोजन कोट पचास।
पहाड़ कुली अष्ट जोजन, लाख चौसठ बास।। ३४ ।।

चौदह लोक इसी ब्रह्माण्ड में हैं। इसमें पचास करोड़ योजन जमीन बताई गयी है। इसमें पहाड़ कुल आठ योजन में हैं तथा चौसठ लाख योजन में बस्ती है।

Nijanand App

पांच तत्व छठी आतमा, सास्त्र सबों ए मत।
यों निरमान बांध के, ले सुपन किया सत।। ३५ ।।

पांच तत्व तथा छठा जीव से बना शरीर सपने का है, इसको शास्त्रों में अपने मत में सत कहा है।

देखे सातों सागर, और देखे सातों लोक।
पाताल सातों देखिया, जागे पीछे सब फोक।। ३६ ।।

मैंने सातों सागरों को देखा (लवण, इक्षु रस, मधु, घृत, दधि, क्षीर, मीठा पानी) तथा सातों लोकों [भूलोक, भुवर्लोक, स्वर्गलोक, महर्लोक, जनलोक, तपलोक और सतलोक (बैकुण्ठ)], सातों पातालों (अतल, वितल, सुतल, तलातल, महातल, रसातल, और पाताल) देखा, परन्तु यह सब माया के हैं। पल में प्रलय में आने वाले हैं।

|| प्रकरण || १७ || चौपाई || ४३१ ||

प्रकरण अवतारों का

ए ऐसा था छल अंधेर, काहूं हाथ न सूझे हाथ।
बंध पड़े दृष्ट देखते, तामें आया सारा साथ।। १ ।।

इस अज्ञानता से भरे हुए संसार में जहां पर परब्रह्म की कोई सुध देने वाला नहीं है, जहां माया को देखते ही ऐसे बंध में पड़ जाते हैं, उसे देखने के लिए परमधाम से सुन्दरसाथ (ब्रह्मसृष्टि) आए।

तो पिया मिने आए के, सब छुड़ाई सोहागिन।
बोए के नूर प्रकासिया, बीज ल्याए मूल वतन।। २ ।।

पिया! ने अपनी ब्रह्मसृष्टियों को यहां खेल में आकर जागृत बुद्धि देकर माया से छुड़ाया। पिया ने मूल घर परमधाम से तारतम वाणी के ज्ञान का बीज लाकर सारे संसार में जागृत बुद्धि के ज्ञान का उजाला किया।

ए खेल किया तुम खातिर, तुम देखन आइयां जेह।
खेल देख के चलसी, घर बातां करसी एह।। ३ ।।

हे साथजी! यह खेल तुम्हारे लिए बनाया है इसे आप देखने आए हैं। इस खेल को देखकर हम वापस घर चलेंगे और घर चलकर क्या खेल देखा, इस पर बातें करेंगे।

तुम खेल देखन कारने, किया मनोरथ एह।
ए माप्या तुम वास्ते, कोई राखूं नहीं संदेह।। ४ ।।

तुमने खेल देखने की परमधाम में चाहना की थी, इसलिए अब तुम्हारे वास्ते यह खेल धनी ने बनाया और तुम्हारे वास्ते ही बेशक वाणी लाए हैं जिससे सारे संशय मिट जाएं।

ए खेल सांचा तो देख्या, जो अखंड करूं फेर।
पार वतन देखाय के, उड़ाऊं सब अंधेर।। ५ ।।

इस खेल का देखना तभी सत्य होगा जब इसे दुबारा अखण्ड करूं (पहला बृज का ब्रह्माण्ड अखण्ड हो चुका है)। अब तारतम वाणी के बल से **अक्षर** के पार का अपना घर दिखा करके सब अज्ञानता दूर कर देंगे।

Nijanand App

पांच तत्व छठी आतमा, सास्त्र सबों ए मत।
यों निरमान बांध के, ले सुपन किया सत।। ३५ ।।

पांच तत्व तथा छठा जीव से बना शरीर सपने का है, इसको शास्त्रों में अपने मत में सत कहा है।

देखे सातों सागर, और देखे सातों लोक।
पाताल सातों देखिया, जागे पीछे सब फोक।। ३६ ।।

मैंने सातों सागरों को देखा (लवण, इक्षु रस, मधु, घृत, दधि, क्षीर, मीठा पानी) तथा सातों लोकों [भूलोक, भुवर्लोक, स्वर्गलोक, महर्लोक, जनलोक, तपलोक और सतलोक (बैकुण्ठ)], सातों पातालों (अतल, वितल, सुतल, तलातल, महातल, रसातल, और पाताल) देखा, परन्तु यह सब माया के हैं। पल में प्रलय में आने वाले हैं।

|| प्रकरण || १७ || चौपाई || ४३१ ||

प्रकरण अवतारों का

ए ऐसा था छल अंधेर, काहूं हाथ न सूझे हाथ।
बंध पड़े दृष्ट देखते, तामें आया सारा साथ।। १ ।।

इस अज्ञानता से भरे हुए संसार में जहां पर परब्रह्म की कोई सुध देने वाला नहीं है, जहां माया को देखते ही ऐसे बंध में पड़ जाते हैं, उसे देखने के लिए परमधाम से सुन्दरसाथ (ब्रह्मसृष्टि) आए।

तो पिया मिने आए के, सब छुड़ाई सोहागिन।
बोए के नूर प्रकासिया, बीज ल्याए मूल वतन।। २ ।।

पिया ने अपनी ब्रह्मसृष्टियों को यहां खेल में आकर जागृत बुद्धि देकर माया से छुड़ाया। पिया ने मूल घर परमधाम से तारतम वाणी के ज्ञान का बीज लाकर सारे संसार में जागृत बुद्धि के ज्ञान का उजाला किया।

ए खेल किया तुम खातिर, तुम देखन आइयां जेह।
खेल देख के चलसी, घर बातां करसी एह।। ३ ।।

हे साथजी! यह खेल तुम्हारे लिए बनाया है इसे आप देखने आए हैं। इस खेल को देखकर हम वापस घर चलेंगे और घर चलकर क्या खेल देखा, इस पर बातें करेंगे।

तुम खेल देखन कारने, किया मनोरथ एह।
ए माप्या तुम वास्ते, कोई राखूं नहीं संदेह।। ४ ।।

तुमने खेल देखने की परमधाम में चाहना की थी, इसलिए अब तुम्हारे वास्ते यह खेल धनी ने बनाया और तुम्हारे वास्ते ही बेशक वाणी लाए हैं जिससे सारे संशय मिट जाएं।

ए खेल सांचा तो देख्या, जो अखंड करूं फेर।
पार वतन देखाय के, उड़ाऊं सब अंधेर।। ५ ।।

इस खेल का देखना तभी सत्य होगा जब इसे दुबारा अखण्ड करूं (पहला बृज का ब्रह्माण्ड अखण्ड हो चुका है)। अब तारतम वाणी के बल से **अक्षर** के पार का अपना घर दिखा करके सब अज्ञानता दूर कर देंगे।

Nijanand App

ए दसों दिस लोक चौदके, विचार देखे वचन।
मोह सागर मथ के, काढ़े सो पांच रतन।।६।।

इस संसार के चौदह लोकों की दसों दिशाओं में फैले सब ज्ञान के वचनों को देखा। ऐसे भवसागर के फैले ज्ञान का मंथन करके पांच रत्न (अक्षर की पांच वासनाओं) की जानकारी पायी।

पेहेले कहे मैं साथ को, इन पांचो के नाम।
सुकदेव और सनकादिक, कबीर सिव भगवान।।७।।

मैंने इन पांचों के नाम सुन्दरसाथ को पहले भी बताए हैं। इनमें एक शुकदेवजी, दूसरे सनकादिक ऋषि (सनक, सनन्दन, सनातन, सनतकुमार), तीसरे कबीर, चौथे शिवजी तथा पांचवें भगवान विष्णु हैं।

नारायन विष्णु एक अंग, लखमी याथें उतपन।
एह समावे याही में, ए नहीं वासना अन।।८।।

नारायण तथा विष्णु एक ही रूप हैं और लक्ष्मीजी की उत्पत्ति भी इन्हीं से है। यह सभी एक ही स्वरूप नारायण में समा जाते हैं, यह जुदा नहीं हैं।

और एक कागद काढ़िया, सुकदेवजी का सार।
हदियों का कोहेड़ा, बेहदी समाचार।।९।।

इस संसार में से एक और ग्रन्थ मिला जिसमें शुकदेवजी की वाणी का सार है। यह संसार के जीवों को धुंध के समान है, क्योंकि संसार के जीवों की उत्पत्ति निराकार से है। इस भागवत में बेहद का ज्ञान है जो ब्रह्मसृष्टि तथा ईश्वरी सृष्टि को बेहद की खबर देने वाला है।

अवतार चौबीस विष्णु के, बैकुंठ थें आवें जाएं।
ए बिध जाहेर त्यों करूं, ज्यों सनंध सब समझाए।।१०।।

इस संसार में चौबीस अवतार विष्णु के बैकुण्ठ से आते जाते हैं। इसकी भी हकीकत बताती हूं जिससे सबको पूर्ण ज्ञान का पता चल जाए।

अवतार एकैस इनमें, तिन आड़ा हुआ कल्पांत।
और कहावें तीन बड़े, भी कहूं तिनकी भांत।।११।।

इन चौबीस में से इक्कीस अवतार हो जाने के बाद संसार का प्रलय हो गया। अब शेष तीन बड़े अवतारों की हकीकत बताती हूं।

अवतार एक श्रीकृष्ण का, मूल मथुरा प्रगट्या जेह।
दीदार देवकी वसुदेव को, दिया चतुरभुज एह।।१२।।

इनमें मथुरा की जेल में प्रकट होने वाला एक अवतार श्री कृष्ण का है। जिसने चार भुजा (चतुर्भुज) स्वरूप धारण कर वसुदेव और देवकी को दर्शन दिया।

वचन कहे वसुदेव को, फिरे बैकुंठ अपनी ठौर।
पीछे प्रगटे दोए भुजा, सो सरूप सनंध और।।१३।।

वसुदेव और देवकी को पूर्व जन्म की तपस्या और वरदान की याद दिलाकर और अब मेरे जन्म के बाद क्या करना है कहकर बैकुण्ठ गए। यह एक अवतार हुआ। इसके बाद दो भुजा वाला स्वरूप प्रकट हुआ। इस स्वरूप की हकीकत अलग है (गोलोक की शक्तियों ने इस तन में जेल में ही प्रवेश किया)।

Nijanand App

वसुदेव गोकुल ले चले, ताए न कहिए अवतार।
सो तो नहीं इन हद का, अखंड लीला है पार।। १४ ।।

वसुदेवजी इस दो भुजा के स्वरूप को लेकर गोकुल में नन्द के घर पहुंचाने गए। गोलोक शक्ति होने के कारण इन्हें भगवान विष्णु का अवतार नहीं कहना। यह इस संसार के नहीं हैं। इनकी लीला सबलिक ब्रह्म में अखण्ड है।

ए कही सब तुम समझने, भानने मनकी भ्रांत।
बेहद विस्तार है अति बड़ा, या ठौर आड़ा कल्पांत।। १५ ।।

तुम्हारे मन के संशय मिटाने के लिए तथा तुम्हें समझाने के लिए बताया है। बेहद का ज्ञान बहुत भारी है। यह संसार प्रलय के अन्दर आता है, अर्थात् बनता और मिटता है।

भी कहूं तुमें समझाए के, तुम भानो धोखा मन।
अवतार सो अक्रूर संगे, जाए लई मथुरा जिन।। १६ ।।

तुम्हें और भी स्पष्ट बताती हूं जिससे तुम्हारे मन में किसी प्रकार का संशय बाकी न रह जाए। इसी गोलोक की शक्ति वाले स्वरूप को अक्रूरजी मथुरा ले गए।

इनमें भी है आंकड़ी, बिना तारतम समझी न जाए।
सो तुम दिल दे समझियो, नीके देऊं बताए।। १७ ।।

इसमें भी आंकड़ी है (भेद है)। जो बिना तारतम वाणी के समझ में नहीं आ सकती, इसलिए सुन्दरसाथजी! ध्यान से समझना मैं अच्छी तरह से बताती हूं।

सात चार दिन भेख लीला, खेले गोवालों संग।
सात दिन गोकुल मिने, दिन चार मथुरा जंग।। १८ ।।

सात दिन इस गोकुल में तथा चार दिन इस मथुरा में ग्वाल के में भेष गोलोक की शक्ति से ग्वालों में रहे। गोकुल में सात दिन लीला की तथा मथुरा में चार दिन युद्ध किया।

धनक भान गज मल मारे, तब हुए दिन चार।
पछाड़ कंस वसुदेव छोड़े, या दिन थें अवतार।। १९ ।।

धनुष तोड़ा, कुबलयापीड हाथी को मारा। चाणूर और मुष्टिक पहलवानों को मारा। उसके बाद कंस को मारा तथा वसुदेव-देवकी को बंध से छुड़ाया। यह चार दिन की लीला है। इसके बाद भगवान विष्णु के (तेइसवें) अवतार की लीला है।

अब आई बात हद की, हिसाब चौदे भवन।
सब बात इत याही की, कहे अटकलें और वचन।। २० ।।

यहां से हद के क्षर पुरुष विष्णु की लीला है। चौदह लोकों के ज्ञानी इन्हीं श्री कृष्ण का वर्णन करते हैं। निराकार के ऊपर की बात अपने अनुमान से ही कहते हैं।

जुध किया जरासिंधसों, रथ आयुध आए खिन मांहें।
तब कृष्ण विष्णु मय भए, बैकुंठ में विष्णु तब नांहें।। २१ ।।

जब जरासिन्ध से युद्ध किया, उस समय बैकुण्ठ से रथ और शस्त्र एक क्षण में मंगवा लिए। तब श्री कृष्ण पूर्ण भगवान विष्णुमयी रूप हो गए जो अवतार कहलाते हैं। उस समय भगवान विष्णु बैकुण्ठ में नहीं थे।

Nijanand App

बैकुंठ थें जोत फिर आई, सिसुपाल किया हवन।
मुख समानी श्रीकृष्ण के, यों कहे वेद वचन।। २२ ।।

शिशुपाल को मारा। उसका जीव बैकुण्ठ गया, परन्तु वहां भगवान विष्णु के न होने से जीव पुनः वापस आया और श्री कृष्ण के मुख में समा गया ऐसा यहां के सब ग्रन्थ कहते हैं।

किया राज मथुरा द्वारका, बरस एक सौ और बार।
प्रभास सब संघार के, जाए खोले बैकुंठ द्वार।। २३ ।।

इस भगवान विष्णु के अवतार श्री कृष्ण ने मथुरा तथा द्वारिका में एक सौ बारह वर्ष राज्य किया। अपने ही यदुवंशियों को मारकर स्वयं बैकुण्ठ पधारे।

गोप हुता दिन एते, बड़ी बुध का अवतार।
नेक अब याकी कहूं, ए होसी बड़ो विस्तार।। २४ ।।

आज दिन तक बड़ी बुद्धि के अवतार (जागृत बुद्धि के अवतार) अखण्ड बृज रास के आनन्द में ही मगन रहे। अब सम्वत् १७३५ में मेरे हृदय में विराजमान होकर प्रकट हुए, यहां से पल-पल में तारतम वाणी की वृद्धि (फैलाव) हो रही है।

कोइक काल बुध रास की, लई ध्यान में सकल।
अब आए बसी मेरे उदर, वृध भई पल पल।। २५ ।।

चार हजार छः सौ साठ वर्ष तक जागृत बुद्धि अखण्ड बृज रास के आनन्द में ही मगन रही। अब सम्वत् १७३५ में मेरे हृदय में विराजमान होकर प्रकट हुई। यहां से प्रत्येक पल तारतम वाणी की वृद्धि (फैलाव) हो रही है।

अंग मेरे संग पाई, मैं दिया तारतम बल।
सो बल ले वैराट पसरी, ब्रह्मांड कियो निरमल।। २६ ।।

मेरे अंग में जागृत बुद्धि आई तो मैंने उसे तारतम (नूर) की शक्ति प्रदान की। अब उस शक्ति से जागृत बुद्धि का ज्ञान फैलाकर इस ब्रह्माण्ड के अज्ञान के अन्धकार को दूर किया।

दैत कालिंगा मार के, सब सीधा होसी तत्काल।
लीला हमारी देखाए के, टालसी जम की जाल।। २७ ।।

कलियुगी अज्ञानता के दैत्य (राक्षस) को मारा और परमधाम की अखण्ड लीला का ज्ञान देकर यमराज के बन्धन (आवागमन के चक्कर) से मुक्ति दिलाकर सब संसार को भवसागर पार करने का सुगम रास्ता दिखाया।

दैत ऐसा जोरावर, देखो व्याप रह्या वैराट।
काम क्रोध अहंकार ले, सब चले उलटी बाट।। २८ ।।

यह कलियुग रूपी अज्ञानता का दैत्य बड़ा शक्तिशाली है। यह सारे वैराट के मानव के अन्दर बैठा है। इस संसार के जीव काम, क्रोध और अहंकार के वश में होकर उलटा रास्ता चलते हैं।

याको संघारसी एक सब्दसों, बेर ना होसी लगार।
लोक चौदे पसरसी, इन बुध सब्दको मार।। २९ ।।

जागृत बुद्धि के एक शब्द की मार से यह कलियुगी अज्ञानता का दैत्य समाप्त हो जाएगा। इसे मारने में तथा चौदह लोकों में जागृत बुद्धि के ज्ञान फैलने में एक पल भी नहीं लगेगा।

Nijanand App

वैराट सारा लोक चौदे, चले आप अपनी मत।
मन माने खेलें सब कोई, ग्रास लिए असत।। ३० ।।

चौदह लोकों के ब्रह्माण्ड के सारे जीव अपने ही अज्ञान के अन्धकार में भटकते हैं तथा अज्ञान के कारण ही मनमाने रूप से खेलते हैं।

मैं मारूं तो जो होए कछुए, ना खमें हरफ की डोट।
मेरी बुधें एक लवे से, ऐसे मरे कोटान कोट।। ३१ ।।

महामतिजी कहते हैं कि इस अज्ञान रूपी कलियुगी दैत्य का कुछ रूप नहीं है। अगर कुछ रूप होता तो मैं इसे मार देती। यह तो मेरे जागृत बुद्धि के ज्ञान के एक शब्द की चोट भी सहन नहीं कर सकता। मेरी बुद्धि की जरा-सी चोट से अर्थात् हुक्म से ऐसे करोड़ों कलियुग समाप्त हो जाते हैं।

उठी है बानी अनेक आगम, याको गोप है उजास।
वैराट सनमुख होयसी, बुध नूर के प्रकास।। ३२ ।।

पहले लोगों ने जागृत बुद्धि के ज्ञान की बड़ी-बड़ी भविष्यवाणियां कही हैं, किन्तु अभी तक जागृत बुद्धि का यह ज्ञान छिपा ही रहा। अब यह ज्ञान सारे संसार में फैल जाएगा और अज्ञानता मिट जाएगी।

चलसी सब एक चालें, दूजा मुख ना बोले वाक।
बोले तो जो कछू होए बाकी, फोड़ उड़ायो तूल आक।। ३३ ।।

फिर सभी एक परब्रह्म अक्षरातीत के पूजक बन जाएंगे। फिर किसी और का नाम भी नहीं लेंगे। क्योंकि आक के फल को तोड़कर तूल (रुई) जैसे उड़ा दिए हैं, अर्थात् अज्ञानता सब मिटा दी है और अब कुछ शेष नहीं रहा।

अब एह वचन कहूं केते, देसी दुनियां को उद्धार।
मेरे संग आए बड़ी निध पाई, सो निराकार के पार।। ३४ ।।

अब जागृत बुद्धि की वाणी की कहां तक कहूं, यह दुनियां का उद्धार करेगी। इस जागृत बुद्धि ने मेरा साथ पाने से बड़ी अखण्ड शक्ति निराकार के पार का तारतम (नूर) ज्ञान पाया।

पार बुध पाए पीछे, याको होसी बड़ो मान।
अछर नेक ना छोड़े न्यारी, ए उदयो नेहेचल भान।। ३५ ।।

पार के तारतम ज्ञान की शक्ति पाने से इस जागृत बुद्धि का मान बढ़ गया। यह ऐसा अखण्ड ज्ञान का सूर्य उदय हुआ कि अब अक्षर ब्रह्म इसे एक पल के लिए भी नहीं छोड़ेंगे।

अवतार जो नेहेकलंक को, सो अश्व अधूरो रह्यो।
पुरुख देख्यो नहीं नैनों, तुरी को कलंकी तो कह्यो।। ३६ ।।

शास्त्रों ने नेहेकलंक (निष्कलंक) अवतार होने की घोषणा की थी और घोड़े पर सवार न होने से अधूरा बताया था, क्योंकि किसी ने भी घोड़े पर सवार होने वाले पुरुष को नहीं देखा था, इसलिए घोड़े को कलंकी कहा गया। हे साथजी! श्री देवचन्द्रजी महाराज को बृज, रास और धाम का ही ज्ञान था, जागनी की सुध नहीं थी, इसलिए अवतार अधूरा रहा और प्रमाण के लिए चौपाई–

सुन्दरबाईऐं देखिया, दिल के दीदों मांहें।
बृज रास और धाम की, पर जागनी की सुध नाहें।

(सनन्ध ४१/१६)

Nijanand App

यों उनहत्तर पातियां, लिखियां धाम धनी पर।
तब सैयां हम भी लिखी, पर नेक न दई खबर।।

(सनन्ध ४१/२२)

इसलिए उनको विजयाभिनन्द बुध निष्कलंक अवतार का दर्जा प्राप्त नहीं हुआ। यह कार्य श्री प्राणनाथजी ने किया, इसलिए वह विजयाभिनन्द बुध निष्कलंक अवतार कहलाए।

अवतार या बुध के पीछे, अब दूसरा क्यों कर होए।
विकार काढ़े विश्व के, सब किए अवतार से सोए।। ३७ ।।

अब सम्वत् १७३५ में जागृत बुद्धि के अवतार जाहिर हो जाने के बाद दूसरा और कोई अवतार कैसे हो सकता है, क्योंकि इस जागृत बुद्धि ने सारे संसार के अवगुण (संशय) निकाल दिए हैं, इसलिए अब अन्य अवतार का क्या काम, जब सारे काम ही पूरे कर दिए हैं।

अवतार से उत्तम हुए, तहां अवतारका क्या काम।
जहां जमे हुआ सब का, दूजा नेक न राख्या नाम।। ३८ ।।

जब अवतार से भी न होने वाला काम कर दिया है, तो अवतार की अब आवश्यकता ही क्या है? क्योंकि जागृत बुद्धि (परा शक्ति) ने दूसरा कोई ज्ञान छोड़ा ही नहीं। इसके अन्दर सब ज्ञान आ गए हैं।

जहां पैए पाए पार के, हुआ नेहेचल नूर प्रकास।
तित अगिए अवतार में, क्या रह्या उजास।। ३९ ।।

जागृत बुद्धि ने पार के रास्ते बता दिए और अखण्ड ज्ञान का सूर्य उदय हो गया। सूर्य उदय होने के बाद में जुगनू के समान चमकने वाले बैकुण्ठ के अवतारों की क्या महत्ता होगी?

समझियो तुम या बिध, अवतार ना होवे अन।
पुरुख तो पेहेले ना कह्यो, विचार देखो वचन।। ४० ।।

हे सुन्दरसाथजी! इस प्रकार से तुम स्पष्ट समझ लेना कि अब और कोई दूसरा अवतार नहीं होगा। पहले घोड़े के ऊपर अर्थात् श्री देवचन्द्रजी के तन में राजजी महाराज के स्वयं जाहिर न होने के कारण से घोड़ा अधूरा कहा गया है जो अब महामति के तन से सम्वत् १७३५ में जाहिर हो गया है। इन वचनों का जरा विचार कर देखो।

।। प्रकरण ।। १८ ।। चौपाई ।। ४७१ ।।

गोकुल लीला

जिन किनको धोखा रहे, जुदे कहे अवतार।
तो ए किनकी बुधें विष्णु को, जगाए पोहोंचाए पार।। १ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं, हे सुन्दरसाथ! किसी को किसी प्रकार का संशय न रहे, इसलिए मैंने अलग-अलग अवतारों का वर्णन किया है। अब यह विचार करने की बात है वह कौन सी जागृत बुद्धि का अवतार है जो भगवान विष्णु को भी जागृत करके भवसागर से पार करके अखण्ड करेगा।

Nijanand App

यों उनहत्तर पातियां, लिखियां धाम धनी पर।
तब सैयां हम भी लिखी, पर नेक न दई खबर।।

(सनन्ध ४१/२२)

इसलिए उनको विजयाभिनन्द बुध निष्कलंक अवतार का दर्जा प्राप्त नहीं हुआ। यह कार्य श्री प्राणनाथजी ने किया, इसलिए वह विजयाभिनन्द बुध निष्कलंक अवतार कहलाए।

अवतार या बुध के पीछे, अब दूसरा क्यों कर होए।
विकार काढ़े विश्व के, सब किए अवतार से सोए।। ३७ ।।

अब सम्वत् १७३५ में जागृत बुद्धि के अवतार जाहिर हो जाने के बाद दूसरा और कोई अवतार कैसे हो सकता है, क्योंकि इस जागृत बुद्धि ने सारे संसार के अवगुण (संशय) निकाल दिए हैं, इसलिए अब अन्य अवतार का क्या काम, जब सारे काम ही पूरे कर दिए हैं।

अवतार से उत्तम हुए, तहां अवतारका क्या काम।
जहां जमे हुआ सब का, दूजा नेक न राख्या नाम।। ३८ ।।

जब अवतार से भी न होने वाला काम कर दिया है, तो अवतार की अब आवश्यकता ही क्या है? क्योंकि जागृत बुद्धि (परा शक्ति) ने दूसरा कोई ज्ञान छोड़ा ही नहीं। इसके अन्दर सब ज्ञान आ गए हैं।

जहां पैए पाए पार के, हुआ नेहेचल नूर प्रकास।
तित अगिए अवतार में, क्या रह्या उजास।। ३९ ।।

जागृत बुद्धि ने पार के रास्ते बता दिए और अखण्ड ज्ञान का सूर्य उदय हो गया। सूर्य उदय होने के बाद में जुगनू के समान चमकने वाले बैकुण्ठ के अवतारों की क्या महत्ता होगी?

समझियो तुम या बिध, अवतार ना होवे अन।
पुरुख तो पेहेले ना कह्यो, विचार देखो वचन।। ४० ।।

हे सुन्दरसाथजी! इस प्रकार से तुम स्पष्ट समझ लेना कि अब और कोई दूसरा अवतार नहीं होगा। पहले घोड़े के ऊपर अर्थात् श्री देवचन्द्रजी के तन में राजजी महाराज के स्वयं जाहिर न होने के कारण से घोड़ा अधूरा कहा गया है जो अब महामति के तन से सम्वत् १७३५ में जाहिर हो गया है। इन वचनों का जरा विचार कर देखो।

।। प्रकरण ।। १८ ।। चौपाई ।। ४७१ ।।

गोकुल लीला

जिन किनको धोखा रहे, जुदे कहे अवतार।
तो ए किनकी बुधें विष्णु को, जगाए पोहोंचाए पार।। १ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं, हे सुन्दरसाथ! किसी को किसी प्रकार का संशय न रहे, इसलिए मैंने अलग-अलग अवतारों का वर्णन किया है। अब यह विचार करने की बात है वह कौन सी जागृत बुद्धि का अवतार है जो भगवान विष्णु को भी जागृत करके भवसागर से पार करके अखण्ड करेगा।

Nijanand App

सुकें अवतार सब कहे, पर बुध में रह्या उरझाए।
ए भी सीधा ना कहे सक्या, तो क्यों इन कही जाए।। २ ।।

शुकदेवजी ने बाकी अवतारों का वर्णन किया था, पर बुध अवतार के कहने में वह भी उलझ गए। जब शुकदेवजी भी वर्णन नहीं कर सके तो दूसरे कैसे कर सकते हैं?

ए तो अछरातीत की, लीला हमारी जेह।
पेहेले संसा सबका भान के, पीछे भी नेक कहूं बिध एह।। ३ ।।

यह तो हमारे अक्षरातीत धनी की लीला है। पहले सबका संशय मिटा करके इनकी भी थोड़ी हकीकत बताऊंगी।

वैराट की बिध कही तुमको, जिन कछू राखों संदेह।
अखंड गोकुल और प्रतिबिंब, ए भी समझाऊं दोए।। ४ ।।

मैंने तुमको चौदह लोकों के ब्रह्माण्ड क्षर पुरुष की हकीकत बताई। अब तुम्हें कोई संशय न रहे इसलिए अखण्ड गोकुल और प्रतिबिम्ब गोकुल दोनों का भेद बताती हूं।

ए खेल देख्या तो सांचा, जो अखंड करूं इन बेर।
पार वतन देखाय के, सब उड़ाऊं अंधेर।। ५ ।।

यह खेल जो हम देख रहे हैं, इसको अखण्ड कर देंगे तो यह भी सत् हो जाएगा, परन्तु इसके पहले अखण्ड परमधाम का ज्ञान देकर सबकी अज्ञानता मिटा देंगे।

अंतराए नहीं एक खिन की, अखंड हम पे उजास।
रास लीला श्रीकृष्ण गोपी, खेले सदा अविनास।। ६ ।।

सुन्दरसाथजी! अब हमारे पास ऐसा अखण्ड जागृत बुद्धि का ज्ञान है जिससे किसी प्रकार का एक पल भी अन्तर (संशय) नहीं रहेगा। श्री कृष्ण और गोपियां जो बृज और रास में थे, वह आज भी सबलिक ब्रह्म में बृज की दिन और रात की तथा रास में केवल रात की अखण्ड लीला कर रहे हैं।

प्रतिबिंब लीला या दिन थें, फेर के गोकुल आए।
चले मथुरा द्वारका, बैकुंठ बैठे जाए।। ७ ।।

रास लीला के बाद में यह ब्रह्माण्ड फिर से नया बना और इस गोकुल में प्रतिबिम्ब की लीला की। सात दिन गोकुल लीला के बाद चार दिन मथुरा की लीला कर भगवान विष्णु के अवतार के रूप में एक सौ बारह वर्ष तक द्वारिका में लीला कर भगवान विष्णु बैकुण्ठ वापस पधारे।

तारतम नूर प्रगट्या, तिन तेजें फोरयो आकास।
लागी सिखर पाताल लो, अब रहे ना पकरयो प्रकास।। ८ ।।

अब तारतम वाणी (जागृत बुद्धि) के ज्ञान का सूर्य निकल आया है, जिसके अखण्ड तेज की किरणों से ऊपर बैकुण्ठ तक और नीचे पाताल तक अखण्ड ज्ञान फैल रहा है जो किसी के रोकने से नहीं रुकेगा।

किरना सबमें कुलांभियां, गयो वैराट को अग्यान।
दृढ़ाए चित चौदे लोकको, उड़ाए दियो उनमान।। ९ ।।

अब सारे जगत में तारतम की किरणें फैल गईं और पूरे क्षर के ब्रह्माण्ड का अज्ञान मिट गया। चौदह लोकों के जीवों का अनुमान मिट गया और पूर्ण ब्रह्म के ज्ञान की दृढ़ता आ गई।

Nijanand App

अब जोत पकरी ना रहे, बीच में बिना ठौर।
पसरके देखाइया, बृज अखंड जो और।। १० ।।

अब इस ज्ञान की रोशनी बीच में कहीं नहीं रुकेगी। यह सारे ब्रह्माण्ड के बाहर बेहद तक फैलकर अखण्ड बृज जो योगमाया में है, में भी सबको ज्ञान हो जाएगा।

बताए देऊं बिध सारी, बृज बस्यो जिन पर।
अग्यारा बरस लीला करी, रास खेल के आए घर।। ११ ।।

सबलिक ब्रह्म योगमाया में बृज लीला किस तरह से अखण्ड है, उसकी सारी हकीकत बताती हूं। जहां ग्यारह वर्ष लीला करने के बाद योगमाया के ब्रह्माण्ड में जाकर रास लीला खेली और रास लीला के बाद घर (परमधाम) वापस आए।

गोकुल जमुना त्रट भला, पुरा ब्यालीस बास।
पुरा पासे एक लगता, ए लीला अखंड विलास।। १२ ।।

अखण्ड गोकुल में यमुनाजी का किनारा अति सुन्दर है। यह बयालीस कालोनियों (मुहल्लों) में बसा है। उसी के पास लगती हुई एक और कालोनी (पुरी) है जहां रास (विलास) की अखण्ड लीला हो रही है।

बास बस्ती बसे घाटी, तीन खूने गाम।
कांठे पुरा टीवा ऊपर, उपनंद का ए ठाम।। १३ ।।

पुरियों में आबादी है तथा गांव तीन तरफ बसा है। जिसके किनारे पर एक टीला है। टीले पर उपनन्द का घर है।

तरफ दूजी पुरे सारे, बीच बाट धेन का सेर।
इत खेले नंद नंदन, संग गोवालों के घेर।। १४ ।।

दूसरी तरफ अच्छी कालोनी बसी है। जिसके बीच में से गायों के जाने का रास्ता है। यहां पर ग्वाल बालों के घर में नन्दनन्दन श्री कृष्ण खेल रहे हैं।

पुरा पटेल सादूल का, बसे तरफ दूजी ए।
तरफ तीसरी वृखभानजी, बसे नाके तीनों ले।। १५ ।।

दूसरी तरफ सादूल पटेल की कालोनी है और तीसरी तरफ वृषभानजी की कालोनी है। इस प्रकार तीनों कोनों पर कालोनियां बसी हैं।

नंदजी के पुरे सामी, दिस पूरव जमुना त्रट।
छूटक छाया वनस्पति, बृध आड़ी डालों बट।। १६ ।।

नन्दजी की कालोनी के सामने पूर्व दिशा में यमुनाजी का किनारा है। जहां पर थोड़ी-थोड़ी दूरी पर वृक्षों की छाया है तथा बट के वृक्षों की लम्बी-लम्बी आड़ी-टेड़ी डालियां हैं।

सकल बन छाया भली, सोभित जमुना किनार।
अनेक रंगे बेलियां, फल सुगंध सीतल सार।। १७ ।।

यमुनाजी के किनारे पर वन की बड़ी सुन्दर छाया है। जहां पर अनेक प्रकार की बेलें वृक्षों पर चढ़ी हैं और फलों की सुगन्ध से भरी शीतल वायु आती है।

Nijanand App

तीन पुरे तीन मामों के, बसे ठाट बस्ती मिल।
आप सूरे तीनों ही, पुरे नंद के पाखल।। १८ ।।

तीन कालोनियां तीन मामाओं की हैं जो बस्ती से मिली हुई ही बसी हैं। यह तीनों मामा बड़े बहादुर हैं और नन्दजी की कालोनी (मुहल्ला) के चौगिर्द रहते हैं।

गांगा चांपा और जेता, ए मामा तीनों के नाम।
दखिन दिस और पछिम दिस, बसे फिरते गाम।। १९ ।।

गांगा भाई, चांपा भाई और जेता भाई यह तीनों मामाओं के नाम हैं जो दक्षिण की दिशा में और पश्चिम की दिशा में घेर कर बसे हैं।

नंदजी के आठ मंदिर, मांडवे एक मंडान।
पीछे बाड़े गौओं के, तामें आथ सर्वे जान।। २० ।।

नन्दजी के मकान में आठ कमरे हैं तथा बीच में एक आंगन है और इसके पीछे गौओं का बाड़ा है जिसमें सब गायें रहती हैं।

रेत झलके आंगने, दूध चरी चूल्हा आगल।
आईजी इन ठौर बैठें, और बैठें सखियां मिल।। २१ ।।

आंगन में रेत चमक रही है और आगे चूल्हे के ऊपर दूध उबलता है। यशोदा मैया इसी ठिकाने सब सखियों के साथ मिलकर बैठती हैं।

मंदिर मोदी तेजपाल को, इत चरी चूल्हा पास।
कोइक दिन आए रहे, याको मथुरा में बास।। २२ ।।

तेजपाल मोदी का कमरा चरी चूल्हा के पास है। वह कुछ दिन यहां आकर रहते हैं। वैसे उनका घर मथुरा में है।

सरूप दस इत आरोगें, पाक साक अनेक।
भागवंती बाई भली पेरे, रसोई करे विवेक।। २३ ।।

यहां पर नन्दजी के घर दस सदस्यों की सुन्दर रसोई बनती है। यहां पर भागवन्तीबाईजी रसोई बड़े भाव से बनाती हैं।

लाड़लो नंद जसोमती, रोहिनी बलभद्र बाल।
पालक पुत्र कल्यानजी, वाको पुत्र गोपाल।। २४ ।।

श्री कृष्णजी, नन्दजी, यशोदा मैया, रोहिणीजी, बलदाऊजी तथा पालक पुत्र (गोदी लिया) कल्याणजी तथा उनके पुत्र गोपालजी रहते हैं।

बेहेने दोऊ जीवा रूपा, भेलियां रहें मोहोलान।
और बाई भागवंती, नारी घर कल्यान।। २५ ।।

दो बहनें जीवा और रूपा भी इस महल में रहती हैं तथा कल्याणजी की पत्नी भागवन्तीबाई रहती हैं।

Nijanand App

पुरो जो वृखभान को, भेलो भाई लखमन।
नंदजी के उत्तर दिसे, बसत बास पूरन।। २६ ।।

वृषभानजी की कालोनी में उनके भाई लखमनजी भी रहते हैं। नन्दजी के मकान की उत्तर दिशा में वृषभान की सुन्दर कालोनी है।

सरूप साते भली भांते, आरोगें अंन पाक।
कल्यान बाई रसोई करे, विध विध के बहु साक।। २७ ।।

यहां पर सात सदस्य अच्छी प्रकार भोजन आरोगते हैं। कल्याणबाई अनेक प्रकार की सब्जियां बनाती हैं।

राधाबाई पिता वृखभानजी, प्रभावती बाई मात।
सुदामा कल्यानजी, याथें छोटो कृष्णजी भ्रात।। २८ ।।

राधिकाजी के पिता श्री वृषभानजी तथा माता प्रभावतीबाई, भाई सुदामाजी, कल्याणजी और सबसे छोटे कृष्णजी रहते हैं।

कल्याण बाई नारी सुदामा, अंग धरत अति बड़ाई।
करत हांसी कई भांतें, याकी स्यामसों सगाई।। २९ ।।

कल्याणबाई सुदामाजी की पत्नी हैं जो बहुत ही सयानी और चतुर हैं। वह अपनी ननद राधाबाई से तरह-तरह से हंसी करती हैं। राधाजी की मंगनी श्यामजी (श्री कृष्णजी) से हुई है।

मंदिर छे मांडवे आगे, चरी चढ़े दूध माट।
स्यामा गोद प्रभावती, ले बैठत हैं खाट।। ३० ।।

वृषभानजी के आंगन के आगे छः (६) कमरे हैं, जहां पर मटकों में दूध उबाला जाता है। जहां पर प्रभावतीबाई अपनी गोदी में राधिकाजी को लेकर खाट पर बैठती हैं।

मांगा किया राधाबाई का, पर ब्याहे नहीं प्राणनाथ।
मूल सनमंधे एके अंगे, विलसत वल्लभ साथ।। ३१ ।।

राधाजी की मंगनी श्री कृष्णजी के साथ हुई थी, परन्तु जाहिरी रूप से शादी (लगन) नहीं हुई थी। यह दोनों ही परमधाम के मूल सम्बन्धी (राजजी-श्यामाजी) एक ही अंग हैं, जो अपने धनी के साथ आनन्द से खेलती हैं।

घुरसे गोरस हेत में, घर घर होत मथन।
खेले सब में सांवरो, मिने बाहेर आंगन।। ३२ ।।

घर-घर में दही का मथना होता है तथा सभी के घर में भीतर-बाहर आंगन में सांवरिया खेलते हैं।

पुरे सारे बीच चौरे, बैठे गोप बूढ़े भराए।
चारों पोहोर गोठ घूघरी, खेलते दिन जाए।। ३३ ।।

सब कालोनियों के बीच में एक बड़ा चबूतरा है जहां वृद्ध लोग इकट्ठे बैठते हैं और दिन भर घुंघरी (गेहूं की खीर) खाते हैं और इस तरह हंसते-खेलते दिन व्यतीत होते हैं।

Nijanand App

और सबे गौचारने, गोप गोवाला जाए बन।
भोर के बन संझा लों, यों होत बृज वरतन।। ३४ ।।

सभी गोप और ग्वाले गाएं चराने वन में जाते हैं। प्रातः वन में जाते हैं और शाम को लौटते हैं। इस प्रकार बृज लीला हो रही है।

तेजपाल मोदी वलोट पूरे, जो कछू चाहिए सोए।
घृत लेवे बड़े बड़े ठौरों, और बिरतिया होए।। ३५ ।।

तेजपाल मोदी यहां पर सामान के बदले सामान जो जिसको चाहिए लेते-देते हैं। वह बड़े-बड़े घरों से घी लेते हैं और आपस में रिश्ते-नाते भी करवाते हैं।

घोलिए इत घोल करने, आवत बृज में जे।
फेर जाए रहे मथुरा, वस्त भाव ले दे।। ३६ ।।

यहां और भी व्यापारी बृज में व्यापार करने आते हैं और सामान को ले दे करके मथुरा में जाकर बसते हैं।

स्याम संग गोवाल ले, खेलत जमुना घाट।
विनोद में हम आवें जाएं, जल भरने इन बाट।। ३७ ।।

श्री कृष्णजी ग्वालों के साथ यमुनाघाट पर खेलते हैं और सखियां भी प्रसन्न मन से इस रास्ते से यमुना से जल भरने आती-जाती हैं।

विलास बृज में पियाजीसों, बरतत एह बात।
वचन अटपटे वेधें सब को, अहनिस एही तात।। ३८ ।।

बृज में अपने पिया (श्री कृष्णजी) के साथ हम आनन्द के साथ खेलते थे और रात-दिन आपस में धनी की हंसी के अटपटे वचन सबको तड़पाया करते थे।

पिउ प्रेमें भीगा खेलहीं, पुरे सारो मांहें।
खेले खिन जासों ताए दूजा, सूझे नहीं कछु क्यांहें।। ३९ ।।

श्री कृष्णजी प्रेम में मस्त सब कालोनियों में (फलीया मां) खेल रहे हैं। वह जिसके साथ एक पल भी खेल लेते हैं वह श्री कृष्ण का ही हो जाता है। उसे और फिर कुछ सूझता ही नहीं।

हम संग खेलें कई रंगे, जाते जमुना पानी।
आठों पोहोर अटकी अंगे, एह छब एह बानी।। ४० ।।

जब हम यमुनाजी से जल भरने जाते थे तो हमारे साथ भी कई तरह की लीला करते थे। श्री कृष्णजी की छवि और बोली आठों पहर दिन-रात हमारे दिल में बसी रहती थी।

घर घर आनंद उछव, उछरंग अंग न माए।
विलास विनोद पिया संगे, अह निस करते जाए।। ४१ ।।

घर-घर में आनन्द और उत्सव हो रहे हैं और खुशियों का पारावार नहीं है। श्री कृष्णजी के साथ में आनन्द की लीला करते रात-दिन व्यतीत होते हैं।

Nijanand App

सुंदर बालक मधुरी बानी, घर ल्यावें गोद चढ़ाए।
सेज्याऐं खिन में प्रेमें पूरा, सुख देवें चित चाहे।।४२ ।।

श्री कृष्णजी का स्वरूप अति सुन्दर बालक का है और वह बोली बड़ी मीठी बोलते हैं। हम सखियां गोदी में उठाकर अपने घर ले जाती थीं और एक ही पल में वह किशोर रूप धारण कर चित-चाहा सेज्या का सुख हमको देते थे।

बाछरू ले बन पधारे, आठवें दसवें दिन।
कबूं गोवरधन फिरते, मांहें खेलें बारे बन।।४३ ।।

बछड़े लेकर आठवें दसवें दिन जब श्री कृष्णजी वन में जाते हैं तो वह कभी गोवर्धन पहाड़ के पास तथा कभी बारह वनों में खेलते हैं।

अखंड लीला अहनिस, हम खेलें पिया के संग।
पूरे पिउजी मनोरथ, ए सदा नवले रंग।।४४ ।।

हम रात-दिन पिया के साथ अखण्ड लीला करते थे तथा प्रीतम भी नित्य नए-नए आनन्द देकर हमारी इच्छा पूरी करते थे, यह लीला आज भी अखण्ड है।

श्री राज बृज आए पीछे, बृज वधू मथुरा ना गई।
कुमारका संग खेल करते, दान लीला यों भई।।४५ ।।

श्री राजजी महाराज के ब्रज में श्री कृष्ण के तन में प्रकट होने पर कोई भी ब्रजवधू मथुरा नहीं गई। छोटी-छोटी लड़कियां (कुमारिकाएं) खेलते समय हमारे साथ रहती थीं तथा श्री कृष्णजी उनके साथ दान लीला करते थे।

खेल खेलें कुमारका, चीले कुल अभ्यास।
दूध दधी छोटे बासन, करे रंग रस बन विलास।।४६ ।।

अपनी माताओं की रीतियों को देखकर कुमारिकाएं भी वैसे ही खेल खेली थीं। वह छोटे-छोटे बर्तनों में दूध दही लेकर वन में आनन्द की लीला करने जाती थीं।

बृज वधू मिने खेलने, संग केतिक जाए।
सांवरो इत दान लेने, करे आड़ी लकुटी ताए।।४७ ।।

ब्रज की गोपियों के साथ कई कुमारिकाएं भी खेलने वन में जाती थीं। श्री कृष्णजी वन-दान लेने के लिए लाठी आड़ी लगा देते थे (टोल टैक्स का बैरियर)।

दूध दधी माखन ल्यावें, हम पियाजी के काज।
तित दधी हमारा छीन के, देवें गोवालों को राज।।४८ ।।

हम श्री कृष्णजी के वास्ते घर से दूध, दही और माखन लेकर वन में जाते थे, श्री कृष्णजी वहां हमारा दही ग्वालों को दे देते थे।

भाग जांए गोवाल न्यारे, हम पकड़ राखें पिउ पास।
पीछे हम एकांत पिया संग, करें बन में विलास।।४९ ।।

ग्वाले दही लेकर अलग भाग जाते थे और श्री कृष्णजी हमें पकड़कर अपने पास बिठा लेते थे, जिससे हम पीछे अकेले में प्रीतम के साथ वन में विलास करते थे जो लीला आज भी अखण्ड है।

Nijanand App

कुमारका हम संग रेहेती, पिउ खेलते सखियन।
मूल सनमंध कुमारकाओं का, या दिन थें उतपन।।५० ।।

पियाजी के साथ खेलते समय कुमारिकाएं भी हमारे साथ रहती थीं इस लीला को देखकर ही उनका सनमंध (सम्बन्ध) यहां से जागृत हुआ।

अखंड लीला अति भली, नित नित नवले रंग।
इन जोतें सब जाहेर किया, हम सखियां पिया के संग।।५१ ।।

यह ब्रज की लीला जो अखण्ड है, यहां नित्य ही नए-नए आनन्द होते हैं जो तारतम वाणी के उजाले से हम अपने धनी के साथ कैसा आनन्द करती थीं, ज्ञान हो गया।

आवे जब उजालियां, हम खेलें लेकर ढ़ोल।
पिया करें विनोद हांसियां, सो कहे न जाए बोल।।५२ ।।

जब रात उजाली होती थी तो हम पिया के साथ ढोल बजाकर खेलते थे। धनी श्री कृष्णजी हमारे साथ तरह-तरह के विनोद (हंसी) की बातें करते थे, जिनका वर्णन सम्भव नहीं है।

उलसे गोकुल गाम सारा, हेत हरख अपार।
धन धान वस्तर भूखन, द्रव्य अखूट भंडार।।५३ ।।

सारा गोकुल गांव आनन्द मंगल की उमंगों से भरा हुआ है। धन, अनाज, वस्त्र, आभूषण तथा अन्य सभी सामग्री के अखूट भण्डार (कभी न खत्म होने वाले) भरे पड़े हैं।

जनम व्याह नित प्रते, सारे पुरे अनेक होए।
नेक कारज करे कछुए, तो बुलावे सब कोए।।५४ ।।

प्रतिदिन हर कालोनी में (फलीया मां) कहीं जन्म, कहीं विवाह-लगन होता था। किसी के यहां थोड़ा भी उत्सव होता था तो सबको निमन्त्रण देकर बुलाया जाता था।

नाटारंभ कई बाजंत्र, धन खरचें अहीर उमंग।
साथ सब सिनगार कर, हम आवें अति उछरंग।।५५ ।।

सभी ग्वाले बड़ी उमंग में खूब धन खर्च करते थे और बाजा बजाकर नाचते थे। गोपियां भी शृंगार करके बड़ी उमंग में आती थीं।

बलगें विनोदें हमसों, देखते सब जन।
पर कोई न विचारे उलटा, सब कहे एह निसन।।५६ ।।

सबके देखते ही बालक स्वरूप श्री कृष्णजी गोपियों से आकर लिपट जाते थे, परन्तु बालक समझकर कोई उलटे विचार नहीं करता था।

बात याकी हम जाने, और जाने हमारी एह।
ना समझे कोई दूसरा, ए अंदर का सनेह।।५७ ।।

अपने धनी श्री कृष्णजी की बात हम समझते थे और हमारी बात कृष्णजी समझते थे। दूसरा कोई हमारे आपस के अन्दर के प्रेम को नहीं समझ पाया।

Nijanand App

ए होत है हम कारने, पिया पूरे मनोरथ मन।
इन समें की मैं क्यों कहूं, साथ सबे धंन धंन।।५८।।

यह सब हमारे मन की इच्छा पूरी करने के लिए होता था। इस समय के आनन्द का पारावार नहीं था, सब बड़े उमंग में थे।

बृज सारी करी दिवानी, और पिया तो वचिखिन।
जहां मिले तहां एही बातें, विनोद हांस रमन।।५९।।

श्री कृष्णजी ने अपने प्रेम के वशीभूत सारे ब्रज को दीवाना बना रखा है और वह बहुत चतुर हैं। जहां भी मिलते हैं गोपियों से हंसी-विनोद की ही बातें करते हैं।

नंद जसोदा गोवाल गोपी, धेन बछ जमुना बन।
थिर चर सब पसु पंखी, नित नित लीला नौतन।।६०।।

नन्दजी, यशोदाजी, ग्वाल, गोपी, गायें, बछड़े, यमुनाजी, वन, पशु, पक्षी, चर तथा अचर रोज ही नई लीला करते हैं।

अब ए लीला कहूं केती, अलेखे अति सुख।
बरस अग्यारे खेले प्रेमें, सखियनसों सनमुख।।६१।।

अब इस लीला को कहां तक कहूं? यह बेशुमार सुख की लीला है। ग्यारह वर्ष तक बड़े प्रेम के साथ सखियों के साथ खेल किया।

एक दिन गौ चारने, पिउ पोहोंचे वृन्दावन।
गोवाल गौ सब ले वले, पीछे जोग माया उतपन।।६२।।

एक दिन गाय चराने पियाजी वृन्दावन गए। ग्वाल सब गायें लेकर वापस आ गए। पीछे योगमाया का ब्रह्माण्ड बनाया।

ए लीला यामें एते दिन, कालमाया को ब्रह्मांड।
एह कल्पांत करके, फेर उपज्यो अखंड।।६३।।

इतने दिन तक ब्रज की लीला कालमाया के ब्रह्माण्ड में की। फिर उसका प्रलय करके इस योगमाया में सबलिक ब्रह्म में उसे अखण्ड कर दिया।

सदा लीला जो बृज की, मैं कही जो याकी बिध।
अब कहूं वृन्दावन की, ए तो अति बड़ी है निध।।६४।।

इस तरह से ब्रज की लीला जो अखण्ड की है उसकी हकीकत है। अब आगे वृन्दावन की कहती हूं जो और बड़े आनन्द की लीला है।

।। प्रकरण ।। १९ ।। चौपाई ।। ५३५ ।।

जोगमाया को प्रकरण

अब जोत पकरी न रहे, दूजा बेधिया आकास।
जाए लिया इंड तीसरा, जहां अखंड रजनी रास।।१।।

तारतम वाणी के ज्ञान की रोशनी अब रोके नहीं रुकती। क्षर ब्रह्माण्ड (कालमाया) के बाद हमने दूसरी ब्रज की लीला को योगमाया में देखा और अब इस तारतम वाणी के बल से तीसरे ब्रह्माण्ड सबलिक में पहुंचे, जहां हमारी अखण्ड रास की लीला हो रही है।

Nijanand App

ए होत है हम कारने, पिया पूरे मनोरथ मन।
इन समें की मैं क्यों कहूं, साथ सबे धंन धंन।।५८ ।।

यह सब हमारे मन की इच्छा पूरी करने के लिए होता था। इस समय के आनन्द का पारावार नहीं था, सब बड़े उमंग में थे।

बृज सारी करी दिवानी, और पिया तो वचिखिन।
जहां मिले तहां एही बातें, विनोद हांस रमन।।५९ ।।

श्री कृष्णजी ने अपने प्रेम के वशीभूत सारे ब्रज को दीवाना बना रखा है और वह बहुत चतुर हैं। जहां भी मिलते हैं गोपियों से हंसी-विनोद की ही बातें करते हैं।

नंद जसोदा गोवाल गोपी, धेन बछ जमुना बन।
थिर चर सब पसु पंखी, नित नित लीला नौतन।।६० ।।

नन्दजी, यशोदाजी, ग्वाल, गोपी, गायें, बछड़े, यमुनाजी, वन, पशु, पक्षी, चर तथा अचर रोज ही नई लीला करते हैं।

अब ए लीला कहूं केती, अलेखे अति सुख।
बरस अग्यारे खेले प्रेमें, सखियनसों सनमुख।।६१ ।।

अब इस लीला को कहां तक कहूं? यह वेशुमार सुख की लीला है। ग्यारह वर्ष तक बड़े प्रेम के साथ सखियों के साथ खेल किया।

एक दिन गौ चारने, पिउ पोहोंचे वृन्दावन।
गोवाल गौ सब ले वले, पीछे जोग माया उतपन।।६२ ।।

एक दिन गाय चराने पियाजी वृन्दावन गए। ग्वाल सब गायें लेकर वापस आ गए। पीछे योगमाया का ब्रह्माण्ड बनाया।

ए लीला यामें एते दिन, कालमाया को ब्रह्मांड।
एह कल्पांत करके, फेर उपज्यो अखंड।।६३।।

इतने दिन तक ब्रज की लीला कालमाया के ब्रह्माण्ड में की। फिर उसका प्रलय करके इस योगमाया में सबलिक ब्रह्म में उसे अखण्ड कर दिया।

सदा लीला जो बृज की, मैं कही जो याकी बिध।
अब कहूं वृन्दावन की, ए तो अति बड़ी है निध।।६४ ।।

इस तरह से ब्रज की लीला जो अखण्ड की है उसकी हकीकत है। अब आगे वृन्दावन की कहती हूं जो और बड़े आनन्द की लीला है।

।। प्रकरण ।। १९ ।। चौपाई ।। ५३५ ।।

जोगमाया को प्रकरण

अब जोत पकरी न रहे, दूजा बेधिया आकास।
जाए लिया इंड तीसरा, जहां अखंड रजनी रास।।१ ।।

तारतम वाणी के ज्ञान की रोशनी अब रोके नहीं रुकती। क्षर ब्रह्माण्ड (कालमाया) के बाद हमने दूसरी ब्रज की लीला को योगमाया में देखा और अब इस तारतम वाणी के बल से तीसरे ब्रह्माण्ड सबलिक में पहुंचे, जहां हमारी अखण्ड रास की लीला हो रही है।

Nijanand App

इन दोऊ थें न्यारा मंडल, जाको कहियत हैं रास।
तहां खेल स्याम सखियनका, ए लीला अविनास।। २ ।।

यह ब्रह्माण्ड दोनों लीलाओं से न्यारा है जिसको रास कहते हैं। यहां पर सखियों के साथ श्री श्याम (कृष्णजी) अविनाशी अखण्ड लीला कर रहे हैं।

या ठौर जोगमाया रच्यो, सब सामग्री समेत।
तहां हद सब्द न पोहोंचही, तुमे तो भी कहूं संकेत।। ३ ।।

इस लीला की सम्पूर्ण सामग्री योगमाया की है। यहां का वर्णन क्षर ब्रह्माण्ड के शब्दों से बताना सम्भव नहीं है, फिर भी तुम्हें कुछ इशारे से बताती हूं।

जिनस जुगत कहूं केती, अनेक सुख अखंड।
जोगमायाए उपाया, कोई सुख सरूपी ब्रह्मांड।। ४ ।।

इस योगमाया के ब्रह्माण्ड की सामग्री का कैसे वर्णन करूं? यह अनेक अखण्ड सुखों से भरपूर है। योगमाया में सारा ब्रह्माण्ड अखण्ड सुखों का ही है।

ए बानी नीके विचारियो, अंतर मांहें बाहेर।
तुमें जगाऊं कर जागनी, देखाए देऊं जाहेर।। ५ ।।

इस वाणी को अच्छी तरह से अन्दर-बाहर विचार करके देखना। हे साथजी! तुमको मैं जागृत करके दिखा देती हूं।

क्योंए न आवे सब्द में, जोगमाया की बिध।
तो भी देखाऊं कछुयक, लीला हमारी निध।। ६ ।।

योगमाया की हकीकत को शब्दों में लाना सम्भव नहीं है, फिर भी थोड़ा-सा अपनी लीला का वर्णन करती हूं।

हम देखे वृन्दावन इतथें, तहां भी खेलें पिया साथ।
करें विनोद नित नए, बनही मिने विलास।। ७ ।।

हम यहां से बैठे-बैठे वृन्दावन को देख रहे हैं। जहां हमने अपने धनी के साथ लीला की थी और रोज ही बड़ी खुशी के साथ वन में अनेक प्रकार से विलास की लीलाएं की थीं, जो लीला आज भी अखण्ड है।

काहूं न पाइए जोगमायाकी, हम बिना पेहेचान।
वासना पांचों अछर की, भले कहावें आप सुजान।। ८ ।।

हमारे बिना योगमाया की हकीकत कोई बता नहीं सकता। अक्षर की पांच वासनाएं भले ही चतुर सुजान हैं, फिर भी वह इसकी जानकारी नहीं रखतीं।

ए माया हमारियां, याके हमपे विचार।
और उपजे सब इनथें, ए हमारी आग्या- कार।। ९ ।।

यह माया दोनों हमारी हैं और इनकी जानकारी भी हमारे ही पास है। यह हमारी आज्ञा के अधीन हैं, जबकि बाकी संसार इनसे पैदा हुआ है।

Nijanand App

रासलीला पेहेले करी, जो मिने वृन्दावन।
आनंद-कारी जोगमाया, अविनासी उतपन।। १० ।।

वृन्दावन में पहले रास लीला की जो आनन्द देने वाली योगमाया में आज भी अखण्ड है।

जोगमाया की जुगत जुई, एक रस एक रंग।
एक संगे सदा रेहेना, अंगना एकै अंग।। ११ ।।

योगमाया की हकीकत अलग है। यहां सबको समान आनन्द है और यहां हम सब एक ही प्रीतम की अंगनाओं की लीला अखण्ड है।

आतम सदीवे एक है, वासना एकै अंग।
मूल आवेस जोगमाया पर, सुख अखंड के रंग।। १२ ।।

हमारी सभी की आत्मा सदा से एक है और हम एक ही धनी की अंगना हैं। धनी का मूल आवेश योगमाया में आकर हमें अखण्ड सुख दे रहा है।

एक अंगे रंगे संगे, नो क्यों हुई अंतराए।
इन सब्द में है आंकड़ी, बिना तारतम समझी ना जाए।। १३ ।।

जब हम सब एक ही धनी के अंग हैं और एक साथ हमारी लीला होती है, तो फिर अन्तर्ध्यान क्यों हुए, यह एक भेद वाली बात है जो बिना तारतम वाणी के समझ में नहीं आ सकती।

आंकड़ी अंतरध्यान की, सो ए कहूं सनंध।
कोई न जाने हम बिना, इन तारतम के बंध।। १४ ।।

अन्तर्ध्यान की आंकड़ी की हकीकत कहती हूं, क्योंकि इसे हमारे बिना कोई नहीं जानता। तारतम वाणी के ज्ञान से ही इस आंकड़ी (गांठ) को मैं खोलती हूं।

जगाए आवेस लेयके, तब इत भए अंतरध्यान।
विलास विरह चित चौकस करने, याद देने घर धाम।। १५ ।।

श्री राजजी महाराज ने हम दोनों (अक्षर और ब्रह्मसृष्टि) को योगमाया में मगन हुआ देखा, तो अपने आवेश को वापस खींच लिया। तब हम दोनों चौंके और श्री कृष्ण का स्वरूप अन्तर्ध्यान हो गया। श्री राजजी महाराज ने विलास की लीला, विरह की लीला तथा घर की याद दिलाने हेतु हमारे चित्त को सावधान किया।

जोगमाया की जुगत, और न जाने कोए।
और कोई तो जाने, जो कोई दूसरा होए।। १६ ।।

योगमाया की इस हकीकत को हमारे बिना और कोई नहीं जानता और कोई जान भी कैसे सकता है? वहां हमारे बिना कोई था ही नहीं।

जोगमायाए जाग्रत होए, जल जिमी वाए अगिन।
थिर चर सब पसु पंखी, तत्व सबे चेतन।। १७ ।।

योगमाया में जल, जमीन, हवा, अग्नि, चल, अचल, पशु-पक्षी तथा सभी तत्व जागृत और चेतन हैं।

Nijanand App

एक जरा तिन जिमी का, ताके तेज आगे सूर कोट।
सो सूरज दृष्टें न आवही, इन जिमी जरे की ओट।। १८ ।।

योगमाया की जमीन के एक छोटे से रेत के टुकड़े के सामने यहां की कालमाया के यह करोड़ों सूर्य भी नहीं टिक सकते। उस अंश के तेज की उपमा करोड़ों सूर्यों से भी नहीं दी जा सकती।

हेम जवेर के बन कहूं, तो ए सब झूठी वस्त।
सोभा जो अविनास की, कही न जाए मुख हस्त।। १९ ।।

सोने और जवाहरात की भी उपमा दूं तो भी यह झूठे हैं। उस अखण्ड की शोभा का वर्णन यहां की झूठी जबान या कलम से नहीं हो सकता।

बरनन करूं एक पात की, सो भी इन जुबां कही न जाए।
कोट ससि जो सूर कहूं, तो एक पात तले ढंपाए।। २० ।।

योगमाया के एक पत्ते का वर्णन भी यहां की जबान से नहीं हो सकता। करोड़ों सूर्य और चन्द्रमा एक पत्ते की रोशनी में छिप जाते हैं।

सुतेज ससि बन पसु पंखी, तत्व सबें सुतेज।
सुतेज थिर चर जो कछू, सुतेज रेजा रेज।। २१ ।।

यहां का चन्द्रमा, वन, पशु, पक्षी तथा सभी तत्व तेजमयी हैं। यहां के चल, अचल या जो कुछ भी है, के कण-कण में नूर ही नूर भरा है।

किरना बन जिमीय की, सामी किरना ससि प्रकास।
नूर हम पे खेले नूर में, प्रेमें पियासों रास।। २२ ।।

इस जमीन और वन की किरणें और सामने वहां के चन्द्रमा की किरणें सब नूरी हैं। हम भी बड़े प्रेम में मग्न होकर प्रेम से पिया के साथ रास की लीला खेलते थे जो लीला अखण्ड है।

वस्तर भूखन इन जिमी के, सो मुख कहे न जाए।
तो सुख इन सरूप के, क्यों कर इत बोलाए।। २३ ।।

इस जमीन के वस्त्र और आभूषणों की शोभा इस मुख से वर्णन नहीं हो सकती, तो फिर वहां के स्वरूपों की शोभा का वर्णन कैसे किया जाए?

इन सुख बातां बोहोत हैं, सो नेक कह्यो प्रकास।
पर ए भी जोगमाया मिने, जो कहियत हैं अविनास।। २४ ।।

यहां बहुत ही अखण्ड सुख है जिसकी थोड़ी-सी जानकारी दी है। योगमाया में होने के कारण से यह सदा अखण्ड है।

या ठौर लीला करके, हम घर आए सब मिल।
या इंड कल्पांत करके, फेर अखंड किए मिने दिल।। २५ ।।

यहां रास लीला करने के बाद योगमाया से हम वापस परमधाम आए तथा इस लीला को समाप्त कर केवल ब्रह्म (बुद्धि) से हटाकर अक्षर के हृदय (सबलिक ब्रह्म) में अखण्ड कर दिया।

Nijanand App

हम तो सब धाम आए, अछर आपने घर।
अखंड रजनी रास लीला, खेल होत या पर।। २६ ।।

हम सब अपने परमधाम में जागे और अक्षर ब्रह्म अक्षरधाम में जागे, परन्तु रास लीला की रात्रि अखण्ड होकर उसी तरह से सबलिक ब्रह्म में लीला आज भी हो रही है। हम, श्री राजजी और श्यामाजी उसमें नहीं हैं। केवल हमारे जीव अखण्ड हैं।

हमही खेले बृज रास में, हमही आए इत।
घरों बैठे हम देखहीं, एही तमासा तित।। २७ ।।

हम ही ब्रज रास में खेले और खेलने के बाद हम ही घर (परमधाम) आए। जहां बैठकर हम ही इस अखण्ड लीला को बैठे-बैठे देख रहे हैं।

देखे बृज रास नीके, खेल किया पर पर।
ले भोग विरह विलास को, हम आए निज घर।। २८ ।।

ब्रज रास के खेल को अच्छी तरह से देखकर तथा विलास और विरह के सुख-दुःख को देखकर हम घर (परमधाम) आए।

देखे दोऊ सुख दुख, तो भी कछुक रह्यो संदेह।
सत सरूपें तो फेर, मंडल रचियो एह।। २९ ।।

सुख-दुःख देखने पर भी कुछ चाहना बाकी रह गई, इसलिए सत् स्वरूप ने धनी के हुक्म से यह तीसरा कालमाया का जागनी का ब्रह्माण्ड रचा।

ए खेल किया हम वास्ते, हम देखन आइयां एह।
दोऊ के मनोरथ पूरनें, ए रच्या तमासा ले।। ३० ।।

यह खेल हमारे वास्ते रचा है और हम इसे देखने आई हैं। हम दोनों—ब्रह्म सृष्टी और ईश्वरी सृष्टी—की इच्छाएं पूरी करने के वास्ते ही यह नाटक रचा है।

खेल रचे सुपन के, देखाए मिने सुपन।
ए देखे हम न्यारे रहे, कोई और न देखे जन।। ३१ ।।

यह खेल सपने में बना है और सपने में ही हम देख रहे हैं। इस खेल को हम इससे अलग परमधाम में बैठकर देख रहे हैं और बाकी संसार के जीव इसको नहीं समझ पा रहे हैं।

ए खेल सोहागनियों को, देखाया भली भांत।
तारतम बुध प्रकास के, पूरी सबों की खांत।। ३२ ।।

ब्रह्मसृष्टियों को अच्छे तरीके से यह खेल दिखाया और फिर जागृत बुद्धि के तारतम ज्ञान से घर की पहचान कराकर सबकी इच्छा पूरी की।

खेल देख्या जो हम, सो थिर होसी निरधार।
सारों मिने सिरोमन, होसी अखंड ए संसार।। ३३ ।।

इस खेल को चूंकि हमने देखा, इसलिए यह भी अखण्ड हो जाएगा। इस तरह से यह ब्रह्माण्ड सभी ब्रह्माण्डों में सर्वश्रेष्ठ हो जाएगा।

Nijanand App

भगवान जी आए इत, जागवे को तत्पर।
हम उठसी भेले सबे, जब जासीं हमारे घर।। ३४ ।।

अक्षर भगवान भी यहां पर हमारे साथ जागने के लिए आए हैं और हम दोनों एक साथ ही जागृत होंगे और अपने-अपने घर को जाएंगे।

प्रकास कह्यो मैं रास को, एह सुन्यो तुम सार।
अब महामती कहें सो सुनो, दया को विस्तार।। ३५ ।।

हे साथजी! अखण्ड रास की लीला की हकीकत को मैंने बताया जो सबसे श्रेष्ठ हकीकत है और इसका सार आपने सुना है। अब श्री महामति श्री राजजी महाराजजी की दया के विस्तार का वर्णन करती हैं, उसे सुनो।

।। प्रकरण ।। २० ।। चौपाई ।। ५७० ।।

दया को प्रकरण

अब तो मेरे पिया की, दया न समावे इंड।
ए गुन मुझे क्यों विसरे, मोसों हुए सब अखंड।
सोहागनियों पिया दया गुन कैसे कहूं।।टेक।। १ ।।

श्री महामतिजी कहती हैं कि मेरे पिया ने इस जागनी के ब्रह्माण्ड में जो दया की है, वह ब्रह्माण्ड में समाती नहीं है। अपने धनी के यह एहसान मैं कैसे भुला सकती हूं जो मेरे हाथों से ही उन्होंने सारे ब्रह्माण्ड को अखण्ड कराया है। हे सुन्दरसाथजी! पिया की कृपा का मैं कैसे बखान करूं?

अब गली मैं दया मिने, सागर सरूपी खीर।
दया सागर भर पूरन, एक बूंद नहीं मिने नीर।। २ ।।

धनी की कृपा धनी के स्वरूप जैसी ही अखण्ड सागर के समान है जिसमें मैं लिप्त हो गई (हिल-मिल गई)। धनी की कृपा के सागर में माया की एक बूंद भी नहीं है।

दया मुकट सिर छत्र चंवर, दया सिंघासन पाट।
दया सबों अंगों पूरन, सब हुओ दया को ठाट।। ३ ।।

श्री राजजी महाराज की मेहर का सिंहासन है, जिस पर उन्होंने मुझे बिठाया है। उनकी मेहर का ही मुकुट मेरे सिर पर शोभायमान है। मेहर का ही मेरे सिर पर छत्र है और मेहर के ही चंवर मेरे ऊपर डुलाए जाते हैं। इस प्रकार से मेरे सब अंगों में भी उनकी मेहर भरी है और सब मेहर का ही ठाट-बाट है।

अब दया गुन मैं तो कहूं, जो कछू अंतर होए।
अंगीकार करी अंगना, सो देखे साथ सब कोए।। ४ ।।

अब राजजी महाराज की कृपा का वर्णन मैं तब करूं जब मेरे और उनके बीच में कोई अन्तर हो। उन्होंने मुझे अपनी अंगना के रूप में स्वीकार कर लिया है। इसे सब सुन्दरसाथ जान रहे हैं।

पल पल आवे पसरती, न पाइए दया को पार।
दूजा तो सब मैं मापिया, पर होए न दया को निरवार।। ५ ।।

श्री राजजी महाराज की मेहर पल-पल में फैलती है, इसलिए इस मेहर का शुमार नहीं है। बाकी तो सभी चीजों को मैंने शुमार में ले लिया पर धनी की मेहर का मैं निर्णय नहीं कर सकी।

Nijanand App

भगवान जी आए इत, जागवे को तत्पर।
हम उठसी भेले सबे, जब जासीं हमारे घर।। ३४ ।।

अक्षर भगवान भी यहां पर हमारे साथ जागने के लिए आए हैं और हम दोनों एक साथ ही जागृत होंगे और अपने-अपने घर को जाएंगे।

प्रकास कह्यो मैं रास को, एह सुन्यो तुम सार।
अब महामती कहें सो सुनो, दया को विस्तार।। ३५ ।।

हे साथजी! अखण्ड रास की लीला की हकीकत को मैंने बताया जो सबसे श्रेष्ठ हकीकत है और इसका सार आपने सुना है। अब श्री महामति श्री राजजी महाराजजी की दया के विस्तार का वर्णन करती हैं, उसे सुनो।

।। प्रकरण ।। २० ।। चौपाई ।। ५७० ।।

दया को प्रकरण

अब तो मेरे पिया की, दया न समावे इंड।
ए गुन मुझे क्यों विसरे, मोसों हुए सब अखंड।
सोहागनियों पिया दया गुन कैसे कहूं।।टेक।। १ ।।

श्री महामतिजी कहती हैं कि मेरे पिया ने इस जागनी के ब्रह्माण्ड में जो दया की है, वह ब्रह्माण्ड में समाती नहीं है। अपने धनी के यह एहसान मैं कैसे भुला सकती हूं जो मेरे हाथों से ही उन्होंने सारे ब्रह्माण्ड को अखण्ड कराया है। हे सुन्दरसाथजी! पिया की कृपा का मैं कैसे बखान करूं?

अब गली मैं दया मिने, सागर सरूपी खीर।
दया सागर भर पूरन, एक बूंद नहीं मिने नीर।। २ ।।

धनी की कृपा धनी के स्वरूप जैसी ही अखण्ड सागर के समान है जिसमें मैं लिप्त हो गई (हिल-मिल गई)। धनी की कृपा के सागर में माया की एक बूंद भी नहीं है।

दया मुकट सिर छत्र चंवर, दया सिंघासन पाट।
दया सबों अंगों पूरन, सब हुओ दया को ठाट।। ३ ।।

श्री राजजी महाराज की मेहर का सिंहासन है, जिस पर उन्होंने मुझे बिठाया है। उनकी मेहर का ही मुकुट मेरे सिर पर शोभायमान है। मेहर का ही मेरे सिर पर छत्र है और मेहर के ही चंवर मेरे ऊपर डुलाए जाते हैं। इस प्रकार से मेरे सब अंगों में भी उनकी मेहर भरी है और सब मेहर का ही ठाट-बाट है।

अब दया गुन मैं तो कहूं, जो कछू अंतर होए।
अंगीकार करी अंगना, सो देखे साथ सब कोए।। ४ ।।

अब राजजी महाराज की कृपा का वर्णन मैं तब करूं जब मेरे और उनके बीच में कोई अन्तर हो। उन्होंने मुझे अपनी अंगना के रूप में स्वीकार कर लिया है। इसे सब सुन्दरसाथ जान रहे हैं।

पल पल आवे पसरती, न पाइए दया को पार।
दूजा तो सब मैं मापिया, पर होए न दया को निरवार।। ५ ।।

श्री राजजी महाराज की मेहर पल-पल में फैलती है, इसलिए इस मेहर का शुमार नहीं है। बाकी तो सभी चीजों को मैंने शुमार में ले लिया पर धनी की मेहर का मैं निर्णय नहीं कर सकी।

Nijanand App

एते दिन हम घर मिने, गोप राखी सत जोत।
अब बुध खेंचे तरफ अपनी, तो जाहेर सत होत।। ६ ।।

इतने दिन तक हमने घर के बीच में धनी की तारतम वाणी को छिपाकर रखा। अब जागृत बुद्धि अपनी तरफ खींच रही है और इसलिए यह छिपी हुई वाणी जाहिर हो रही है।

सब्द कोई कोई सत उठे, सो भी गए असतमें भिल।
सत असत काहू न सुध, दोऊ रहे हिल मिल।। ७ ।।

इस संसार में किसी-किसी ने पार की वाणी बोली भी तो वह भी अज्ञान वश झूठे संसार में मिल गई। इस झूठे संसार में सच और झूठ ऐसे मिल गए कि किसी को सत् (परब्रह्म) की सुध ही नहीं रही।

अब दूर करूं असत को, जाहेर करूं सत जोत।
गोप रही थी एते दिन, सो अब होत उद्दोत।। ८ ।।

अब झूठी माया को दूर करके सत् (परब्रह्म) के ज्ञान को जाहिर करती हूं। यह ज्ञान जो इतने दिन तक छिपा रहा अब सब में प्रकट हो रहा है।

असत भी करना अखंड, करके सत प्रकास।
सनंध सब समझाए के, करूं तिमर सब नास।। ९ ।।

इस झूठे ब्रह्माण्ड को भी परब्रह्म की पहचान कराकर अखण्ड करना है, इसलिए उनको ब्रह्माण्ड की सारी हकीकत समझाकर उनके अन्दर जो अज्ञानता का अन्धकार है उसे मिटा दूंगी।

संसा सारा भान के, उड़ाऊं असत अंधेर।
निज बुध उठ बैठी हुई, गयो सो उलटो फेर।। १० ।।

सबके संशय मिटाकर झूठे ब्रह्माण्ड का अज्ञान समाप्त कर देंगे, फिर जागृत बुद्धि का ज्ञान देकर उनकी उलटी माया वाली विचारधारा को सीधा करके अखण्ड धनी की पहचान करा देंगे।

अब फेर सब सीधा फिरे, सत आया सबों दृष्ट।
पेहेचान भई प्रकास थें, सुपन की जाहेर सृष्ट।। ११ ।।

अब सबको परब्रह्म की पहचान होने से सभी सच्चे सीधे रास्ते में अर्थात् झूठ की पूजा छोड़कर परब्रह्म की ही पूजा करेंगे। अब तारतम वाणी के प्रकाश से सपने की जीव सृष्टि को भी परब्रह्म की पहचान हो गई।

खेल देख्या कालमाया का, सो कालमाया में भिल।
अब देखो सुख जागनी, होसी निरमल दिल।। १२ ।।

कालमाया के ब्रह्माण्ड का खेल कालमाया के तनों में ही मिलकर देखा। अब तारतम वाणी से जागृत होकर अपने निर्मल दिल से जागनी के सुख को देखो।

आवेस मुझपे पिया को, तिन भेली करूं सोहागिन।
सब सोहागिन मिल के, सुख लेसी मूल वतन।। १३ ।।

मेरे धनी का आवेश मेरे पास है जिससे सब ब्रह्मसृष्टियों को इकट्ठा करूंगी और सब ब्रह्मसृष्टियां मिलकर अपने मूल परमधाम के सुखों को लेंगी।

Nijanand App

विलास तब विध विध के, होसी हरख अपार।
करसी आनंद विनोद, आवसी सकुंडल सकुमार।। १४ ।।

उस समय तरह-तरह की आनन्द की लीला से बेशुमार आनन्द होगा। साकुण्डल और शाकुमार बाई जागृत होकर आएंगी तब खूब आनन्द मंगल होगा।

आए रहेसी सब सोहागनी, तब लेसी सुख अखंड।
पीछे तो जाहेर होएसी, तब उलटसी ब्रह्मांड।। १५ ।।

सभी ब्रह्मसृष्टियां जागृत हो जाएंगी तब अखण्ड सुख लेंगी। उसके बाद इस लीला की सब संसार को जानकारी हो जाएगी और तब ब्रह्माण्ड (प्रलय होकर) अखण्ड हो जाएगा।

हिस्सा देऊं आवेस का, सैंयन को सब पर।
होसी मनोरथ पूरन, मिल हरखे जागसी घर।। १६ ।।

अपने धनी के आवेश को सब सुन्दरसाथ को दूंगी, जिससे सबके मन की चाहना पूर्ण करके हंसते हुए अपने घर परमधाम मूल मिलावे में जागेंगे।

अब साथ न छोडूं एकला, साथ मुझे छोड़े क्यों।
कह्या मेरा साथ न लोपे, साथ कहे करूं मैं त्यों।। १७ ।।

अब सुन्दरसाथ को मैं अकेला नहीं छोडूंगी और सुन्दरसाथ भी मुझे नहीं छोड़ेगा। मेरे कहने पर सुन्दरसाथ चलेगा और जो सुन्दरसाथ कहेगा, वह मैं करूंगी।

लेस है कालमाया को, बढ़्यो साथ में विकार।
सो गालूं सीतल नजरों, दे तारतम को खार।। १८ ।।

सुन्दरसाथ के अन्दर जो कालमाया की इच्छा है वही उनका विकार है, जिसे मैं अपनी शीतल नजर से तारतम वाणी के साबुन से साफ कर दूंगी।

विकार काढूं विधोगतें, बढ़ाए दया विस्तार।
भानूं भरम तिन भांतसों, ज्यों आल न आवे आकार।। १९ ।।

सुन्दरसाथ के विकार को मेहर का विस्तार (वाणी का ज्ञान) देकर अच्छी तरह से बाहर निकाल दूंगी। इनके संशय को अच्छी तरह से मिटा दूंगी, ताकि उन्हें किसी प्रकार से आलस्य न आवे।

सुख देऊं मूल वतन के, कोई रच के भला रंग।
मन वांछे मनोरथ, देऊं सुख सबों अंग।। २० ।।

परमधाम के सुख दूंगी तथा अच्छी-अच्छी वाणी का प्रसार करके सबकी मनचाही इच्छाओं को पूर्ण करके सब तरह का सुख दूंगी।

मोह बढ़्यो लेस माया को, निद्रा मूल विकार।
सुध होए सबों अंगों, कर देऊं तैसो विचार।। २१ ।।

मोह माया का असर बहुत बड़ा हुआ है। इसी विकार के कारण उनको अज्ञानता है। अब मैं ऐसी युक्ति लगाऊंगी जिससे सुन्दरसाथ को सब तरह से चेतना आ जाए।

Nijanand App

जोलों न काढूं विकार, तोलों क्यों करके जगाए।
जागे बिना इन रास के, किन निज सुख लिए न जाए।। २२ ।।

जब तक सुन्दरसाथ के माया रूपी चाहनाओं के विकार को नहीं निकालूंगी, तब तक सुन्दरसाथ कैसे जागेगा? जब तक जागेंगे नहीं, तब तक इस अखण्ड आनन्द का सुख कोई नहीं ले सकेगा।

आमले उलटे मोह के, और मोह तो तिमर घोर।
ए घोर रैन टालूं या बिध, ज्यों सब कोई कहे भयो भोर।। २३ ।।

मोह माया के रास्ते उल्टे हैं। मोह माया तो घोर अन्धकार है। इस घोर अन्धकार को तारतम वाणी से इस तरह से मिटा दूंगी जिससे सभी को ही ज्ञान का सवेरा हो जाए।

गुन पख अंग इन्द्री उलटे, करत हैं सब जोर।
सो सब टेढ़े टाल के, कर देऊं सीधे दोर।। २४ ।।

इस सांसारिक तनों के गुण पक्ष, अंग, इन्द्रिय तो सभी उल्टे माया की तरफ ही खींचते हैं। उन सबकी उल्टी माया वाली चाहना हटाकर सीधे रास्ते धनी के अखण्ड सुखों की चाहना में लगा दूंगी।

अहंकार मन चित्त बुध, इन किए सब जेर।
अब हारे सब जिताए के, फेरूं सो सुलटे फेर।। २५ ।।

संसार के तनों के अहंकार, मन, चित्त और बुद्धि को माया ने अपने अधीन कर रखा है। ऐसे हारे हुए सब अन्तःकरण को अपने बल से जिताकर सीधे रास्ते पर लगा दूंगी।

प्रकृत सबे पिंड की, सीधी करूं सनमुख।
दुख अगनी टाल के, देखाऊं ते अखंड सुख।। २६ ।।

इस शरीर की सभी प्रकृतियों को माया की तरफ से हटाकर परब्रह्म की तरफ सीधा कर दूंगी और तब इस दुःख की आग से हटाकर उनको अखण्ड सुख दूंगी।

चोर फेर करूं बोलावे, सुख सीतल करूं संसार।
अंग में सबों आनन्द, होसी हरख तुमे अपार।। २७ ।।

तन के इन सभी गुण, अंग, इन्द्रिय, आदि चोरों को सीधे रास्ते पर लाकर सारे संसार को सुखी और शीतल कर दूंगी। सबके अंग-अंग में आनन्द भर जाने से, सुन्दरसाथजी! आपको अपार आनन्द होगा।

कोईक दिन साथ मोह के जल में, लेहेर बिना पछटाने।
कहे महामती प्यारी मोहे वासना, न सहूं मुख करमाने।। २८ ।।

कुछ दिन तक तो सुन्दरसाथ माया के चक्कर में बिना पानी के डूबते रहे। अब महामतिजी कहती हैं कि मुझे सुन्दरसाथ प्यारे हैं। मैं उनके मुरझाए मुख को भी नहीं देख सकती।

|| प्रकरण || २१ || चौपाई || ५९८ ||

हांसी का प्रकरण

मेरे साथ सनमंधी चेतियो, ए हांसी का है ठौर।
पिउ वतन आप भूल के, कहा देखत हो और।। १ ।।

मेरे परमधाम के सम्बन्धी सुन्दरसाथ! सावधान हो जाओ। यह हंसी का ठिकाना है। अपने धनी के अखण्ड घर को और अपने आप को भूलकर संसार में क्या देख रहे हो?

Nijanand App

जोलों न काढूं विकार, तोलों क्यों करके जगाए।
जागे बिना इन रास के, किन निज सुख लिए न जाए।। २२ ।।

जब तक सुन्दरसाथ के माया रूपी चाहनाओं के विकार को नहीं निकालूंगी, तब तक सुन्दरसाथ कैसे जागेगा? जब तक जागेंगे नहीं, तब तक इस अखण्ड आनन्द का सुख कोई नहीं ले सकेगा।

आमले उलटे मोह के, और मोह तो तिमर घोर।
ए घोर रैन टालूं या बिध, ज्यों सब कोई कहे भयो भोर।। २३ ।।

मोह माया के रास्ते उल्टे हैं। मोह माया तो घोर अन्धकार है। इस घोर अन्धकार को तारतम वाणी से इस तरह से मिटा दूंगी जिससे सभी को ही ज्ञान का सवेरा हो जाए।

गुन पख अंग इन्द्री उलटे, करत हैं सब जोर।
सो सब टेढ़े टाल के, कर देऊं सीधे दोर।। २४ ।।

इस सांसारिक तनों के गुण पक्ष, अंग, इन्द्रिय तो सभी उल्टे माया की तरफ ही खींचते हैं। उन सबकी उल्टी माया वाली चाहना हटाकर सीधे रास्ते धनी के अखण्ड सुखों की चाहना में लगा दूंगी।

अहंकार मन चित्त बुध, इन किए सब जेर।
अब हारे सब जिताए के, फेरूं सो सुलटे फेर।। २५ ।।

संसार के तनों के अहंकार, मन, चित्त और बुद्धि को माया ने अपने अधीन कर रखा है। ऐसे हारे हुए सब अन्तःकरण को अपने बल से जिताकर सीधे रास्ते पर लगा दूंगी।

प्रकृत सबे पिंड की, सीधी करूं सनमुख।
दुख अगनी टाल के, देखाऊं ते अखंड सुख।। २६ ।।

इस शरीर की सभी प्रकृतियों को माया की तरफ से हटाकर परब्रह्म की तरफ सीधा कर दूंगी और तब इस दुःख की आग से हटाकर उनको अखण्ड सुख दूंगी।

चोर फेर करूं बोलावे, सुख सीतल करूं संसार।
अंग में सबों आनन्द, होसी हरख तुमे अपार।। २७ ।।

तन के इन सभी गुण, अंग, इन्द्रिय, आदि चोरों को सीधे रास्ते पर लाकर सारे संसार को सुखी और शीतल कर दूंगी। सबके अंग-अंग में आनन्द भर जाने से, सुन्दरसाथजी! आपको अपार आनन्द होगा।

कोईक दिन साथ मोह के जल में, लेहेर बिना पछटाने।
कहे महामती प्यारी मोहे वासना, न सहूं मुख करमाने।। २८ ।।

कुछ दिन तक तो सुन्दरसाथ माया के चक्कर में बिना पानी के डूबते रहे। अब महामतिजी कहती हैं कि मुझे सुन्दरसाथ प्यारे हैं। मैं उनके मुरझाए मुख को भी नहीं देख सकती।

|| प्रकरण || २१ || चौपाई || ५९८ ||

हांसी का प्रकरण

मेरे साथ सनमंधी चेतियो, ए हांसी का है ठौर।
पिउ वतन आप भूल के, कहा देखत हो और।। १ ।।

मेरे परमधाम के सम्बन्धी सुन्दरसाथ! सावधान हो जाओ। यह हंसी का ठिकाना है। अपने धनी के अखण्ड घर को और अपने आप को भूलकर संसार में क्या देख रहे हो?

Nijanand App

साथ जी तुमको उपज्या, खेल देखन का ख्याल।
जाको मूल नहीं बांधे तिन, ए हांसी का हवाल।। २ ।।

हे साथजी! तुमको खेल देखने की चाहना पैदा हुई थी। इस माया ने, जिसका मूल ही नहीं है, तुमको बांध रखा है। यह ऐसी हांसी (हंसी) का हवाल है (ठिकाना है)।

मांग्या खेल विनोद का, तिन फेरे तुमारे मन।
सो सब तुमको विसरे, जो कहे मूल वचन।। ३ ।।

तुमने तो आनन्द के लिए खेल मांगा था, पर इस माया ने तुम्हारे मन को उलटा कर अपने में फंसा दिया है और तुम अपने मूल वचनों को भूल बैठे हो।

गूंथो जाली दोरी बिना, आप बांधत हो अंग।
अंग बिना तलफत हो, ए ऐसे खेल के रंग।। ४ ।।

इस माया में बिना डोरी के झूठे परिवारों की जाली को गूंथ रहे हो और स्वयं ही अपने अंगों को फंसा रहे हो। तुम्हारे अंग भी यहां नहीं हैं (परमधाम में हैं) फिर भी तड़प रहे हो। यह इस माया का जाल है।

आप बंधाने आप सों, इन कोहेड़े अंधेर।
अमल चढ़्या जानों जेहेर का, फिरत वाही में फेर।। ५ ।।

तुम अपने आप को पारिवारिक (बिरादरी के) झूठे जाल में बांधे बैठे हो। इस झूठी माया का ऐसा जहरीला नशा चढ़ा है जिसके चक्कर में तुम भटक रहे हो।

अमल चढ़्या क्यों जानिए, कोई फिसले कोई गिरे।
कोई मिने जाग के, कर पकर सीढ़ी चढ़े।। ६ ।।

कैसे समझा जाए कि नशा चढ़ा है? कोई ईमान से गिरता है। किसी का ईमान डगमगाता है तथा कोई जागृत होकर एक-दूसरे के सहारे से होश में आता है।

एक गिरे पगथी बिना, वाको दूजी पकरे कर।
सो खाए दोनों गड़थले, ए हांसी है या पर।। ७ ।।

कोई यहां बिना सीढ़ी के ही गिर जाते हैं। उसको दूसरा साथी धर्म, ज्ञान, योग, आदि से उठाता है। वह दोनों भवसागर में ही उलट कर गिर पड़ते है। यह खेल इस तरीके का है।

एक पड़ी जिमी जान के, वाको दूजी उठावन जात।
उलट पड़ी सो उलटी, ए खेल है या भांत।। ८ ।।

यहां एक तो धर्म को ही जानकर उस पर चलता है और दूसरा ज्ञानी बनकर उसे ज्ञान देकर उठाता है। तो वह दोनों झूठे ज्ञान के कारण उलटे मुंह नीचे गिर जाते हैं। इस तरह से यह सारा माया का खेल है।

ओठा लेवे जिमी बिना, पांव बिना दोड़ी जाए।
जल बिना भवसागर, यामें गलचुए खाए।। ९ ।।

यहां सपने के संसार में जीव कर्मकाण्ड के धर्म का सहारा लेकर बैठा है और बिना पांव के (मन से) इधर-उधर भटकता है तथा बिना पानी के भवसागर में गोते खा रहा है, अर्थात् जन्म-मरण के चक्कर में फंसा है।

Nijanand App

देखो अंत्रीख खड़ियां, हाथ बिना हथियार।
नींद बड़ी है जागते, पिंड बिना आकार।। १० ।।

यह ब्रह्माण्ड अद्धर में लटका है जिसमें तुम हाथ-पैर पटक रहे हो। जागते हुए भी माया की नींद छाई है। मूल शरीर के (मूल तन परमधाम में है) झूठे तन बनाए बैठे हो।

एक नई कोई आए मिले, सो कहावे आप अजान।
बड़ी होए दूजी मिने, समझावत सुजान।। ११ ।।

यहां कोई नया साधु, सन्त, विद्वान या ज्ञानी मिल जाता है, तो अपने को अनजाना बताता है और फिर दूसरों के बीच में खुद जानकार बनकर ज्ञान देने लगता है।

कोई वचन करड़े कहे, किन खण्डनी न खमाए।
सो कलपे दोऊ कलकले, वाको अमल यों ले जाए।। १२ ।।

कोई ज्ञानी जन किसी का खण्डन कर अवगुण बताते हैं। किसी से वह वचन सहन नहीं होते हैं। यह दोनों रोते हुए माया में ही गिर जाते हैं। इस तरह से माया का नशा सबको चढ़ा है।

खंडी खांडी रोए रोलाए, दुख देखे दोऊ जन।
जागे पीछे जो देखिए, तो कमी न मांहें किन।। १३ ।।

कठिन खण्डनी के वचन कहकर तथा सुनकर दोनों दुःखी होते हैं और होश आने पर दोनों देखते हैं तो कमी कहने वाले में या सुनने वाले में नहीं दिखाई देती। यह तो माया के कारण ही अनुभव होता है।

हांसी होसी साथ में, इन खेल के रस रंग।
पूर बिना बहे जात हैं, कोई आड़ी होत अभंग।। १४ ।।

श्री महामतिजी कहती हैं कि इस तरह से खेल के आनन्द की बातें सुन्दरसाथ परमधाम में हंस-हंस कर करेंगे। यहां जल का तो कोई बहाव है नहीं फिर भी माया की चाहना (तृष्णा) और ममता रूपी लहरों में बहे जाते हैं। इसमें कोई विद्वान अपने को जानकर, समझकर बचाने का प्रयत्न भी करते हैं।

हरखे हांसी हेत में, करसी साथ कलोल।
मांगी माया सो देखी नीके, कोई ना हांसी या तोल।। १५ ।।

श्री महामतिजी कहती हैं कि परमधाम में जागे, पीछे सुन्दरसाथ परस्पर आपस में हंसी के आनन्द में कलोल करेंगे। यह माया जो हमने मांगी थी उसे अच्छी तरह से देख लिया है। इसकी बराबरी में और कोई हंसी हो ही नहीं सकती है।

मूल बिना ए बिरिख खड़ा, ताको फल चाहे सब कोए।
फेर फेर लेने दौड़ही, ए हांसी इन बिध होए।। १६ ।।

यह माया रूपी विराट का वृक्ष बिना जड़ के खड़ा है और सभी इससे धर्म और मोक्ष रूपी फल की चाहना रखते हैं। इस फल को लेने के लिए सभी दौड़ते हैं, परन्तु काम, क्रोध और अहंकार के कारण पीछे गिर जाते हैं और इस तरह से हंसी होती है।

ए खेल देख्या छल का, बैकुंठ लो पाताल।
फल फूल पात ना दरखत, काष्ट तुचा मूल ना डाल।। १७ ।।

बैकुण्ठ से पाताल तक यह सब खेल छल से भरा हुआ देखा जिसमें फल, फूल, पत्ते, पेड़, लकड़ी, छाल, जड़ और डालियां नहीं हैं, अर्थात् यहां किसी को किसी से कुछ नहीं मिलता।

Nijanand App

खुले ना बंध बिना बांधे, बिध बिध खोले जाए।
ए माया मोहोरे देख के, उरझ रहे सब मांहें।।१८।।

यह परिवार के, बिना बंधे हुए बन्धन तरह-तरह के प्रयत्न करने पर भी नहीं छूटते। इस संसार के जीव मोह के बन्धन में बंधे हुए परस्पर एक-दूसरे में उलझे हुए हैं। इसे तो कोई बांधने वाला ही खोल सकता है।

जागो जगाऊं जुगत सों, छोड़ो नींद विकार।
पेहेचान कराऊं पिउ सों, सुफल करूं अवतार।।१९।।

महामतिजी कहती हैं, सुन्दरसाथजी! जागृत हो जाओ। मैं तुम्हें तारतम वाणी के ज्ञान से जगाती हूं। तुम माया की चाहना रूपी विकारों को छोड़ दो और अपने प्रीतम धनी को पहचानो, तो मेरा भी जीवन सफल हो जाए। आपको पहचान कराने पर ही मेरा भी जीवन सफल होगा।

वतन देखाऊं पिउ का, और अपनी मूल पेहेचान।
एह उजाला करके, धोखा देऊं सब भान।।२०।।

हे सुन्दरसाथजी! आओ अपने धनी और वतन की पहचान कराती हूं। तारतम वाणी के ज्ञान से तुम्हारे मन के संशय मिटा दूंगी।

ए भोम हांसी देख के, आप होत सावचेत।
मूल सुख कहे महामती, तुमको जगाए के देत।।२१।।

हे सुन्दरसाथजी! तुम इस हांसी (हंसी) की भूमि को देखकर सावधान हो जाओ जिससे तारतम वाणी के ज्ञान से तुम्हें जगाकर परमधाम के मूल सुख तुम्हें दिखाऊं।

।। प्रकरण ।। २२ ।। चौपाई ।। ६१९ ।।

जागनी का प्रकरण

अब जाग देखो सुख जागनी, ए सुख सोहागिन जोग।
तीन लीला चौथी घर की, इन चारों को यामें भोग।।१।।

श्री महामतिजी कहती हैं, हे सुन्दरसाथजी! अब तुम जागकर (सावचेत होकर) जागनी के ब्रह्माण्ड के सुखों को देखो। यह सुख ब्रह्मसृष्टियों के ही लायक है। इस जागनी की लीला में बृज, रास, जागनी की लीला तथा चौथा परमधाम का अखण्ड सुख का आनन्द मिलता है।

कह्या न जाए सुख जागनी, सत ठौर के सनेह।
तो भी कहूं जिमी माफक, नेक प्रकासूं एह।।२।।

जागनी के सुखों का वर्णन कहने में नहीं आता। इसमें अपने मूल घर परमधाम की पहचान होती है। फिर भी इस जमीन के अनुसार थोड़ा सा जाहिर करती हूं।

अब जगाऊं जुगत सों, उड़ाऊं सब विकार।
रंगे रास रमाए के, सुफल करूं अवतार।।३।।

अब मैं बड़ी युक्ति से तुम्हें जगाऊंगी और तुम्हारे सभी विकारों को दूर कर दूंगी। फिर आनन्द में विभोर करूंगी और संसार में अपना आना सफल करूंगी।

Nijanand App

खुले ना बंध बिना बांधे, बिध बिध खोले जाए।
ए माया मोहोरे देख के, उरझ रहे सब मांहें।। १८ ।।

यह परिवार के, बिना बंधे हुए बन्धन तरह-तरह के प्रयत्न करने पर भी नहीं छूटते। इस संसार के जीव मोह के बन्धन में बंधे हुए परस्पर एक-दूसरे में उलझे हुए हैं। इसे तो कोई बांधने वाला ही खोल सकता है।

जागो जगाऊं जुगत सों, छोड़ो नींद विकार।
पेहेचान कराऊं पिउ सों, सुफल करूं अवतार।। १९ ।।

महामतिजी कहती हैं, सुन्दरसाथजी! जागृत हो जाओ। मैं तुम्हें तारतम वाणी के ज्ञान से जगाती हूं। तुम माया की चाहना रूपी विकारों को छोड़ दो और अपने प्रीतम धनी को पहचानो, तो मेरा भी जीवन सफल हो जाए। आपको पहचान कराने पर ही मेरा भी जीवन सफल होगा।

वतन देखाऊं पिउ का, और अपनी मूल पेहेचान।
एह उजाला करके, धोखा देऊं सब भान।। २० ।।

हे सुन्दरसाथजी! आओ अपने धनी और वतन की पहचान कराती हूं। तारतम वाणी के ज्ञान से तुम्हारे मन के संशय मिटा दूंगी।

ए भोम हांसी देख के, आप होत सावचेत।
मूल सुख कहे महामती, तुमको जगाए के देत।। २१ ।।

हे सुन्दरसाथजी! तुम इस हांसी (हंसी) की भूमि को देखकर सावधान हो जाओ जिससे तारतम वाणी के ज्ञान से तुम्हें जगाकर परमधाम के मूल सुख तुम्हें दिखाऊं।

|| प्रकरण || २२ || चौपाई || ६१९ ||

जागनी का प्रकरण

अब जाग देखो सुख जागनी, ए सुख सोहागिन जोग।
तीन लीला चौथी घर की, इन चारों को यामें भोग।। १ ।।

श्री महामतिजी कहती हैं, हे सुन्दरसाथजी! अब तुम जागकर (सावचेत होकर) जागनी के ब्रह्माण्ड के सुखों को देखो। यह सुख ब्रह्मसृष्टियों के ही लायक है। इस जागनी की लीला में बृज, रास, जागनी की लीला तथा चौथा परमधाम का अखण्ड सुख का आनन्द मिलता है।

कह्या न जाए सुख जागनी, सत ठौर के सनेह।
तो भी कहूं जिमी माफक, नेक प्रकासूं एह।। २ ।।

जागनी के सुखों का वर्णन कहने में नहीं आता। इसमें अपने मूल घर परमधाम की पहचान होती है। फिर भी इस जमीन के अनुसार थोड़ा सा जाहिर करती हूं।

अब जगाऊं जुगत सों, उड़ाऊं सब विकार।
रंगे रास रमाए के, सुफल करूं अवतार।। ३ ।।

अब मैं बड़ी युक्ति से तुम्हें जगाऊंगी और तुम्हारे सभी विकारों को दूर कर दूंगी। फिर आनन्द में विभोर करूंगी और संसार में अपना आना सफल करूंगी।

Nijanand App

अब दुख न देऊं फूल पांखड़ी, देखूं सीतल नैन।
उपजाऊं सुख सब अंगों, बोलाऊं मीठे बैन।। ४ ।।

हे साथजी! अब तुम्हें एक फूल की पत्ती मारने से जितनी चोट लगती है उतना भी कष्ट नहीं दूंगी। मैं तुम्हें प्यार भरी ठंडी नजर से देखूंगी और तुम्हें रोम-रोम के सुख अनुभव कराऊंगी और बड़े प्यार से बुलाऊंगी।

आगे कलकली कलकलाए, तोहे न गयो विकार।
कठिन सही तुम खंडनी, वचन खांडा धार।। ५ ।।

आगे रो-रोकर कलपकर और गुस्से के साथ तुम्हें जगाया, फिर भी तुम्हारे अन्दर के विकार नहीं हटे। मैंने तुम्हें तीखे खण्डनी के वचन कहे जिसे तुमने सहन किया।

सो ए वचन मोहे सालहीं, कठिन तुमको जो कहे।
सोहागनियों को निद्रा मिने, मूल घर विसर गए।। ६ ।।

मैंने तुम्हें खण्डनी के जो वचन कहे, वह आज मुझे खटक रहे हैं। हे सुन्दरसाथजी! तुम माया में आकर अपने परमधाम को भूल गए थे, इसलिए मुझे ऐसा कहना पड़ा।

अब गालूं ताओ दिए बिना, करूं सो रस कंचन।
कस चढ़ाऊं अति रंगे, दोऊ पेर करूं धंन धंन।। ७ ।।

अब तुम्हें कुछ कष्ट दिए बिना ही जगाऊंगी और तुम्हें बिना क्रोधित किए कंचन जैसा निखारकर निर्मल कर दूंगी। मैं तुम्हें प्रेम और इश्क के रंग में सराबोर कर दूंगी और इस प्रकार संसार और परमधाम के सुखों को देकर तुम्हें धन्य-धन्य करूंगी।

जानूं साथजी विदेस आए, दुख देखे कई भांत।
जो लों न इत सुख पावहीं, तो लों न मोहे स्वांत।। ८ ।।

मैं जानती हूं कि मेरे सुन्दरसाथ विदेश आए हैं और यहां उन्होंने बहुत दुःख देखे हैं, इसलिए जब तक सुन्दरसाथ को यहां सुख नहीं मिलेंगे तब तक मुझे शान्ति नहीं है।

नैन चढ़ाए साथ न जागे, यों न जागनी होए।
मूल घर देखाइए, तब क्यों कर रेहेवे सोए।। ९ ।।

गुस्से में आकर सुन्दरसाथ की जागनी नहीं होती। उन्हें जब अपने मूल घर की पहचान हो जाएगी (अनुभव हो जाएगा) तो कोई सुन्दरसाथ पीछे नहीं रहेंगे।

खंडनी कर खीजिए, जागे नहीं इन भांत।
दीजे आप ओलखाए के, यों साख देवाए साख्यात।। १० ।।

खण्डनी करके तथा नाराज होकर कोई सावचेत नहीं होता। पहले उन्हें अपने आप की पहचान और ग्रन्थों से गवाहियां देकर मन में दृढ़ता दिला दीजिए।

जगाऊं सुख याद देने, करूं आप अपनी बात।
पीछे हम तुम मिलके, जाहेर कीजे विख्यात।। ११ ।।

तुम्हें परमधाम के सुख याद दिलाने के वास्ते ही मैं अपनी बात करती हूं। पीछे जागृत होने पर हम तुम संसार में जाहिर हो जाएंगे।

Nijanand App

आगे आवेस मोपे पिया को, दे अंग लई जगाए।
निसंक निद्रा उड़ाए के, साख्यात लई बैठाए।। १२ ।।

पहले धनी ने अपना आवेश देकर मुझे जागृत किया और इस माया से मुझे अलग करके साक्षात् अपने चरणों में बिठाया।

अब रह्यो न जाए नेक न्यारे, यों किए जागनी ले।
अहंमेव जाग्या धाम का, हम मिने आया जे।। १३ ।।

अब जागृत होने के बाद मुझसे एक पल भी धनी से अलग नहीं रहा जाता। मेरे अन्दर परमधाम का स्वाभिमान जागृत हो गया है।

पेहेले जोगमाया भई रास में, ताको सो अति उजास।
पर साथ जोग होसी जागनी, ताको कह्यो न जाए प्रकास।। १४ ।।

अब श्री राजजी महाराज कहते हैं कि पहले योगमाया के ब्रह्माण्ड में रास रमण किया। उसकी भी जानकारी तुम्हें कराई। अब तो हे साथजी! इस जागनी के ब्रह्माण्ड के जो सुख मिलेंगे वह वर्णन नहीं किए जा सकते।

अब विछोहा खिन एक साथ को, सो मैं सह्यो न जाए।
अब नेक वाओ इन मायाकी, जानों जिन आवे ताए।। १५ ।।

अब सुन्दरसाथ की जुदाई एक पल के लिए भी मैं सहन नहीं कर सकती। यह भी चाहती हूं कि सुन्दरसाथ को माया के दुःख तनिक भी न हों।

साथजी इन जिमी के, सुख देऊं अति अपार।
हंस हंस हेते हरख में, तुम नाचसी निरधार।। १६ ।।

हे साथजी! इस संसार के अपार सुख तुमको भी दूंगी और तुम भी हंसते-हंसते बड़े प्रसन्न मन से मस्ती में नाचोगे।

प्रीतम मेरे प्राण के, अंगना आतम नूर।
मन कलपे खेल देखते, सो ए दुख करूं सब दूर।। १७ ।।

हे सुन्दरसाथजी! तुम मेरे प्राणों के प्रीतम हो और मेरी नूरी अंगना हो। यहां तुम्हारे मन खेल देखकर दुःखी होते हैं। वह सारे दुःख मैं अब दूर कर दूंगा।

मुख करमाने मन के, सो तुमारे मैं ना सहूं।
ए दुख सुख को स्वाद देसी, तो भी दुख मैं ना देऊं।। १८ ।।

हे साथजी! मैं तुम्हारे मुरझाए मुख को भी नहीं देख सकता। इस संसार के दुःख-सुख भी लज्जत (स्वाद) देंगे। यह जानकर भी मैं तुम्हें दुःख नहीं दूंगा।

सत सुख में सुख देयसी, इन जिमी के दुख जेह।
तुम हंसोगे हरख में, रस देसी दुखड़ा एह।। १९ ।।

इस जमीन के दुःख अखण्ड परमधाम में सुख देंगे। तुम बड़े प्रसन्न मन से इन दुःखों को यादकर आनन्द लोगे।

Nijanand App

हम उपाया सुख कारने, ए जो मांग्या खेल तुम।
दुख दे वतन बोलावहीं, ए इन घर नहीं रसम।।२०।।

तुमने जो यह खेल मागा था, उसे मैंने तुम्हारे लिए बनाया। तुम्हें दु:खी करके वापस घर बुलाने की हमारे घर परमधाम की रीति नहीं है।

सेहेजल सुख तुमें है सदा, अलप नहीं असुख।
तुम सुख को स्वाद लेने, खेल मांग्या ए दुख।।२१।।

उस अखण्ड परमधाम में सदा सुख ही सुख हैं और दु:ख का नामोनिशान भी नहीं है। तुमने सुख का स्वाद लेने को ही यह दु:ख का खेल मांगा था।

खेल मांग्या दुख का, तब कह्या हम तुम।
दुख का खेल तुमको, क्यों देखावें हम।।२२।।

जब तुमने दु:ख का खेल मांगा था, तब मैंने तुम्हें मना किया था कि तुम्हें हम दु:ख का खेल कैसे दिखाएं।

दुख तो क्योंए देऊं नहीं, तो खेल देख्या क्यों जाए।
खंत लगी खरी खेल की, तिनको सो एह उपाए।।२३।।

हे साथजी! दु:ख तो मैं किसी तरह से भी नहीं दूंगा, लेकिन दु:ख के बिना तुम खेल कैसे देखोगे? तुम्हें खेल देखने की चाहना खरी लगी और उसका यही उपाय था।

पिया हम खेल जान्या घरका, ज्यों खेल करत सदाए।
हम खेल खड़े यों देखसी, ए भी इन अदाए।।२४।।

अब सुन्दरसाथ कहते हैं कि हे पिया! हमने इस खेल को भी परमधाम जैसा ही खेल समझा था। जैसा कि हम सदा से धाम में खड़े-खड़े देखते थे इसको उसी तरह से देखेंगे।

वस्तोगते दुख ना कछू, जो पीछे फेरो दृष्ट।
जो देखो वचन जागके, तो नाहीं कछुए कष्ट।।२५।।

अब राजजी महाराज कहते हैं, हे साथजी! यदि तुम माया से नजर हटाकर परमधाम के सुखों को विचारो तो यह दु:ख हकीकत में कुछ भी नहीं है। जागृत होकर इन वचनों को देखो तो तुम्हें कुछ भी कष्ट नहीं है (क्योंकि तुम्हारे तन परमधाम में हैं)।

लगोगे जो दुख को, तो दुख तुमको लागसी।
याद करो जो निज सुख, तो दुख तुमथें भागसी।।२६।।

यदि तुम दु:ख की चाहना करके लगे रहोगे तो तुम्हें दु:ख होगा और यदि घर के सुख को याद करोगे तो दु:ख अपने आप दूर हो जाएगा।

फेर देखो जो नजरों, तो रेहेसी न्यारे दुख।
करोगे इत खेल रंगे, विनोद बातें मुख।।२७।।

और फिर यदि निजघर की नजर से खेल देखोगे तो दु:खों से सदा न्यारे रहोगे। जागृत होकर यहां खेल देखोगे तो हंसी-खुशी बातें करोगे।

Nijanand App

सागर सुख में झीलते, तहां दुख नहीं प्रवेस।
तो दुख तुम मांगिया, सो देखाया लवलेस।। २८ ।।

परमधाम में तुम सदा ही सुख के सागर में मग्न रहते थे। वहां दुःख का नाम भी नहीं था, इसलिए तुमने दुःख मांगा तो मैंने यह जरा सा दुःख तुम्हें दिखाया।

पौढ़े भेले जागसी भेले, खेल देख्या सबों एक।
बातां करसी जुदी जुदी, बिध बिध की विसेक।। २९ ।।

परमधाम में तुम सब एक साथ खेल देखने बैठे थे और सब मिल करके एक साथ ही खेल देखकर जागोगे। जागने के बाद इस एक ही खेल की जुदी-जुदी बातें करोगे।

दुख तुमारे मैं न सहूं, सो जानो चित्त चौकस।
ए दुख देसी बोहोत सुख, खेल होसी रंग रस।। ३० ।।

श्री राजजी महाराज कह रहे हैं, हे साथजी! यह तुम दिल में अच्छी तरह दृढ़ (चौकस) कर लो कि मैं तुम्हें दुःखी नहीं देख सकता। यह दुःख तुम्हें परमधाम में अति सुख देगा। वहां इस खेल के रसों का आनन्द अनुभव होगा।

साथ को इन जिमी के, सुख देने को हरख अपार।
रासमें रंग खेल के, भेले जागिए निरधार।। ३१ ।।

हे साथजी! तुमको इस जमीन के भी अपार सुख देने की चाहना है। इस जागनी रास में खेल का आनन्द लेकर ही हम इकट्ठे जागेंगे।

अब ल्योरे मेरे साथ जी, इन जिमी ए सुख।
मैं तुमारे न सेहे सकों, जो देखे तुम दुख।। ३२ ।।

हे मेरे साथजी! अब तुम इस दुःख भरे संसार में परमधाम के सुखों को लो। जो तुमने इससे पहले यहां दुःख देखे हैं मेरे से वह सहन नहीं होते।

लेहेर लगे तुमें मोह की, सो आतम मेरी न सहे।
अब खंडनी भी न करूं, जानों दुखाऊं क्यों मुख कहे।। ३३ ।।

माया की तुम्हें जरा भी लहर से दुःख हो, यह भी मुझसे सहन नहीं होता। अब मैं तुम्हें ऐसा वचन नहीं कहूंगा जिससे तुम्हें दुःख हो (अर्थात् अब कठिन शब्द नहीं कहूंगा)।

अब क्यों देऊं कसनी, मुख करमाने न सहूं।
तिन कारन सब्द कठन, मेरे प्यारों को मैं क्यों कहूं।। ३४ ।।

अब तुम्हें कसनी के भी दुःख नहीं झेलने पड़ेंगे, क्योंकि मैं तुम्हारे मुरझाए मुख को भी सहन नहीं कर सकता और अपने प्यारे सुन्दरसाथ को कोई कठिन शब्द नहीं कहूंगा।

अब तारूं तुमें या बिध, ज्यों लगे न लेहेर लगार।
सुखपाल में बैठाए सुखें, घर पोहोंचाऊं निरधार।। ३५ ।।

अब तुम्हें इस तरह से घर ले चलूंगा कि तुम्हें यहां से निकलने में जरा भी कष्ट न हो। तुम्हें सुखपाल में बिठाकर निश्चित रूप से घर ले चलूंगा।

Nijanand App

उपजाए देऊं अंग थें, रस प्रेम के प्रकार।
प्रकास पूरन करके, सब टालूं रोग विकार।। ३६ ।।

आपके अन्दर प्रेम के आनन्द की अलग-अलग तरीके के सुखों की इच्छा पैदा कर दूंगा और तुम्हें अपनी पूरी पहचान कराकर तुम्हारे सब रोग और विकारों को दूर कर दूंगा।

अंग दिए बिना आवेस, नाहीं प्रेम उपाए।
आवेस दे करूं जागनी, लेऊं अंग में मिलाए।। ३७ ।।

तुम्हारे अंग में अपना आवेश दिए बिना दूसरा कोई प्रेम का उपाय नहीं है। आवेश देकर ही तुम्हें जागृत कर अपने में एक रस कर मिला लूंगा।

अब भेले तो सब चलिए, जो अंग न काहूं अटकाए।
तो तुमें होवे जागनी, जो सांचवटी बटाए।। ३८ ।।

हे साथजी! अब हम इकट्ठे होकर तो चल सकते हैं यदि किसी की इच्छा बाकी न हो। जब मैं तुम्हें परमधाम के सच्चे सुख यहां दूंगा तो तुम्हारी जागनी हो जाएगी।

अब दुख आवे तुमको, तहां आड़ा देऊं मेरा अंग।
सुख देऊं भली भांतसों, ज्यों होए न बीच में भंग।। ३९ ।।

यहां पर जब भी तुम्हें कोई दु:ख आयेगा तो वहां पर मैं तुम्हारे दु:ख अपने पर ले लूंगा, ताकि सुख लेने में तुम्हें कोई रुकावट न हो।

ए लीला करूं इन भांतें, तो रास रंग खेलाए।
बिध बिध के सुख विलसिए, विरह जागनी सह्यो न जाए।। ४० ।।

यदि मैं इस तरह से यहां लीला करूंगा तो तुम्हें आनन्द आएगा। फिर तरह-तरह के सुख विलास कीजिए, क्योंकि जागृत अवस्था में विरह सहन नहीं होता।

जगाए नीके सुख देऊं, रेहेस खेलाऊं रंग।
सत सुख क्यों आवहीं, जोलों न दीजे अंग।। ४१ ।।

तुम्हें अच्छी तरह से जगाकर सुख दूंगा और आनन्द के साथ खेल के सुख लेंगे। जब तक मैं अपना अंग नहीं दूंगा तब तक तुम्हें परमधाम के सुख यहां कैसे मिलेंगे?

अंगना को अंग दीजिए, अंगना लीजे अंग।
पास देऊं पूरा प्रेम का, नेहेचल का जो रंग।। ४२ ।।

श्री राजजी कहते हैं, हे साथजी! इस तरह से मैं अपनी अंगनाओं को अपने अंग का आवेश दूंगा और उनके अंगों को अपने में मिला लूंगा जिससे उनको मेरे पूर्ण प्रेम का अखण्ड आनन्द प्राप्त होगा।

असतसों उलटाए के, सतसों कराऊं संग।
परआतम सों बंध बांधूं, ज्यों होए न कबहूं भंग।। ४३ ।।

तुम्हें इस झूठे संसार से हटाकर सच्चे धनी के सुखों को दिखाऊंगा और तुम्हारी परात्म से ऐसे बंध बांधूगा जो फिर कभी टूटेंगे नहीं।

Nijanand App

पिउ जगाई मुझे एकली, मैं जगाऊं बांधे जुथ।
ए जिमी झूठी दुख की, सो कर देऊं सत सुख।। ४४ ।।

अब श्री महामतिजी कहते हैं कि धनी ने मुझे अकेले जगाया। अब मैं सुन्दरसाथ के जुत्थों के जुत्थ (समूह) को जगाऊंगी। यह सारा संसार जो दुःख से भरा है, इसको भी सच्चे सुख में बदल दूंगी।

सब साथ करूं आपसा, तो मैं जागी प्रमान।
जगाए सुख देऊं धाम के, मिलाए मूल निसान।। ४५ ।।

सब सुन्दरसाथ को मैं अपने समान जगाकर सचेत कर दूंगी तभी मैं जागी कहलाऊंगी। सुन्दरसाथ को जगाकर परमधाम के सुख देने से ही मूल पच्चीस पक्ष उनको जाहिर हो जाएंगे।

आवेस जाको मैं देखे पूरे, जोगमाया की नींद होए।
पर जो सुख दीसे जागनी, हम बिना न जाने कोए।। ४६ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि श्री देवचन्द्रजी महाराज को मैंने आवेश का स्वरूप समझा था। जिस तरह से हमें योगमाया में धनी की सुध थी और घर की सुध नहीं थी, उसी तरह सतगुरु देवचन्द्रजी को तारतम ज्ञान से घर की सुध तो थी पर जागनी की सुध नहीं थी। जागनी के सुखों को मेरे बिना कोई नहीं जानता।

जो जाग बैठे धाम में, ताए आवेस को क्या कहिए।
तारतम तेज प्रकास पूरन, तिनथें सकल बिध सुख लहिए।। ४७ ।।

जिन सतगुरु देवचन्द्रजी को परमधाम की पहचान हो गई थी, उनके तो आवेश का क्या कहना? क्योंकि तारतम के पूर्ण तेज से ही तो परमधाम के पूर्ण सुख प्राप्त होते हैं।

आवेस को नहीं अटकल, पर जागनी अति भारी।
आवेस जागनी तारतमें, जो देखो जाग विचारी।। ४८ ।।

सतगुरु देवचन्द्रजी के अन्दर धनी का आवेश तो था, परन्तु जागनी का काम कितना कठिन है (भारी है) इसकी खबर नहीं थी। हे साथजी! यदि सावधान होकर विचारें तो तारतम ज्ञान और आवेश दोनों के होने से ही जागनी का सुख प्राप्त होता है।

ए पैए बतावे पार के, नहीं तारतम को अटकल।
आवेस जागनी हाथ पिया के, एह हमारा बल।। ४९ ।।

तारतम ज्ञान कोई अटकल का ज्ञान नहीं है। तारतम ज्ञान से ही पार की पूरी पहचान परमधाम तक होती है। आवेश से जो जागनी होती है वह तो धनी के हाथ में है, जो उन्होंने मुझे बख्शी है और यही हमारी ताकत है।

तारतम के सुख साथ आगे, बिध बिध पियाने कहे।
पीछे ए सुख इंद्रावती को, दया कर सारे दिए।। ५० ।।

श्री राजजी महाराज ने श्री देवचन्द्रजी के तन में बैठकर तरह-तरह के तारतम के सुख सुन्दरसाथ को कहे। इसके बाद यह सारे सुख (तारतम के और आवेश के जिससे जागनी होती है) श्री इन्द्रावतीजी को धनी ने कृपा करके दिए।

Nijanand App

धंन पिया धंन तारतम, धंन धंन सखी जो ल्याई।
धंन धंन सखी मैं सोहागनी, जो मो में ए निध आई।।५१।।

हमारे धनी धन्य-धन्य हैं, तारतम ज्ञान धन्य है तथा सुन्दरबाई श्यामाजी जो तारतम ज्ञान लाई हैं वह धन्य हैं श्री इन्द्रावतीजी सुन्दरबाई से कहती हैं कि आप धन्य हैं, परन्तु यह न्यामत जागृत बुद्धि तारतम हैं और आवेश जागनी की सुध मेरे अन्दर आई जिससे मैं सोहागिन हो गई।

पिया ल्याए मुझ कारने, और हुआ न काहूं जान।
मैं लिया पिया विलसिया, विस्तारिया प्रमान।।५२।।

धनी मेरे वास्ते तारतम और आवेश लाए, जिसकी जानकारी किसी को नहीं हुई। इस ज्ञान को मैंने लेकर अपने पिया के विलास का सुख लिया और उस सुख की सुन्दरसाथ को प्रमाण दे-देकर पहचान कराई।

ए बानी सबमें पसरी, पर किया न साथे विचार।
पीछे दया कर दई धनिएं, अंग इंद्रावती विस्तार।।५३।।

यह तारतम जब सुन्दरसाथ को मिला तो उस समय किसी ने भी विचार नहीं किया। तब श्री राजजी महाराज ने इसे अपनी कृपा कर श्री इन्द्रावतीजी को दिया। इसका विस्तार श्री इन्द्रावतीजी के तन से हुआ।

बोहोत धन ल्याए धनी धामथें, बिध बिध के प्रकार।
सो ए सब मैं तोलिया, तारतम सबमें सार।।५४।।

धाम के धनी तो परमधाम से इश्क, इल्म, जोश, आवेश, आदि बहुत धन लेकर आए। इन सबको मैंने विचार करके देखा तो सबका सार मैंने तारतम ही पाया, क्योंकि तारतम के बिना कोई सुख मिल ही नहीं सकता।

तारतम का बल कोई न जाने, एक जाने मूल सरूप।
मूल सरूप के चित्त की बातें, तारतम में कई रूप।।५५।।

तारतम के बल को एक मूल स्वरूप श्री राजजी महाराज के अलावा और कोई नहीं जानता, क्योंकि तारतम से ही श्री राजजी महाराज के चित्त की सभी बातों का ज्ञान होता है।

साख्यात सरूप इंद्रावती, तारतम को अवतार।
वासना होसी सो बलगसी, इन वचन के विचार।।५६।।

श्री इन्द्रावतीजी तारतम के स्वरूप श्री राजजी महाराज की अवतार हैं। जो परमधाम की आत्मा होगी वह इन वचनों का विचार करके श्री इन्द्रावतीजी से आ मिलेगी।

सरूप साथकी पेहेचान, तारतममें उजास।
जोत उद्दोत प्रगट पूरन, इंद्रावती के पास।।५७।।

तारतम वाणी के ज्ञान से ही श्री राजजी और सुन्दरसाथ की पहचान होती है। श्री इन्द्रावतीजी के पास ही तारतम ज्ञान की पूरी जानकारी है।

वासनाओं की पेहेचान, बानी करसी तिन ताल।
निसंक निद्रा उड़ जासी, सुनते ही तत्काल।।५८।।

तारतम वाणी के ज्ञान से ही परमधाम की आत्माओं को तुरन्त पहचान हो जाएगी और इसके सुनते ही माया की अज्ञानता तत्काल उड़ जाएगी।

Nijanand App

एक लवा सुने जो वासना, सो संग न छोड़े खिन मात्र।
होसी सब अंगों गलित गात्र, प्रगट देखाए प्रेम पात्र।।५९ ।।

परमधाम की आत्मा एक शब्द के सुनने मात्र से ही कभी साथ न छोड़ेगी और सब अंगों से अपने धनी पर न्योछावर हो जाएगी और सदा प्रेम का पात्र होकर सेवा में मग्न रहेगी।

ए बानी सुनते जिनको, आवेस न आया अंग।
सो नहीं नेहेचे वासना, ताको करूं जीव भेलो संग।।६० ।।

इस वाणी को सुनकर जिसके अंग में आवेश (जोश) नहीं आया तो निश्चय समझ लेना कि वह परमधाम की आत्मा नहीं है और उसको मैं जीव सृष्टि के समान गिनूंगी।

वासना जीव का बेवरा एता, ज्यों सूरज दृष्टें रात।
जीव का अंग सुपनका, वासना अंग साख्यात।।६१ ।।

आत्मा और जीव में दिन और रात जैसा फर्क है। जीव का तन सपने का है जो मिट जाने वाला है और आत्मा के मूल तन साक्षात् परमधाम में बैठे हैं।

भी बेवरा वासना जीवका, याके जुदे जुदे हैं ठाम।
जीवका घर है नींद में, वासना घर श्री धाम।।६२ ।।

आत्मा और जीव की और भी हकीकत बताती हूं। इनके अलग-अलग धाम हैं। जीव का घर निराकार बैकुण्ठ में है और आत्मा का घर अखण्ड परमधाम है।

ना होए नया न पुराना, श्री धाम इन प्रकार।
घटे बढ़े नहीं पत्र एक, सत सदा सर्वदा सार।।६३ ।।

परमधाम में कोई चीज नई या पुरानी नहीं होती। एक पत्ते में भी वहां पर घट-बढ़ नहीं होती। वहां सदा एक जैसा ही रहता है।

जो किन जीवे संग किया, ताको करूं ना मेलो भंग।
सो रंगे भेलूं वासना, वासना सत को अंग।।६४ ।।

यदि किन्हीं जीवों ने यहां आत्माओं की संगत कर ली है तो उनके मिलाप के कारण वह अखण्ड हो जाएंगे। ऐसे जीवों को बहिश्त में रखूंगी और उनको वासनाओं जैसा ही वहां सुख मिलेगा।

तारतम तेज प्रकास पूरन, इंद्रावती के अंग।
ए मेरा दिया मैं देवाए, मैं इंद्रावती के संग।।६५ ।।

श्री इन्द्रावतीजी के तन में तारतम ज्ञान का पूर्ण प्रकाश है। धाम धनी कहते हैं कि यह मैंने ही दिया है और मैं श्री इन्द्रावतीजी के तन में बैठकर इसे दिलवा रहा हूं।

इंद्रावती के मैं अंगे संगे, इंद्रावती मेरा अंग।
जो अंग सौंपे इंद्रावती को, ताए प्रेमें खेलाऊं रंग।।६६ ।।

मैं श्री इन्द्रावतीजी के साथ उसके अन्दर विराजमान हूं। उसका तन मेरा ही तन है। जो भी श्री इन्द्रावतीजी पर अपना तन-मन अर्पण करेगा उसे मैं ही प्रेम के सुख दूंगा।

Nijanand App

बुध तारतम जित भेले, तित पेहेले जानो आवेस।
अग्या दया सब पूरन, अंग इंद्रावती प्रवेस।।६७।।

जहां तारतम ज्ञान और जागृत बुद्धि दोनों होंगे, वहां मुझे साक्षात् समझ लेना, क्योंकि यह दोनों मेरे सिवाय कोई नहीं दे सकता। मैंने हुक्म और मेहर को साथ लेकर श्री इन्द्रावतीजी के तन में प्रवेश किया है।

सुख देऊं सुख लेऊं, सुखमें जगाऊं साथ।
इंद्रावतीको उपमा, मैं दई मेरे हाथ।।६८।।

सब तरह से मैं सुन्दरसाथ को सुख देता हूं और लेता भी हूं। सुख से ही सुन्दरसाथ को जगाता भी हूं। श्री इन्द्रावतीजी को तो मैंने ही नाम और शृंगार की शोभा बख्शी है।

मैं दया तुमको करी, जो देखो नैना खोल।
ना खोलो तो भी देखोगे, छाया निकसी ब्रह्मांड फोड़।।६९।।

हे सुन्दरसाथजी! यदि तुम विचार कर देखो तो मैंने तुम्हारे ऊपर बहुत मेहर (कृपा) की है। यदि अब नहीं भी देखोगे तो भी तुम्हें दिख जाएगा जब तारतम ज्ञान की रोशनी ब्रह्माण्ड फोड़कर जाहिर होगी।

ए खेल देख्या बैठे घर, अग्याऐं सैयों नजर।
जब अंतर आंखां खुली, तब दृष्ट घरकी घर।।७०।।

इस खेल को ब्रह्मसृष्टियां श्री राजजी महाराज के हुक्म से उनके चरणों में परमधाम में बैठकर देख रही हैं और जब यह फरामोशी का परदा हटेगा तो नजर वहीं परमधाम में होगी।

निज नैना देऊं खोलके, ज्यों आड़ी न आवे मोह सृष्ट।
होसी पेहेचान सत सुख, निज वतन देखो दृष्ट।।७१।।

तुम्हारी निज नजर को खोल देता हूं, जिससे तुम्हारे आड़े माया का ब्रह्माण्ड न आए। जब तुम निज नजर से देखोगे तो तुम्हें सच्चे सुख की पहचान हो जाएगी।

तारतम का जो तारतम, अंग इंद्रावती विस्तार।
पैए देखावे पार के, तिन पार के भी पार।।७२।।

तारतम का भी जो तारतम है, अर्थात् जो तारतम है वह क्षर पुरुष से बेहद और पार के पार तक का ज्ञान देता है और जो उसका तारतम है उससे पूरे पच्चीस पक्ष तथा वाहेदत और खिलवत का ज्ञान होता है, वह सब श्री इन्द्रावतीजी के तन में है, क्योंकि वहां श्री राजजी स्वयं विराजमान हैं। यहां से अपने घर, निराकार के पार तिन पार के भी पार तथा रंगमोहल तथा पच्चीस पक्षों में धनी का रूहों से और रूहों का धनी से प्यार का ज्ञान बताते हैं।

ब्रह्मांड दोऊ अखंड किए, तामें लीला हमारी।
तीसरा ब्रह्मांड अखंड करना, ए लीला अति भारी।।७३।।

इससे पहले हमने ब्रज और रास की दो लीलाएं की थीं और उसको अखण्ड कर दिया था। अब यह तीसरा जागनी का ब्रह्माण्ड अखण्ड करना है। यह बहुत भारी काम है।

तीन लीला माया मिने, हम प्रेमें विलसी जेह।
ए लीला चौथी विलसते, अति अधिक जानी एह।।७४।।

ब्रज, रास और सतगुरु देवचन्द्रजी के तन की लीला का हमने प्रेम से आनन्द लिया। अब यह जागनी के ब्रह्माण्ड की चौथी लीला को विलसते समय सबसे बड़ा जाना।

Nijanand App

एक सुख सुपनके, दूजे जागते ज्यों होए।
तीन लीला पेहेले ए चौथी, फरक एता इन दोए।।७५।।

हे सुन्दरसाथजी! एक सुख सपने का होता है जो वास्तव में नहीं होता है! एक जागृत में सुख होता है जो साक्षात् होता है। इस तरह से ब्रज की लीला में धनी के सुख सपने जैसे थे। रास में धनी की पहचान थी, यद्यपि घर की पहचान भले नहीं थी, तो भी सुख जागृत के थे। अब इस ब्रह्माण्ड में श्री धनी देवचन्द्रजी के तन की लीला ब्रज की तरह सपने की है और श्री इन्द्रावतीजी के तन से जागृत लीला परमधाम के सुखों की हैं। यही इन दोनों में अन्तर है।

पेहेले दृष्टें हमारे जो आइया, तेते मिने उजास।
हम खेलें तिन उजासमें. और लोक सब को नास।।७६।।

जिस तरह से पहले ब्रज में हमारी लीला (गोकुल, ब्रज और मथुरा में) हुई जो अखण्ड हो गई और बाकी ब्रह्माण्ड का प्रलय हो गया, उसी तरह श्री देवचन्द्रजी के तन से जिन सुन्दरसाथ को तारतम मिला उन्हें क्षणभंगुर सुख हुआ और बाकी दुनियां ऐसी ही रह गई। अब श्री इन्द्रावतीजी के तन से सारे ब्रह्माण्ड को अखण्ड करना और ब्रह्मसृष्टि को तथा ईश्वरी को अपने घर पहुंचाना साक्षात् जागृत लीला है।

अब लोक चौदे तरफ चारों, प्रकास होसी साथ जोग।
जीव सबको जगाए के, टालूं सो निद्रा रोग।।७७।।

अब सुन्दरसाथ की शोभा के योग्य चौदह लोकों में ज्ञान का प्रसार हो जाएगा तथा सारे ब्रह्माण्ड को जागृत करके उनके अज्ञान के रोग को मिटाकर अखण्ड कर देंगे।

हम जाहेर होए के चलसी, सब भेले निज घर।
वैराट होसी सनमुख, एक रस सचराचर।।७८।।

हम सारे ब्रह्माण्ड को जागृत करके अक्षर और हम घर जाएंगे। उस समय चर और अचर सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड को एक रस करके अखण्ड कर देंगे।

जब हम जाहेर हुए, सुध होसी संसार।
दुनियां सारी दौड़सी, करने को दीदार।।७९।।

जब हम जाहिर होंगे तो सारे संसार को खबर हो जाएगी और सारी दुनियां हमारे दर्शनों के लिए दौड़ेगी।

हम सदा संग पिया के, जो रूहें सोहागिन।
सो अग्यांऐं उठ बैठसी, सब अपने वतन।।८०।।

हम जो सुहागिनी ब्रह्मसृष्टियां हैं वह सदा अपने पिया के संग रहती हैं। अब वह सब धनी की आज्ञा से अपने घर परमधाम में उठ बैठेंगी।

अव्वल सब सोहागनी, एक ठौर पिया पास।
सबों सुख होसी सोहागनी, रंग रस प्रेम विलास।।८१।।

सबसे पहले सुहागिन ब्रह्मसृष्टियां अपने धनी के पास मूल मिलावे में जागृत होंगी, जिन्हें प्रेम और आनन्द के भरपूर सुख मिलेंगे।

Nijanand App

जो जोत होसी जागनी, ए नूर बिना हिसाब।
लोक चौदे पसरसी, तब उड़ जासी ए ख्वाब।। ८२ ।।

जो तारतम वाणी के ज्ञान से जागनी होगी, उसके प्रकाश का हिसाब बेशुमार होगा। जब यह चौदह लोकों के ब्रह्माण्ड में फैलेगा तो यह स्वप्न उड़ जाएगा।

ए बानी तो करूं जाहेर, जो करना सबों एक रस।
वस्त देखाए बिना, वैराट न होवे बस।। ८३ ।।

यह वाणी इसलिए जाहिर कर रही हूं क्योंकि सबको एक रस करना है अर्थात् एक परब्रह्म का पूजक बनाना है। इनको पार का ज्ञान बताए बिना यह ब्रह्माण्ड अधीन नहीं होगा।

वैराट बस किए बिना, क्यों कर होए अखंड।
हम खेल देख्या इछाए कर, सो भंग ना होए ब्रह्मांड।। ८४ ।।

जब तक यह ब्रह्माण्ड अधीन नहीं होगा तब तक अखण्ड कैसे किया जाएगा? जिस ब्रह्माण्ड को अपनी इच्छा करके देखा है वह नष्ट कैसे होगा? अखण्ड अवश्य होगा।

अनेक आगे होएसी, इन बानी को विस्तार।
ए नेक कह्या मैं करने, अखंड ए संसार।। ८५ ।।

इस वाणी का आगे चलकर बहुत बड़ा विस्तार होगा। यह तो संसार को अखण्ड करने के लिए मैंने थोड़े में कहा है।

ए बानी कही मैं जाहेर, सो विस्तरसी विवेक।
मैं गुझ कही है साथ को, पर सो है अति विसेक।। ८६ ।।

इस गुझ (गुह्य) वाणी को मैंने जाहिर कर दिया है, क्योंकि इसका आगे विस्तार होना है। यह छिपी बात मैंने सुन्दरसाथ के वास्ते कही है, पर यह बहुत बड़ी बात है।

संसार सब के अंग में, मेरी बुध को करूं प्रवेस।
असत सब होसी सत, मेरे नूर के आवेस।। ८७ ।।

सारे ब्रह्माण्ड के तनों में मेरी जागृत बुद्धि का तारतम ज्ञान फैल जाएगा, जिससे सारा झूठा ब्रह्माण्ड मेरे नूर के आवेश से अखण्ड हो जाएगा।

बुध मूल अछर की, आई हमारे पास।
जोगमाया को ब्रह्मांड, तिन हिरदे था रास।। ८८ ।।

अक्षर की मूल बुद्धि मेरे पास आई तो योगमाया के ब्रह्माण्ड में हमने अक्षर के हृदय में रास लीला को अखण्ड देखा।

ए हुती पिया चरने, दिन एते गोप।
वचन कोई कोई सत उठे, सोए करूं क्यों लोप।। ८९ ।।

यह आज दिन तक हमारे धनी के चरणों में छिपी हुई थी। इस बाबत संसार में कोई-कोई अपनी अटकल से बखान करते थे। उसे अब मैं क्यों छिपाऊं?

Nijanand App

बृज रास में हम रमे, बुध हती रास में रंग।
अब आए जाहेर हुई, इत उदर मेरे संग।। ९० ।।

ब्रज और रास में हमने लीला की। रास की लीला में अक्षर की बुद्धि हमारे साथ थी। जिससे हम अपने धनी को पहचान सके। अब यहां आकर जागनी के ब्रह्माण्ड में मेरे तन में आने से जाहिर हो गई।

इंद्रावती पिया संगे, उदर फल उतपन।
एक निज बुध अवतरी, दूजा नूर तारतम।। ९१ ।।

यहां श्री इन्द्रावतीजी और धनी के एक ही तन में एकाकार हो जाने से दो फल जाहिर हुए—एक जागृत बुद्धि और दूसरी नूर तारतम।

दोऊ सरूप प्रगटे, लई मिनों मिने बाथ।
एक तारतम दूजी बुध, देखसी सनमुख साथ।। ९२ ।।

जागृत बुद्धि और नूर तारतम प्रकट हुए। दोनों एक रूप हो गए। अब सुन्दरसाथ तारतम और जागृत बुद्धि को एक साथ देखेगा।

अछर केरी वासना, कहे जो पांच रतन।
कागद ल्याया बेहद का, सुकदेव मुनी धंन धंन।। ९३ ।।

अक्षर ब्रह्म की जो पांच वासनाएं कही हैं, उनमें बेहद का ज्ञान लाने से शुकदेव मुनि धन्य-धन्य हैं।

विष्णु मन खेल ले खड़ा, पकड़ के दोऊ पार।
भली भांत भेले विष्णु के, सनकादिक थंभ चार।। ९४ ।।

यहां बैकुण्ठ से ऊपर आदि नारायण और पाताल के नीचे शेषशायी नारायण दोनों तरफ से ब्रह्माण्ड के बंध बांधे खड़े हैं जिनके सनकादिक चार ज्ञान के थंभ (स्तम्भ) हैं।

महादेवजीऐं बृज लीला, ग्रह्यो अखंड ब्रह्मांड।
अछर चित सदासिव, ए यों कहावे अखंड।। ९५ ।।

अक्षर ब्रह्म के चित्त में (सबलिक ब्रह्म में) जो बृज और लीला अखण्ड हो रही है उसको शिवजी ने देखकर ग्रहण किया। इस तरह से यह अखण्ड है।

कबीर साख जो पूरने, ल्याया सो वचन विसाल।
प्रगट पांचो ए भए, दूजे सागर आड़ी पाल।। ९६ ।।

कबीरजी हमारी गवाही देने के लिए पार की वाणी को बोले। इस तरह से अक्षर की इन पांच वासनाओं के बिना सारे संसार के जीवों को ज्ञान नहीं मिल सका।

हम बुध नूर प्रकास के, जासी हमारे घर।
बैकुंठ विष्णु जगावसी, बुध देसी सारी खबर।। ९७ ।।

हम जागृत बुद्धि से तारतम ज्ञान का प्रकाश करके अपने घर वापस परमधाम जाएंगे। उस समय जागृत बुद्धि बैकुण्ठ में जाकर भगवान विष्णु को जगाएगी।

खबर देसी भली भांतें, विष्णु जागसी तत्काल।
तब आवसी नींद इन नैनों, प्रलेय होसी पंपाल।। ९८ ।।

जागृत बुद्धि से जगाने से भगवान विष्णु तुरन्त जागेंगे और तब संसार की आंखें बंद हो जाएंगी और प्रलय हो जाएगी।

Nijanand App

अछर खेल इछाए कर, छर रच के उड़ात।
वासना पांचों पोहोंचे इत, ए सत मंडल साख्यात।। ९९ ।।

अक्षर ब्रह्म अपनी इच्छा मात्र से खेल बनाते और मिटाते हैं। अक्षर की पांच वासनाओं को अक्षर ब्रह्म तक ही ज्ञान है। यह सदा अखण्ड हैं।

पांचो बुध ले वले पीछे, तामें बुध विसेक विचार।
अछर आंखां खोलसी, होसी हरख अपार।। १०० ।।

अक्षर की पांचों वासनाएं जब जागृत बुद्धि से अपने घर लौटेंगी तब वह विशेष विचार करेंगी और अक्षर ब्रह्म की फरामोशी हटेगी और तब बेशुमार आनन्द होगा।

लीला तीनों थिर होएसी, अखंड इन प्रकार।
निमख एक न विसरसी, रेहेसी दिल में सार।। १०१ ।।

ब्रज, रास और जागनी की तीनों लीलाएं अक्षर के मन, चित्त और बुद्धि में अखण्ड हो जाएंगी। हम रूहों के दिल में इनकी हकीकत अखण्ड हो जाएगी। एक पल के लिए भी भूलेंगी नहीं।

उत्तम भी कहूं इनमें, जहां तारतम को विस्तार।
वासना पांचों बुध ले, साख पूरसी संसार।। १०२ ।।

इन सब में जागनी की लीला उत्तम है। तारतम के ज्ञान से पहचान मिली और अक्षर ब्रह्म की पांचों वासनाएं भी इस ज्ञान से संसार को गवाही देंगी।

मेरी संगते ऐसी सुधरी, बुध बड़ी हुई अछर।
तारतमें सब सुध परी, लीला अंदर की घर।। १०३ ।।

अक्षर की जागृत बुद्धि भी मेरी संगति से सुधर गई। जिसको अब तारतम ज्ञान से परमधाम के अन्दर की सारी हकीकत का ज्ञान हो गया।

मेरे गुन अंग सब खड़े होसी, अरचासी आकार।
बुध वासना जगावसी, तिन याद होसी संसार।। १०४ ।।

मेरे गुण, अंग, इन्द्रियों के अखण्ड आकार की पूजा सारी बहिश्तों वाले करेंगे। जागृत बुद्धि अक्षर की पांचों वासनाओं को जगाएगी तो उनको भी इस संसार की लीला याद रहेगी।

बुध तारतम लेयके, पसरसी वैराट के अंग।
अछर हिरदे या बिध, अधिक चढ़सी रंग।। १०५ ।।

जागृत बुद्धि तारतम ज्ञान को लेकर सारे वैराट के जीवों के अन्दर बैठ जाएगी और तब अक्षर के हृदय में यह संसार अखण्ड हो जाएगा, जिससे अक्षर ब्रह्म को अधिक आनन्द होगा।

।। प्रकरण ।। २३ ।। चौपाई ।। ७२४ ।।

निज बुध भेली नूर में, अग्या मिने अंकूर।
दया सागर जोस का, किन रहे न पकस्यो पूर।। १ ।।

जागृत बुद्धि का मिलन जब तारतम ज्ञान से हुआ और इन दोनों ने श्री इन्द्रावतीजी के अन्दर प्रवेश किया, तो श्री राजजी के हुक्म से श्री इन्द्रावतीजी का अंकुर जागा और श्री राजजी महाराज की मेहर और जोश के समुद्र में बड़े जोर का प्रवाह आया जिसको रोका नहीं जा सका।

Nijanand App

अछर खेल इछाए कर, छर रच के उड़ात।
वासना पांचों पोहोंचे इत, ए सत मंडल साख्यात।। ९९ ।।

अक्षर ब्रह्म अपनी इच्छा मात्र से खेल बनाते और मिटाते हैं। अक्षर की पांच वासनाओं को अक्षर ब्रह्म तक ही ज्ञान है। यह सदा अखण्ड हैं।

पांचो बुध ले वले पीछे, तामें बुध विसेक विचार।
अछर आंखां खोलसी, होसी हरख अपार।। १०० ।।

अक्षर की पांचों वासनाएं जब जागृत बुद्धि से अपने घर लौटेंगी तब वह विशेष विचार करेंगी और अक्षर ब्रह्म की फरामोशी हटेगी और तब बेशुमार आनन्द होगा।

लीला तीनों थिर होएसी, अखंड इन प्रकार।
निमख एक न विसरसी, रेहेसी दिल में सार।। १०१ ।।

ब्रज, रास और जागनी की तीनों लीलाएं अक्षर के मन, चित्त और बुद्धि में अखण्ड हो जाएंगी। हम रूहों के दिल में इनकी हकीकत अखण्ड हो जाएगी। एक पल के लिए भी भूलेंगी नहीं।

उत्तम भी कहूं इनमें, जहां तारतम को विस्तार।
वासना पांचों बुध ले, साख पूरसी संसार।। १०२ ।।

इन सब में जागनी की लीला उत्तम है। तारतम के ज्ञान से पहचान मिली और अक्षर ब्रह्म की पांचों वासनाएं भी इस ज्ञान से संसार को गवाही देंगी।

मेरी संगते ऐसी सुधरी, बुध बड़ी हुई अछर।
तारतमें सब सुध परी, लीला अंदर की घर।। १०३ ।।

अक्षर की जागृत बुद्धि भी मेरी संगति से सुधर गई। जिसको अब तारतम ज्ञान से परमधाम के अन्दर की सारी हकीकत का ज्ञान हो गया।

मेरे गुन अंग सब खड़े होसी, अरचासी आकार।
बुध वासना जगावसी, तिन याद होसी संसार।। १०४ ।।

मेरे गुण, अंग, इन्द्रियों के अखण्ड आकार की पूजा सारी बहिश्तों वाले करेंगे। जागृत बुद्धि अक्षर की पांचों वासनाओं को जगाएगी तो उनको भी इस संसार की लीला याद रहेगी।

बुध तारतम लेयके, पसरसी वैराट के अंग।
अछर हिरदे या विध, अधिक चढ़सी रंग।। १०५ ।।

जागृत बुद्धि तारतम ज्ञान को लेकर सारे वैराट के जीवों के अन्दर बैठ जाएगी और तब अक्षर के हृदय में यह संसार अखण्ड हो जाएगा, जिससे अक्षर ब्रह्म को अधिक आनन्द होगा।

।। प्रकरण ।। २३ ।। चौपाई ।। ७२४ ।।

निज बुध भेली नूर में, अग्या मिने अंकूर।
दया सागर जोस का, किन रहे न पकरयो पूर।। १ ।।

जागृत बुद्धि का मिलन जब तारतम ज्ञान से हुआ और इन दोनों ने श्री इन्द्रावतीजी के अन्दर प्रवेश किया, तो श्री राजजी के हुक्म से श्री इन्द्रावतीजी का अंकुर जागा और श्री राजजी महाराज की मेहर और जोश के समुद्र में बड़े जोर का प्रवाह आया जिसको रोका नहीं जा सका।

Nijanand App

ए लीला है अति बड़ी, आई या इंड मांहें।
कई हुए कई होएसी, पर किन ब्रह्मांडों नांहें।। २ ।।

इस लीला का विस्तार बहुत बड़ा है जो इस ब्रह्माण्ड में हुई। कई ब्रह्माण्ड हो गए और कई होंगे, पर यह लीला न किसी ब्रह्माण्ड में हुई है और न ही फिर होगी।

ए अगम अकथ अलख, सो जाहेर करें हम।
पर नेक नेक प्रकासहीं, जिन सेहे न सको तुम।। ३ ।।

यह लीला अगम है, जहां कोई जा नहीं सकता। अकथनीय है, जिसका कोई वर्णन नहीं कर सकता। अलख है, जिसे कोई देख नहीं सकता। उसे हम अब जाहिर कर रहे हैं, परन्तु हम थोड़ी-थोड़ी ही जानकारी देंगे, नहीं तो तुम सहन नहीं कर पाओगे।

जो कबूं कानो ना सुनी, सो सुनते जीव उरझाए।
ताथें डरती मैं कहूं, जानूं जिन कोई गोते खाए।। ४ ।।

जिस लीला को किसी ने कभी सुना नहीं, वह जीव अब सुनते ही उलझन में पड़ जाएगा, इसलिए मैं संभल-संभलकर कहती हूं जिससे कोई दुविधा में न पड़ जाए (संशय में न पड़ जाए)।

नातो सब जाहेर करूं, नाहीं तुम सों अंतर।
खेंच खेंच तो केहेती हूं, सो तुमारी खातिर।। ५ ।।

नहीं तो मैं पूर्ण रूप से जाहिर कर दूं, क्योंकि तुम्हारे से कोई अन्तर (छिपाव) नहीं है, इसलिए खींच-खींच कर सावधान करके तुम्हारे वास्ते ही कहती हूं।

तुम दुख पाया मुझे सालहीं, अब सुख सब तुम हस्तक।
दिया तुमारा पावहीं, दुनियां चौदे तबक।। ६ ।।

इस माया में जो तुमने दुःख देखा वह मुझे खटक रहा है। अब सम्पूर्ण अखण्ड परमधाम के सुख मैं तुम्हारे हाथ में देती हूं, क्योंकि सारी चौदह लोकों की दुनियां के जीवों को तुम्हारे हाथ से ही अखण्ड मुक्ति मिलनी है।

अजूं केहेती सकुचों, पर बोहोत बड़ी है बात।
सोभा पाई तुम याथें बड़ी, जो पिया वतन साख्यात।। ७ ।।

अभी भी मैं कहने में संकोच करती हूं, क्योंकि यह बहुत बड़ी बात है। तुमने इससे भी अधिक अपने धनी और वतन को देखकर शोभा पाई है।

इंड अखंड भी जाहेर, किए जागनी जोत।
अब सुन्य फोड़ आगे चली, जहां थें इंड पैदा होत।। ८ ।।

दो ब्रह्माण्ड जो अखण्ड किए हैं, उसके भी सुख तुमको जागृत करके दिए। अब निराकार को फोड़कर जहां से यह कालमाया के ब्रह्माण्ड पैदा होते हैं, उसकी जानकारी देती हूं।

सोभा इन मंडल की, क्यों कर कहूं वचन।
सो बुध नूर जाहेर करी, जो कबूं सुनी न कही किन।। ९ ।।

इस योगमाया के अखण्ड ब्रह्माण्ड की शोभा का वर्णन किस तरह से यहां के शब्दों से करूं? जिसको आज दिन तक कभी किसी ने न कहा था, न सुना था, उसे अब जागृत बुद्धि और तारतम की वाणी से जाहिर कर दिया है।

Nijanand App

रास बरनन भी ना हुआ, तो अछर बरनन क्यों होए।
कही न जाए हद में, पर तो भी कहूं नेक सोए।। १० ।।

अखण्ड रास जो योगमाया में है, का भी वर्णन नहीं हो सका तो अक्षर ब्रह्म का वर्णन कैसे होगा, क्योंकि यह निराकार हद के शब्द हैं। फिर भी मैं थोड़ा-सा कहती हूं।

जोगमाया तो माया कही, पर नेक न माया इत।
ख्वाबी दम सत होवहीं, सो अछर की बरकत।। ११ ।।

योगमाया तो फिर भी माया है, पर अक्षर धाम में तो माया का नामोनिशान भी नहीं है। अक्षर ब्रह्म की कृपा से यह दुनियां के झूठे जीव अखण्ड हो जाएंगे।

ताथें कालमाया जोगमाया, दोऊ पल में कई उपजत।
नास करे कई पल में, या चित्त थिर थापत।। १२ ।।

अक्षर ब्रह्म कालमाया तथा योगमाया के ऐसे कई ब्रह्माण्डों को एक पल में पैदा कर सकते हैं और मिटा सकते हैं। अपने चित्त में लेकर किन्हीं को अखण्ड भी कर सकते हैं।

तहां एक पलक न होवहीं, इत कई कल्प वितीत।
कई इंड उपजे होए फना, ऐसे पल में इन रीत।। १३ ।।

वहां एक पल भी व्यतीत नहीं होता और यहां कई कल्पान्त बीत जाते हैं। वहां के एक पल में कई ब्रह्माण्ड बनकर मिट जाते हैं, ऐसी वहां की शक्ति है।

जागते ब्रह्मांड उपजे, पाव पल में अनेक।
सो देखे सब इत थें, विध विध के विवेक।। १४ ।।

एक पल के चौथाई हिस्से में वहां जागृत अवस्था में कई ब्रह्माण्ड बन जाते हैं। वह सभी यहां बैठे-बैठे ही हमने देख लिए।

ए लीला है अति बड़ी, दृष्टें उपजे ब्रह्मांड।
ए खेल खेले नित नए, याकी इछा है अखंड।। १५ ।।

यह लीला बहुत भारी है जो एक पल में अनेक ब्रह्माण्ड बनाती और मिटाती है। अक्षर ब्रह्म की इच्छा शक्ति अखण्ड है जो नित्य ही नए-नए ब्रह्माण्ड बनाती है।

ए मंडल है सदा, जाए कहिए अछर।
जाहेर इत थें देखिए, मिने बाहेर थें अंतर।। १६ ।।

यह मण्डल सदा अखण्ड है जिसे अक्षर धाम कहते हैं। यह यहां बैठे-बैठे ही अन्दर और बाहर से जागृत बुद्धि और तारतम के ज्ञान से देखने को मिलता है।

उतपन देखी इंड की, न अंतर रत्ती रेख।
सत वासना असत जीव, सब विध कही विवेक।। १७ ।।

हमने इस बार ब्रह्माण्ड की उत्पत्ति को देखा है, परन्तु अक्षर धाम एक रत्ती मात्र भी कुछ नहीं बदलता। ब्रह्म वासना (आत्मा) सदा ही अखण्ड है तथा जीव हमेशा ही नाशवान है। इसकी हकीकत तरह-तरह से बताई है।

Nijanand App

मोह उपज्यो इतथें, जो सुन्य निराकार।
पल मीच ब्रह्मांड किया, कारज कारन सार।। १८ ।।

अक्षर के हुक्म से ही मोहतत्व शून्य निराकार की उत्पत्ति हुई है। अक्षर (सत सरूप) ब्रह्म के पलक झपकते ही ब्रह्म सृष्टी की इश्क रब्द के कारण, झूठी माया के खेल में उतारा गया।

मोह अग्यान भरमना, करम काल और सुंन।
ए नाम सारे नींद के, निराकार निरगुन।। १९ ।।

मोह तत्व, अज्ञान, भ्रम, कर्म, काल, शून्य, निराकार, निर्गुण यह सब नींद के अर्थात् माया के नाम हैं।

मन पोहोंचे इतलो, बुध तुरिया वचन।
उनमान आगे केहेके, फेर पड़े मांहे सुंन।। २० ।।

यहां तक ही संसार के जीवों के मन, चित्त, बुद्धि और वचन पहुंचते हैं। आगे अटकल से ब्यान करके फिर निराकार में ही समा जाते हैं।

जो जीव होसी सुपन के, सो क्यों उलंघे सुंन।
वासना सुन्य उलंघ के, जाए पोहोंचे अछर वतन।। २१ ।।

जो जीव सपने में पैदा हुए हैं, वह शून्य को पार नहीं कर सकते। परमधाम की आत्माएं शून्य मण्डल को पार करके अपने अखण्ड घर पहुंचती हैं, जहां अक्षर ब्रह्म का भी धाम है।

ए सबे तुम समझियो, वासना जीव विगत।
झूठा जीव नींद न उलंघे, नींद उलंघे वासना सत।। २२ ।।

हे सुन्दरसाथजी! आत्मा और जीव में यह ही अन्तर है। यह तुम समझना कि झूठा जीव निराकार से पार नहीं जा सकता। निराकार के पार आत्माएं ही जा सकती हैं।

सुपने नगरी देखिए, तिन सब में एक रस।
आपै होवे सब में, पांचो तत्व दसो दिस।। २३ ।।

इस सपने की नगरी में सब एक समान दिखाई देते हैं। इन सब तनों में पांच तत्व दसों दिशाओं में एक समान व्यापक हैं।

तिनमें भी दोए भांत है, एक वासना दूजे जीव।
संसा न राखूं किनका, मैं सब जाहेर कीव।। २४ ।।

इस पांच तत्व के तन भी दो प्रकार के हैं। इनमें एक आत्मा है दूसरा जीव है। इसे मैं सब जाहिर कर देती हूं ताकि किसी का संशय न रह जाए।

देखो सुपनमें कई लड़ मरें, सबे आपे पर ना दुखात।
जब देखें मारते आपको, तब उठे अंग धुजात।। २५ ।।

स्वप्न में आपस में कई लड़ते-मरते हैं, परन्तु अपने या दूसरे किसी को दुःख नहीं होता। अब देखो जब वही सपने में हमें मारने आते हैं तो हम चौंककर उठ बैठते हैं, क्योंकि हमारा मूल तन सपना देख रहा होता है जो चौंककर उठता है। वह तो सपने में ही है जो लड़ते-मरते हैं उनका कोई तन नहीं होता।

Nijanand App

वासना उतपन अंग थें, जीव नींद की उतपत।
कोई ना छोड़े घर अपना, या बिध सत असत।। २६ ।।

आत्माओं की उत्पत्ति उनके पराल्म से है और जीव की उत्पत्ति शून्य (सपने) से है, इसलिए अपने-अपने घर को सच्ची आत्माएं और झूठे जीव कोई भी नहीं छोड़ता।

ब्रह्मांड चौदे तबक, सब सत का सुपन।
इन दृष्टांतें समझियो, विचारो वासना मन।। २७ ।।

यह चौदह तबकों का ब्रह्माण्ड अक्षर के मन स्वरूप अव्याकृत का सपना है। इस दृष्टान्त से ही आत्मा और जीव के अन्तर का विचार कर लेना।

सुपन सत सरूप को, तुम कहोगे क्यों कर होए।
ए बिध सब जाहेर करूं, ज्यों रहे न धोखा कोए।। २८ ।।

तुम यह कहोगे कि अक्षर ब्रह्म तो सत हैं तो इन्हें सपना कैसे होता है? इसकी हकीकत भी जाहिर कर देती हूं, ताकि कोई संशय बाकी न रह जाए।

एक तीर खेंच के छोड़िए, तिन बेधाए कई पात।
सो पात सब एक चोटें, पाव पल में बेधात।। २९ ।।

एक तीर खींचकर छोड़ने में अनगिनत पत्रों में छेद हो जाते हैं। तो वह सभी पत्ते जैसे एक पल के चौथाई भाग में ही छिद जाते हैं।

पर पेहेले पात एक बेध के, तो दूजा बेधाए।
यामें सुपन कई उपजें, बेर एती भी कही न जाए।। ३० ।।

उसमें भी एक पत्ते से दूसरे पत्ते में तीर को जाने में जितनी देर लगती है उतने समय से भी कम समय में यहां कई ब्रह्माण्ड बनकर मिट जाते हैं।

तो बेर एक की कहा कहूं, इत हुआ कहां सुपन।
पर सत ठौर का असत में, दृष्टांत नहीं कोई अन।। ३१ ।।

जब इतने समय में कई ब्रह्माण्ड बन जाते हैं तो एक ब्रह्माण्ड के बनने में कितना समय लगा, क्या कहूं अर्थात् समय तो लगा ही नहीं, तो स्वप्न हुआ कैसे कहा जाए? परन्तु अखण्ड धाम का झूठे संसार में और कोई दृष्टान्त ही नहीं है।

इत भेले रूह नूर बुध, और अग्या दया प्रकास।
पूरों आस अछर की, मेरा सुख देखाए साख्यात।। ३२ ।।

इस ब्रह्माण्ड में मेरी आत्मा में तारतम नूर, जागृत बुद्धि तथा धनी का हुक्म और मेहर इकट्ठे हैं। मैं ऐसे अखण्ड सुखों को साक्षात् दिखा करके अक्षर की इच्छा पूर्ण करूंगी।

इत भी उजाला अखंड, पर किरना न इत पकराए।
ए नूर सब एक होए चल्या, आगूं अछरातीत समाए।। ३३ ।।

यहां भी इस अखण्ड का ज्ञान है। पर उस ज्ञान की किरणों को संसार के जीवों में पकड़ने की शक्ति नहीं है। यह सम्पूर्ण ज्ञान और शक्तियां इकट्ठी होकर अक्षरातीत में समा जाएंगी।

Nijanand App

ए नूर आगे थें आइया, अछर ठौर के पार।
ए सब जाहेर कर चल्या, आया निज दरबार।। ३४ ।।

यह ज्ञान अक्षर-धाम से परे अक्षरातीत के धाम से आया है। जिसने अपने मूल घर परमधाम से आकर घर की सारी हकीकत जाहिर की।

वतन देखाया इत थें, सो केते कहूं प्रकार।
नूर अखंड ऐसा हुआ, जाको वार न काहूं पार।। ३५ ।।

यहां पर बैठे-बैठे ही इसने हमको परमधाम के कई प्रकार के सुखों को दिखाया और इसका ऐसा अखण्ड उजाला हुआ जिसका शुमार नहीं है।

किए विलास अंकूर थें, घर के अनेक प्रकार।
पिया सुंदरबाई अंग में, आए कियो विस्तार।। ३६ ।।

यहां आकर अनेक तरह से पिया ने सुन्दरबाई (श्यामाजी) के तन में बैठकर विस्तार से परात्म के विलास की लीला दिखाई।

ए बीज वचन दो एक, पिया बोए कियो प्रकास।
अंकूर ऐसा उठिया, सब किए हांस विलास।। ३७ ।।

धनी ने तारतम रूपी दो-एक वचन कहकर जो यहां अखण्ड वतन का बीज बोया, उससे इतना बड़ा अकुंर फूटा कि हमें यहीं बैठे-बैठे ही धनी के हांस-विलास का आनन्द मिला।

सूर ससि कई कोट कहूं, नूर तेज जोत प्रकास।
ए सब्द सारे मोहलों, और मोह को तो है नास।। ३८ ।।

यहां के करोड़ों सूर्य और चन्द्रमा की ज्योति भी कहूं तो वह निराकार तक ही है और निराकार का तो नाश होने वाला है।

अब इन जुबां मैं क्यों कहूं, निज वतन विस्तार।
सब्द ना कोई पोहोंचहीं, मोह मिने हुआ आकार।। ३९ ।।

अब यहां की जबान से मैं अपने मूल घर अखण्ड परमधाम का विस्तार कैसे कहूं? क्योंकि यहां के शब्द और तन मोह तत्व के हैं जो अखण्ड तक नहीं पहुंचते।

मोह सो जो ना कछू, इनसे असंग बेहद।
सत को असत ना पोहोंचहीं, या बिध ना लगे सब्द।। ४० ।।

मोहतत्व तो कुछ भी नहीं है। इनसे योगमाया का ब्रह्माण्ड बेहद भूमि अलग है। सत का वर्णन करने के लिए असत के शब्द नहीं लगते।

बेहद को सब्द न पोहोंचहीं, तो क्यों पोहोंचे दरबार।
लुगा न पोहोंच्या रास लों, इन पार के भी पार।। ४१ ।।

जब यहां के झूठे शब्द बेहद का ही वर्णन नहीं कर सकते हैं, अखण्ड परमधाम जो बेहद के भी पार के भी पार है, का कैसे वर्णन करेंगे? यहां के शब्द तो अखण्ड रास का रंच मात्र भी वर्णन नहीं कर सके, तो उसके पार अक्षर और अक्षर के पार अक्षरातीत का वर्णन कैसे सम्भव हो सकता है?

Nijanand App

कोट हिस्से एक लुगे के, हिसाब किया मिहीं कर।
एक हिस्सा न पोहोंच्या रास लों, ए मैं देख्या फेर फेर।।४२।।

इस नश्वर जगत का एक शब्द भी अखण्ड रास के करोड़वें हिस्से के वर्णन करने में नहीं लग सकता। यह मैंने बार-बार विचार किया और देखा है।

मैं अंगे रंगे अंगना संगे, करूं आप अपनी बात।
अब बोलते सरमाऊं, ताथें कही न जाए निध साख्यात।।४३।।

अब मैं अपने परमधाम के सुन्दरसाथ के साथ मिलकर अपने घर की बातें करूंगी। इसे बोलने में शर्म भी आती है, इसलिए बोलने में साफ नहीं कहा जाता (क्योंकि यहां सत् की उपमा देने का कोई साधन ही नहीं है)।

वतन बातें केहेवे को, मैं देखती नहीं कोई काहूं।
देखां तो जो होए दूसरा, नहीं गांऊं नांऊं न ठांऊं।।४४।।

अपने घर की बातें कहने के लिए मैं यहां किसी दूसरे को नहीं देखती हूं। हमारे बिना कोई और है ही नहीं जिसे गांव, नाम और ठिकाने का पता हो (क्योंकि यह सब सपने के जीव हैं)।

जहां नहीं तहां है कहे, ए दोऊ मोह के वचन।
ताथें विस्तार अंदर, बाहेर होत हूं मुंन।।४५।।

निराकार के अन्दर जहां कुछ भी नहीं है, वहां यह सत् का वर्णन करते हैं। इन जीवों के सत् और झूठ दोनों ही निराकार के अन्दर के हैं, इसलिए मुझे अन्दर और बाहर का सब ज्ञान होने पर भी चुप रहना पड़ता है।

एता भी मैं तो कह्या, जो साथ को भरम का घैन।
वचन दो एक केहेके, टालूं सो दुतिया चैन।।४६।।

सुन्दरसाथ को चूंकि संशय का नशा है, इसलिए मैंने थोड़ा ही वर्णन किया। अब दो एक सत्य के वचन कहकर सुन्दरसाथ के अन्दर की दुविधा की स्थिति हटा देती हूं।

साथ के सुख कारने, इंद्रावती को मैं कह्या।
ताथें मुख इंद्रावती के, कलस सबन का भया।।४७।।

श्री राजजी महाराज कहते हैं कि सुन्दरसाथ को सुख देने के लिए ही यह ज्ञान मैंने **श्री इन्द्रावतीजी** को दिया है और इसीलिए श्री इन्द्रावतीजी के मुखारबिन्द से यह सर्वश्रेष्ठ ज्ञान जाहिर **हुआ है।**

।। प्रकरण ।। २४ ।। चौपाई ।। ७७१ ।।

प्रकरण तथा चौपाइयों का सम्पूर्ण संकलन ।। प्रकरण ।। १७२ ।। चौपाई ।। ४६६९ ।।

।। कलस हिन्दुस्तानी-तौरेत सम्पूर्ण ।।

Nijanand App